अंजोर

पूर्ण मद्य–निषेध हेतु जीविका दीदियों की संघर्ष गाथा

जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

अंजोर	:	पूर्ण मद्य–निषेध हेतु जीविका दीदियों की संघर्ष गाथा
प्रकाशक	:	जीविका (बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति)
नेतृत्व एवं मार्गदर्शन	:	श्री बालामुरूगन डी॰, मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका

परिकल्पना, संकलन एवं संपादन :

महुआ राय चौधरी, परियोजना समन्वयक, गवर्नेंस एवं नॉलेज मैनेजमेंट, जीविका
पवन कुमार प्रियदर्शी, परियोजना प्रबंधक, संचार, जीविका
रितेश कुमार मिश्र, संचार प्रबंधक, जीविका, सारण
राजीव रंजन, संचार प्रबंधक, जीविका, मधेपुरा
विकास कुमार राव, संचार प्रबंधक, जीविका, सुपौल
रौशन कुमार संचार प्रबंधक, जीविका, बक्सर
छवि रंजन, संचार प्रबंधक, जीविका, जमुई

केस स्टडी	:	समस्त संचार प्रबंधक, जीविका
विशेष सहयोग	:	अर्चना तिवारी, राज्य परियोजना प्रबंधक–समाजिक विकास, जीविका
प्रकाशन वर्ष	:	2016
मुद्रक	:	सुर्या इन्टरप्राइजेज, पटना
डिजाइन	:	ग्राफिक्स इंडिया, पटना

श्री नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री
बिहार सरकार

बिहार सरकार

संदेश

नई उत्पाद नीति के तहत राज्य सरकार ने प्रथम चरण में बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में 1 अप्रैल, 2016 से पूर्ण मद्यपान निषेध लागू किया। इसके उपरान्त दिनांक 05 अप्रैल, 2016 को राज्य में विदेशी शराब को प्रतिबंधित कर सरकार ने सम्पूर्ण राज्य में मद्य निषेध के अपने संकल्प को पूर्ण किया। बिहार में पूर्ण मद्य निषेध लागू कर राज्य में सामाजिक परिवर्तन की बुनियाद रखी गई है। संपूर्ण बिहार में इसके प्रति जनसामान्य विशेषकर महिलाओं में काफी उत्साह है। हर स्तर पर मिले समर्थन एवं सहयोग से पूर्ण मद्य निषेध को लागू करने में राज्य सरकार को सफलता मिली है इस महत्त्वपूर्ण अभियान में जीविका की दीदियों का योगदान अभूतपूर्व रहा है। जीविका दीदियों की कोशिशों एवं उनके सतत् संघर्ष का नतीजा है कि शराब के अभिशाप से बिहार पूरी तरह मुक्त हो रहा है।

मुझे अवगत कराया गया है कि पूर्ण मद्य–निषेध हेतु जीविका की दीदियों की संघर्ष गाथा तथा सम्बन्धित अभियान की झलक एवं रूपरेखा के संकलन के उद्देश्य से जीविका ने 101 कहानियों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पूरे अभियान में स्वयं सहायता समूहों की महती भूमिका को रेखांकित करना इस पुस्तक का प्रमुख लक्ष्य है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक जनसामान्य को दुर्गुणों के विरूद्ध जूझने की प्रेरणा देगी और इस अभियान के फलस्वरूप राज्य के सामाजिक क्षेत्र में हो रहे सकारात्मक बदलाव को दर्शाने में सहायक सिद्ध होगी। इस अभिनव प्रयास के लिए मैं जीविका को उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ शुभकामनाएँ देता हूँ।

(श्री नीतीश कुमार)

श्रवण कुमार
मंत्री
ग्रामीण विकास एवं संसदीय कार्य विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

संदेश

बिहार में महिलाओं के उत्थान, स्वावलम्बीकरण एवं सशक्तिकरण की दिशा में जीविका परियोजना का अहम योगदान है। सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये माहौल एवं परिवेश का ही फल है कि जीविका द्वारा महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में लगातार उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। समाज में फैली कुरीती, बुराईयों एवं अन्धविश्वास के खिलाफ जीविका की दीदी द्वारा संघर्ष जारी है। उनके इन्ही प्रयासों का फल है कि आज बिहार में सम्पूर्ण मद्यपान निषेध अधिनियम लागू किया जा सका है।

जीविका की दीदी के संघर्ष, प्रयास एवं पहल को कहानी के रूप में पुस्तक का स्वरूप दिये जाने का निर्णय काफी सराहनीय है। इस पुस्तक से जनमानस को संगठित प्रयास के फल से परिचित होने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

मैं इस पुस्तक के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ ।

(श्रवण कुमार)

अंजनी कुमार सिंह,
भा.प्र.से.
मुख्य सचिव
बिहार सरकार

बिहार सरकार

संदेश

जीविका द्वारा समाज में फैली विभिन्न सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए निरंतर कई अभिनव प्रयास किये जाते रहे हैं। इन्ही प्रयासों में एक प्रयास बिहार में शराबबंदी का है। जीविका दीदियों ने आरंभ से ही शराब जैसी कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया है। बिहार में पूर्ण शराबबंदी का वर्त्तमान मुकाम इसी का नतीजा है। समाज में फैली अन्य सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष कर रहे लोगों को इससे प्रेरणा प्राप्त होगी।

जीविका महिलाओं का स्वयं सहायता समूह गठन कर आर्थिक दृष्टि से इन्हें आत्मनिर्भर करने का प्रयास कर रहा है जिसमें उत्साहवर्द्धक सफलता मिली है। जीविका के इन्ही सभी प्रयासों का संकलन इस पुस्तक में किया जा रहा है जो अत्यंत ही सराहनीय है।

मैं अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

(अंजनी कुमार सिंह)

पी० के० ठाकुर

पुलिस महानिदेशक
बिहार सरकार

बिहार सरकार

संदेश

बिहार में शराबबंदी कानून लागू होना एक अभूतपूर्व कदम है। यह एक सामाजिक क्रांति है जिससे अपराध के ग्राफ में कमी आई है। इस सामाजिक क्रांति में जीविका से जुड़ी दीदियों की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने शराब से होने वाले नुकसान को काफी करीब से अनुभव किया है एवं उसके खिलाफ निरंतर अपनी आवाज उठाई है। इस लड़ाई को निडर होकर लड़ने वाली महिलाओं के कहानियों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना एक अत्यन्त सराहनीय कदम है। मैं सभी पुलिसकर्मियों की ओर से जीविका परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(पी० के० ठाकुर)

शिशिर सिन्हा,
भा.प्र.से.
विकास आयुक्त,
बिहार सरकार

बिहार सरकार

संदेश

शराबबंदी कानून लागू होने से बिहार आज पूरे देश में बदलाव का वाहक बन चुका है। शराबबंदी को लागू करवाने में जीविका दीदियों ने अहम् भूमिका अदा की। उनके योगदान से इस महत्वपूर्ण प्रयास को अमलीजामा पहनाया जा सका। इन दीदियों के प्रयासों को संकलन के रुप में प्रकाशित करना एक सुंदर प्रयास है। इनसे सामाजिक अभियान में जुड़े अन्य लोगों को निश्चित रूप से मदद मिलेगी।

इस कार्य के लिए मेरी शुभकामनाएं हैं।

(शिशिर सिन्हा)

अरविन्द कुमार चौधरी, भा.प्र.से.

सचिव,
ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

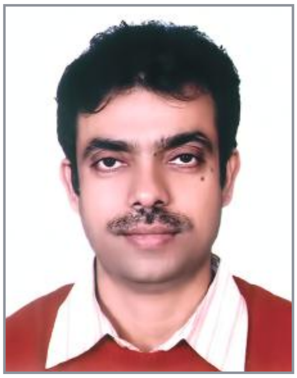

संदेश

बिहार में जीविका बदलाव के वाहक के रूप में आज हमारे सामने है। यह एक ऐसी मौन क्रांति है, जो पूरी सामाजिक व्यवस्था को बदलने की ताकत रखती है। ग्रामीण विकास में जीविका से जुड़ी दीदियों की सहभागिता काबिले तारीफ है। मद्य निषेध कानून को लागू करवाने में जीविका दीदियों के प्रयास को हम कभी नजरअंदाज नहीं कर सकते। इन्होंने प्रत्येक मौके पर यह साबित किया है कि ये सामाजिक बुराईयों के प्रति कितनी सजग और संवेदनशील हैं। इनकी सोच एवं क्रियाकलापों का संकलन प्रकाशित करना काफी हर्ष का विषय है। मेरी शुभकामना है कि जीविका दीदियाँ सामाजिक बुराईयों के खिलाफ इसी प्रकार अपनी लड़ाई जारी रखें।

(अरविन्द कुमार चौधरी)

बालामुरूगन डी.,
भा.प्र.से.
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी
जीविका

बिहार सरकार

संदेश

बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण हेतु जीविका निरंतर प्रयासरत् है। आज इसी का परिणाम है कि जीविका दीदियां समाज के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील दिख रही हैं। आज जीविका से जुड़ी दीदियां इतनी सजग हैं कि वे अपनी अच्छाई एवं बुराई के साथ ही समाज की अच्छाई एवं बुराईयों से भी बखूबी वाकिफ हैं। इन्हीं दीदियों के प्रयास का नतीजा बिहार में पूर्ण शराबबंदी के रूप में हमारे सामने आया है। आज जीविका दीदियों ने एक ऐसी क्रांति का सूत्रपात किया है जो इतिहास में दर्ज हो गया है। जीविका दीदियों के प्रयासों को संकलित कर प्रकाशित करना एक बड़ा कदम है। ये दीदियां हम सबों की रॉल मॉडल हैं। जीविका दीदियां सामाजिक बुराईयों के खिलाफ अपने संघर्ष को निरंतर जारी रखेंगी। इसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

(बालामुरूगन डी.)

विषय सूची

विवरण	पृष्ठ सं.
पृष्ठभूमि : बिहार में पूर्ण मद्य निषेध में जीविका की भूमिका	1-3
मद्य निषेध अभियान के लिए दिशा निर्देश	4-7
पूर्ण शराबबंदी को सफल बनाने हेतु जीविका की गतिविधियाँ	8-14
पूर्ण मद्य निषेध हेतु 101 जीविका दीदियों की संघर्ष गाथाएँ	15-104
निष्कर्ष	105

पृष्ठभूमि :

बिहार में पूर्ण मद्य निषेध में जीविका की भूमिका

जीविका एक परिचय

जीविका परियोजना बिहार सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिए उठाया गया एक महत्वकांक्षी कदम है। इस परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय खासकर गरीब तबके के लोगों को उनके जीविकोपार्जन के लिए समुचित अवसर उपलब्ध कराना है। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जिसे जीविका के नाम से भी जाना जाता है, सोसाईटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के अंतर्गत निबंधित संस्था है। जीविका की शुरूआत 02 अक्टूबर 2007 में हुई थी। प्रथम चरण में राज्य के छः जिलों–मधुबनी, मुजफ्फरपुर, खगड़िया, नालंदा, गया एवं पूर्णिया के कुल 18 प्रखंडों में कार्य प्रारंभ किया गया और 02 अक्टूबर 2009 से इसका विस्तार उपर्युक्त जिलों के 24 अन्य प्रखंडों के अतिरिक्त मधेपुरा एवं सुपौल जिले के एक–एक प्रखंड में किया गया। दिसंबर 2010 में सुपौल, मधेपुरा एवं सहरसा जिले के 11 अतिरिक्त प्रखंडों में कार्य प्रारंभ किया गया। राज्य सरकार द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजिविका मिशन के क्रियान्वयन हेतु जीविका को नामित किया गया। जिसके उपरांत सभी प्रखंडों में चरणबद्ध तरीके से कार्य आरंभ किया गया। वर्तमान में बिहार के सभी 38 जिलों के 534 प्रखंडों में जीविका की गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जीविका त्रीस्तरीय व्यवस्था के तहत कार्य कर रही है। जिसमें प्रखंड स्तर पर प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन इकाई, जिला स्तर पर जिला परियोजना समन्वयन इकाई एवं राज्य स्तर पर राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई है। जीविका की कार्यनीति में मुख्य रूप से सामाजिक समावेशन एवं सामुदायिक संगठनों का निर्माण, वित्तीय समावेशन, आजीविका संवर्द्धन है। परियोजना इसी दायरे में गरीबों के सामाजिक, आर्थिक विकास एवं संवर्द्धन हेतु कार्य कर रही है।

शराबबंदी के लिए जीविका दीदियों का मुख्यमंत्री से निवेदन

जीविका दीदियां सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ हमेशा से ही संघर्ष करती रही हैं। बिहार में पूर्ण मद्य निषेध को प्रभावी बनाने में जीविका दीदियों की अहम भूमिका रही है। शराब जैसी कुरीतियों के खिलाफ जीविका की दीदियों ने काफी पहले ही आवाज उठाना शुरू कर दिया था। शराबबंदी की दिशा में वर्ष 2012 से ही कई स्तरों पर प्रयास किया गया। खासकर गया, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, खगड़िया आदि जिलों में जीविका दीदियों द्वारा शराब की बुराईयों के बारे में आम लोगों को जागरूक करने के लिए रैली, नुक्कड़ नाटक आदि का आयोजन किया जाता रहा। साथ ही शराब की दुकानों को बंद करवाने, शराब पीने वालों को स्थानीय स्तर पर सजा देने जैसी

गतिविधियों का भी संचालन किया जाता था। स्वंय सहायता समूह एवं ग्राम संगठन स्तर पर शराबबंदी के लिए समिति का गठन भी किया गया। राज्य में शराब बंद करवाने के लिए सरकार पर दबाब बनाने में इन गतिविधियों की भी काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

शराबबंदी की नींव

09 जुलाई 2015 को पटना में जीविका द्वारा आयोजित ग्रामवार्ता के कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री जी उपस्थित थे। इसमें राज्य के तमाम वरिष्ठ अधिकारियों समेत जीविकाकर्मी और बड़ी संख्या में जीविका की दीदियां मौजूद

थीं। कार्यक्रम विधिवत रूप से सम्पन्न किया जा रहा था। कार्यक्रम अब अपने अंतिम पड़ाव की ओर था। मुख्यमंत्री जी अपना संबोधन समाप्त कर पर बैठ चुके थे कि तभी दर्शक दीर्घा में उपस्थित जीविका दीदियों की तरफ से आवाज उठी, ''मुख्यमंत्री जी शराबबंद कराइए, शराब!, इससे हमारा घर पूरी तरह तबाह हो रहा है।'' माननीय मुख्यमंत्रीजी तक यह आवाज पहुंचते ही वह अपनी कुर्सी से उठे और तत्काल माइक हाथ में लेकर घोषणा कर दी, ''अगली बार सरकार में आएंगे तो शराब बंद कर देंगे।'' मुख्यमंत्री जी की ओर से शराबबंदी का आश्वासन मिलते ही सभी दीदियों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस कदम का स्वागत किया।

शराबबंदी की घोषणा :

इसके उपरान्त 26 नवम्बर 2015 को मद्य निषेध दिवस के मौके पर जीविका दीदियों के एक कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने बिहार में सभी तरह की देसी शराब की बिक्री 01 अप्रैल 2016 से बंद करने

की घोषणा कर दी। इस घोषणा के साथ ही बिहार में 01 अप्रैल 2016 से देसी शराब बनाने–बेचने और पीने पर पूर्णतः प्रतिबंध लग गया। दुकानों के लाईसेंस रद्द कर दिये गये। मुख्यमंत्री जी की इस घोषणा का जीविका दीदियों ने तहे दिल से स्वागत किया और इस फैसले को साकार करने में बिहार भर की जीविका दीदियां पूरे जोश और उत्साह के साथ जुट गईं। दीदियों ने समूह से लेकर ग्राम संगठन और सीएलएफ स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया। शराब की भट्ठियों पर धावा बोल कर उसे तोड़ दिया और शराबियों को खदेड़ दिया। दीदियों ने राज्य भर में शराब के खिलाफ जबरदस्त अभियान चलाया।

शराबबंदी की सफलता को देखकर माननीय मुख्यमंत्री द्वारा 04 अप्रैल 2016 को बिहार में पूर्ण मद्य निषेध की घोषणा कर दी गई। इसके अगले ही दिन यानी 05 अप्रैल 2016 से बिहार में किसी भी प्रकार की शराब की बिक्री, खरीदारी एवं पीना कानूनी रूप से अवैध हो गया। इसमें दोषी पाये जाने वालों के खिलाफ कड़ी सजा का भी प्रावधान किया गया है।

अभियान का शुभारंभ

21 जनवरी 2016 को पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार द्वारा मद्य निषेध अभियान की शुरूआत की गयी। इस आयोजन में माननीय मुख्यमंत्री ने वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से राज्य के सभी जिलों की जीविका महिलाओं से शराबबंदी को प्रभावी बनाने का आह्वान किया।

मद्य निषेध के लिए दिशा निर्देश

जीविका द्वारा पूर्ण मद्य निषेध अभियान के लिए राज्य कार्यालय से जारी दिशा निर्देश–

बिहार सरकार द्वारा 26 नवंबर, 2015 को बिहार में शराब बंदी की घोषणा की गयी। उल्लेखनीय है कि जीविका से सम्बद्ध महिलाओं की मांग पर माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा यह आश्वासन दिया गया था कि मद्य निषेध सरकार की प्राथमिकता होगी और राज्य सरकार द्वारा पारित उत्पाद नीति 2016 द्वारा इस घोषणा को व्यावहारिक स्वरूप दिया गया। बिहार सरकार की नई उत्पाद नीति 2016 के तहत 1 अप्रैल, 2016 से पूरे बिहार राज्य के ग्रामीण क्षेत्र एवं नगर पंचायतों में देसी और विदेशी शराब की बिक्री और सेवन को दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि शराब का सेवन सामाजिक और पारिवारिक जीवन के लिए दुस्वप्न की भांति है, जिसका असर परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति पर पड़ता है। इसका सबसे बुरा असर परिवार की महिलाओं पर पड़ता है। इस पृष्ठभूमि में राज्य सरकार द्वारा पारित नीति के क्रियान्वयन में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। इस सन्दर्भ में जीविका से सम्बद्ध सामुदायिक संगठनों की महिलाओं और जीविका से यह अपेक्षा की जाती है कि इस नीति के सफल क्रियान्वयन हेतु अपना योगदान दें।

मद्य निषेध अभियान का संचालन एवं निगरानी की जिला प्रशासन द्वारा त्रिस्तरीय समिति का गठन कर किया जायगा, जिसमें जीविका की भूमिका निहित होगी।

1. **जिला स्तरीय समिति** : मद्य निषेध अभियान हेतु अधीकृत नोडल शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव के पत्रांक 271/दिनांक 08.02.2016 के आलोक में गठित जिला स्तरीय समिति जिसकी अध्यक्षता जिलाधिकारी करेंगे। इस समिति में पुलिस अधीक्षक, नोडल अधिकारी (मद्य निषेध), सहायक उत्पाद आयुक्त, जिला स्वास्थ्य विभाग के अधिकृत सदस्य, जिला परियोजना प्रबंधक (जीविका), प्रबंधक – सामाजिक विकास (जीविका) एवं अन्य प्रमुख सदस्य होंगे। इस समिति की बैठक महीने में दो बार होगी जिसमें प्रखण्ड एवं पंचायत स्तर पर किए गए कार्यों की समीक्षा एवं समस्याओं का समाधान किया जाएगा।
2. **प्रखण्ड स्तरीय समिति** – जिलाधिकारी के दिशा–निर्देश में प्रखण्डों में प्रखण्ड स्तरीय समिति का गठन किया जायगा, जिसमें मुख्य रूप से प्रखण्ड–विकास पदाधिकारी, थाना प्रभारी, उत्पाद विभाग द्वारा नामित एक सदस्य, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र–प्रभारी, जीविका के प्रखण्ड परियोजना प्रबंधक एवं प्रखण्ड के प्रत्येक संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.)/ग्राम संगठन से दो–दो सदस्य होंगे। पंचायत स्तर पर किए गए कार्य जैसे शराब की अवैध बिक्री या सेवन से संबंधित चिन्हित व्यक्तियों द्वारा किसी भी आपराधिक घटना एवं सरकार के नियम का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों की सूचना प्रखण्ड स्तर पर दी जायेगी। इस समिति की बैठक शुरुआत के महीनों में दो बार तथा बाद में हर महीने में एक बार होगी तथा इसकी अध्यक्षता प्रखण्ड विकास पदाधिकारी करेंगे।
3. **पंचायत स्तरीय समिति** : प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के दिशा–निर्देश पर पंचायत स्तरीय समिति का गठन किया जाएगा, जिसकी बैठक साप्तााहिक होगी। इसमें मुख्य भूमिका जीविका के संकुल स्तरीय संघ

(सी.एल.एफ.)/ग्राम संगठन के सदस्य की होगी। जिसकी अध्यक्षता पंचायत के मुखिया द्वारा की जायेगी। इस बैठक में पंचायत स्तर पर मुखिया, पंचायत सचिव, मद्य निषेध में संलग्न व्यक्ति, क्षेत्रीय समन्वयक (जीविका), विकास मित्र, सामाजिक कार्यकर्त्ता, वार्ड सदस्य एवं जन प्रतिनिधि भाग लेंगे। समिति की जिम्मेदारी होगी कि पंचायत स्तर पर देसी शराब/विदेशी शराब एवं ताड़ी की बिक्री पुनः शुरू न हो तथा वैसी महिलाएं, जो शराब बंदी के लिए काम कर रही हैं उनके साथ कोई अभद्र व्यवहार न हो तथा वैसे व्यक्ति जिनके स्वास्थ्य पर शराब पीने के कारण प्रतिकुल प्रभाव पड़ रहा हो उन्हें स्वास्थ्य केन्द्र/नशा विमुक्ति केन्द्र तक पहुँचाना एवं उचित सुविधा उपलब्ध कराना। इसकी सूचना संबंधित थाना प्रभारी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं प्रभारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को अवश्य दी जाय। इस समिति की अध्यक्षता ग्राम पंचायत के मुखिया करेंगे।

जीविका के सामुदायिक संगठनों एवं कर्मियों के द्वारा मद्य निषेध अभियान हेतु कार्य योजना निम्नानुसार होगी :–

1. **सामुदायिक संगठन :** मद्य निषेध को पूर्णतः प्रभावी बनाने की दिशा में ग्राम संगठनों द्वारा निम्ना कार्रवाई अपेक्षित होगी :–

- संकुल स्तरीय संघ/ ग्राम संगठन के सदस्य एक निगरानी समिति का गठन कर देसी/विदेशी शराब एवं ताड़ी उपभोग/भण्डारण/निर्माणकर्त्ता को चिन्हित कर उनके साथ बैठक करेंगे। बैठक में उन्हें मद्य निषेध के प्रति जागरूक करेंगे तथा आवश्यकतानुसार वैकल्पिक जीविकोपार्जन पर विचार करेंगे। इस समिति की अन्य प्रमुख जिम्मेदारी होगी मद्य निषेध अभियान के कार्यकलापों का अपने ग्राम स्तर पर सतत् निगरानी करना।
- ग्राम संगठन द्वारा गांवों में देसी/विदेशी शराब/ताड़ी के उपभोग/भण्डारण बिक्री में संलग्न व्याक्ति की पहचान कर सूचना टौल फ्री नं० : **18003456268** पर दर्ज कराना।
- यह अपेक्षा की जाती है कि शिकायत दर्ज होने के 8–10 घंटे के अंतर्गत पुलिस कार्रवाई द्वारा उक्त ठेके और दुकानों को बंद कर उसके विरूद्ध समुचित कार्रवाई की जाएगी ऐसा नहीं होने पर सूचना ग्राम संगठन द्वारा क्षेत्रीय समन्वयक को दी जाय और क्षेत्रीय समन्वयक इसकी सूचना अविलम्ब 7762880533 पर करेंगे। दूरभाष संख्या :– 0612-2215843 पर फैक्स संवाद भी भेजा जा सकता है।
- ग्राम संगठन के सदस्य, क्षेत्रीय समन्वयक एवं सामुदायिक समन्वयक की उपस्थिति में पंचायत स्तर पर शराब बेचने या पीने वाले व्यक्ति एवं उनके घर की महिलाओं के साथ सार्वजनिक बैठक करेंगे। ग्राम संगठन/संकुल स्तरीय संघ द्वारा इन परिवारों की वैसी महिलाएं, जो जीविकोपार्जन के नये साधन से जुड़ना चाहती हैं, उनसे बातचीत करेंगे और मार्गदर्शन करेंगे। संकुल स्तरीय संघ/ग्राम संगठन के सचिव की जिम्मेदारी होगी की वह अपने बैठक में उस मुखिया को आमंत्रित करेंगे ताकि पंचायत स्तर पर सामंजस्य स्थापित हो सके।

- **वित्तीय सहायता :** ग्राम संगठन/सी.एल.एफ. इस पेशे से सम्बद्ध परिवार की वैसी महिलाओं को जो स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं, 50,000–75,000 रुपये तक की वित्तीय सहायता (सामान्य ऋण) उनके द्वारा प्रस्तुत व्यावसायिक कार्य योजना के आधार पर उपलब्ध करा सकेगा। व्यवसाय विषयक जानकारी के संबंध में उनका मार्गदर्शन लाइवलीहुड स्पेशलिस्ट/आई.डी.एम. कर सकते हैं। सी.एल.एफ./ग्राम संगठन ऋण मांग पत्र पर अनुशंसा के उपरांत वित्तीय साहयता प्रदान करेगा। वैसी महिलाएं जो इस पेशे से संबंधित परिवार से तालुक रखती हैं तथा किसी भी स्वयं सहायता समूह की सदस्य नहीं है उन्हें पहले समूह से जोड़ा जाएगा तब उन्हें इस योजना का लाभ दिया जायगा।

- उक्त ऋण जीविका के स्वयं सहायता समूह को दिए जाने वाली योजना के अनुरूप होगा। ग्राम संगठन को मिलने वाली प्रोत्साहन राशि द्वारा शेष ब्याज को पूरा किया जा सकता है। प्रोत्साहन राशि नहीं प्राप्त करने की स्थिति में जीविका के सामान्य ऋण का ही लाभ दिया जायगा, वो भी इस पेशे से संबंधित अनुसूचत जाति/अनुसूचित जनजाति परिवार की महिलाओं को दिए जायेंगे, इन महिलाओं को भी पहले जीविका के स्वयं सहायता समूह से जोड़ा जाए तब ही उपरोक्त सुविधा दी जायेगी।

- संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.)/ग्राम संगठन के अधिकारियों की यह जिम्मेदारी होगी कि पंचायत स्तर पर साप्ताहिक बैठक (सभी कैडरों जैसे जीविका मित्र/ग्राम संसाधन सेवी एवं बुककीपर आदि के साथ बैठक कर गांव में नीति के उल्लंघन करने वाले लोगों की जानकारी/वार्ड सदस्य के साथ साझा करें। जिसकी जानकारी थाना प्रभारी एवं प्रखण्ड विकास पदाधिकारी को अवश्य दें। ग्राम संगठन के द्वारा इस बैठक में जनप्रतिनिधि की उपस्थिति अवश्य सुनिश्चित करायी जायेगी।

2. जीविकाकर्मियों के द्वारा :

- सामुदायिक समन्वयक, संकुल स्तरीय संघ/ग्राम संगठन से समन्वय स्थापित कर मद्य निषेध अभियान से संबंधित शिकायतों का अनुश्रवण करेंगे तथा किसी प्रकार की विशेष सूचना को 7762990523 पर सूचित करेंगे।

- क्षेत्रीय समन्वयकों द्वारा प्रत्येक सी.एल.एफ. में नशा विमुक्ति का प्रथम एजेंडा रखने की सलाह दी जाएगी। सी.एल.एफ. की बैठक में मुखिया (5 से 6 मुखिया) की उपस्थिति सुनिश्चित करना क्षेत्रीय समन्वायकों की जिम्मेदारी होगी।

- क्षेत्रीय समन्वयकों द्वारा सभी कैडरों की साप्ताहिक बैठक कलस्टर में सी.एल.एफ. की सामाजिक समिति के साथ करना सुनिश्चित किया जाएगा ताकि सी.एल.एफ. की सामाजिक समिति के सदस्य उन परिवारों से मिलें जिन्हें सलाह की आवश्यकता है। इन चिन्हित परिवारों को आशा कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी क्षेत्रीय समन्वयकों की होगी।

- जिला परियोजना प्रबंधक यह सुनिश्चित करेंगे कि हर माह में दो बार जिलाधिकारी द्वारा कार्य योजना की स्थिति की समीक्षा की जाए।

- जिला परियोजना प्रबंधक जीविका एवं प्रखण्ड परियोजना प्रबंधक जीविका द्वारा निम्न बिन्दुओं पर अनुश्रवण किया जायेगा एवं प्रतिवेदन भी समर्पित किया जायेगा।

  टॉल फ्री नंबर पर दर्ज की गयी शिकायतों की संख्या। उन शिकायतों पर पुलिस/उत्पाद विभाग द्वारा की गयी कार्रवाई एवं उसका परिणाम।

त्रिस्तरीय समिति की बैठक का साप्ताहिक अवलोकन।

ग्राम संगठनों/सी.एल.एफ. द्वारा इस व्यवसाय को छोड़ने वाले लोगों (स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को) को ऋण दिए जाने की स्थिति की समीक्षा।

- संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.)/ग्राम संगठनों को पुरस्कार/सम्मान हेतु जिला प्रशासन द्वारा मनोनयन। इस संदर्भ में ग्राम संगठन आवेदन प्रखण्ड परियोजना क्रियान्वयन इकाई को जमा करेंगे। प्रखण्ड परियोजना क्रियान्वयन इकाई इन आवेदनों को जिला परियोजना समन्वयन इकाई में जमा करेगी एवं जिला परियोजना प्रबंधक जीविका इन्हें अनुशंसित कर जिला पदाधिकारी के समक्ष जमा करेंगे।

- प्रबंधक – सामाजिक विकास, जीविका एवं प्रबंधक – संचार जीविका, शराब बंदी से संबंधित विडियो/फिल्म/गाना जो जीविका द्वारा तैयार किया गया है, उसे अपने जिले के ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ के सभी सदस्यों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे तथा शराब बंदी से संबंधित फिल्म/विडियो का प्रदर्शन ग्राम संसाधन सेवी द्वारा प्रत्येक गांव (15–20 स्वंय सहायता समूह) में करवाना भी सुनिश्चित करेंगे जिसके लिए ग्राम संगठन द्वारा ग्राम संसाधन सेवी को 50/– रुपये की राशि दी जायेगी।

नोट : यह संभव है कि मद्य निषेध नीति के क्रियान्वयन के सन्दर्भ में कुछ समस्या उत्पन्न ऐसी स्थिति में इस संबंध में सूचना उत्पाद आयुक्त, बिहार को उनके मोबाइल नंबर 9473400601–05 पर दी जाए।

मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी
जीविका

बिहार में पूर्ण शराबबंदी को सफल बनाने हेतु जीविका की गतिविधियाँ

1. **स्वयं सहायता समूह स्तर पर–** राज्य सरकार द्वारा मद्य निषेध को कानून बनाने के बाद स्वयं सहायता समूहों की दीदियों द्वारा उनके क्षेत्रों में शराब की बिक्री ना हो, इसके लिए समूहों में लगातार चर्चा की जा रही है। समूह की दीदियों द्वारा स्थानीय प्रशासन के साथ कदम से कदम मिलाकर प्रभावित क्षेत्रों में पूर्ण मद्य निषेध लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। शराब की बिक्री या इस तरह की किसी भी प्रकार की जानकारी दीदियों द्वारा प्रशासन को उपलब्ध करायी जा रहा है।

2. **ग्राम संगठन स्तर पर–** ग्राम संगठनों द्वारा शराब से होने वाले नुकसानों के साथ–साथ शराब मुक्त समाज पर चर्चा आयोजित की जा रही है। कई स्थानों पर शराब की भट्ठियों को तोड़ा गया है। राज्य में पूर्ण मद्य निषेध कानून लागू होने के बाद ग्राम संगठनों की दीदियों द्वारा गांवों में रैली का आयोजन किया जा रहा है। हेल्पलाईन नंबरों पर फोन द्वारा जीविका दीदियों ने कई स्थानों पर अवैध तरीके से संचालित शराब भट्ठियों को बंद करवाया है। दीदियों द्वारा कई शराबियों को न केवल चिन्हित किया जा रहा है बल्कि उन्हें नशा मुक्ति केन्द्र पहुंचाने में मदद की जा रही है।

3. **संकुल स्तरीय संघ स्तर पर–** संकुल स्तरीय संघों में पूर्ण मद्य निषेध पर मुद्दा आधारित चर्चा कर समूह की महिलाओं को जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है। पूर्ण मद्य निषेध कानून के बारे में विस्तार से दीदियों को बताया जा रहा है। संकुल स्तरीय संघ द्वारा नुक्कड़ नाटक, जागरूकता रैली, संकल्प सभा, शपथ ग्रहण कार्यक्रम, हस्ताक्षर अभियान जैसे आयोजनों के द्वारा शराबबंदी को पूरी तरह से सफल बनाने का कार्य किया जा रहा है। संघों द्वारा प्रशासन के साथ मिलकर शराबियों का सर्वेक्षण कराकर उनकी सूची बनाई गयी है, जिसे कई जिलों में जिला प्रशासन को सौंपा गया है। इन सूचियों के आधार पर जीविका द्वारा शराबियों को शराब मुक्ति केन्द्रों में भेजा गया है। आदिवासी समुदाय या जो समूह शराब के व्यवसाय से जुड़े हैं को वैकल्पिक रोजगार के साधन भी जीविका द्वारा उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

4. **नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति–** बिहार में मद्य निषेध कानून लागू होने के बाद समूह की महिलाओं को इस कानून के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से समुदाय आधारित संगठनों में नुक्कड़ नाटक द्वारा सहभागिता आधारित जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जागरूकता कार्यक्रम समूह, ग्राम संगठन एवं संकुलस्तरीय संघ स्तर पर आयोजित किये जा रहे हैं।

5. **आई.ई.सी. सामग्रियों द्वारा मद्य निषेध कानून का प्रचार–प्रसार–** बिहार के कई जिलों में बैनर, फलेक्स, हैंडवील, सूचना पटल, संकल्प पत्र आदि का प्रकाशन करवाकर समुदाय आधारित संगठनों में वितरण किया गया तथा मद्य निषेध के प्रति समूह की दीदियों को जागरूक किया गया। इसमें मद्य निषेध के लिए सरकार द्वारा बनाये गये कानूनों की भी संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध करवाई गयी है। शराबबंदी पर जीविका द्वारा फिल्म का निर्माण भी किया गया है। जिसका प्रदर्शन पिको प्रोजेक्टर के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है।

6. **अवैध शराब भट्ठी की सूचना–** मद्य निषेध कानून के लागू होने के बाद विभिन्न स्थानों पर जीविका दीदियों द्वारा प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराये गये हेल्प लाईन नंबरों पर शराब बिक्री की सूचना, अवैध शराब निर्माण की सूचना, शराब पीने वालों से संबंधित सूचनाएं दी गयी, जिससे प्रशासन को मद्य निषेध कानून को सख्ती से पालन करवाने में काफी मदद मिल रही है।

7. **एसएमएस द्वारा जागरूकता अभियान–** मद्य निषेध कानून के लागू होते ही राज्य के सारे जिलों में जीविका के दीदियों के मोबाईल नंबरों पर मद्य निषेध कानून से संबंधित जानकारी एवं कानून के उल्लंघन की स्थिति में कहां संपर्क किया जा सकता है, के बारे में सूचना दी जा रही है। यह एसएमएस जीविका दीदियों के अलावे जीविका से जुड़े अन्य कर्मियों को भी भेजा जा रहा है।

मद्य निषेध अभियान के अन्तर्गत 5500 ग्राम पंचायतों में 26000 जीविका ग्राम संगठनों द्वारा जागरूकता रैली एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 4,40,000 जीविका स्वयं सहायता समूहों ने गांव एवं पंचायत स्तर पर शराब की बिक्री एवं सेवन पर रोक लगाया है।

मुख्यमंत्री का जीविका दीदियों के साथ संवाद कार्यक्रम

बिहार में पूर्ण मद्य निषेध कानून के लागू होने के बाद जीविका द्वारा प्रमंडल स्तर पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जीविका दीदियों के साथ इन कार्यक्रमों में मुख्यमंत्री सहित विभिन्न विभागों के उच्चस्थ अधिकारियों की उपस्थिति रही। इन कार्यक्रमों में जीविका दीदियों को मद्य निषेध के लाभ के साथ–साथ मद्य निषेध कानून की बारीकियों से भी अवगत कराया गया।

भागलपुर प्रमंडल

भागलपुर प्रमंडल में 26 अप्रैल 2016 को मद्य निषेध कार्यक्रम का आयोजन सैंडिस कंपाउड में किया गया। जिसमें भागलपुर एवं बांका जिले की 8 हजार से अधिक जीविका दीदियों की उपस्थिति रही।

कोशी प्रमंडल

कोशी प्रमंडल में 03 मई 2016 को सहरसा स्टेडियम, सहरसा में मद्य निषेध कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सहरसा, मधेपुरा एवं सुपौल जिले की 11 हजार से ज्यादा स्वयं सहायता समूहों की दीदियों ने भाग लिया। इस अवसर पर वाणिज्य कर व उर्जा मंत्री श्री विजेन्द्र प्रसाद, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री श्री अब्दुल गफुर, आपदा प्रबंधन मंत्री श्री चन्द्रशेखर, मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह, डीजीपी श्री पी॰के॰ ठाकुर, ग्रामीण विकास विभाग के सचिव श्री अरविन्द कुमार चौधरी, जीविका के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी श्री बालामुरूगन डी॰ आदि उपस्थित थे।

दरभंगा प्रमंडल

दरभंगा प्रमंडल में 04 मई 2016 को दरभंगा मेडिकल इनडोर स्टेडियम में मद्य निषेध कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दरभंगा, समस्तीपुर एवं मधुबनी जिले की करीब 2 हजार महिलाओं ने शिरकत की।

सारण प्रमंडल

11 मई को छपरा के राजेन्द्र स्टेडियम में मुख्यमंत्री का जीविका दीदियों के साथ संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सारण, सीवान और गोपालगंज जिले की 10 हजार से ज्यादा जीविका दीदियों ने शिरकत की।

मुंगेर प्रमंडल

24 मई 2016 को पोलो मैदान, मुंगेर में जीविका द्वारा प्रमंडल स्तरीय मद्य निषेध कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजन में बिहार के माननीय मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार में इस जन आंदोलन की शुरूआत हो चुकी है। उन्होंने कहा कि जीविका दीदियों की मांग के बाद लागू पूर्ण मद्य निषेध कानून से बिहार की तस्वीर बदलेगी। इस अवसर पर लघु सिंचाई व संसाधन मंत्री ललन सिंह, ग्रामीण विकास मंत्री श्री श्रवण कुमार, आपदा प्रबंधन मंत्री श्री चन्द्रशेखर, पंचायती राज मंत्री कपिलदेव कामत, समाज कल्याण मंत्री मंजू गीता, ग्रामीण कार्य मंत्री शैलेश कुमार, मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह, डीजीपी श्री पी॰के॰ ठाकुर, ग्रामीण विकास विभाग के सचिव श्री अरविन्द कुमार चौधरी, जीविका के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी श्री बालामुरूगन डी॰ आदि उपस्थित थे।

तिरहुत प्रमंडल

28 मई 2016 को पुलिस लाईन मुजफ्फरपुर में मद्य निषेध कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 8 हजार से ज्यादा महिलाओं ने शिरकत की। आयोजन में मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार सहित राज्य के तमाम आला अधिकारी एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थें।

मगध प्रमंडल

10 जून, 2016 को गया के सुब्रमन्यम स्टेडियम में मुख्यमंत्री का जीविका दीदियों के साथ संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें गया, जहानाबाद, अरवल, नवादा और औरंगाबाद जिले के 8 हजार से ज्यादा जीविका दीदियों ने शिरकत की।

माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के द्वारा मद्य निषेध की दिशा में उत्कृष्ठ कार्य करने तथा अपने गाँव को शराब मुक्त बनाये जाने पर जीविका ग्राम संगठनो को एक–एक लाख रूपये प्रोत्साहन के रूप में प्रदान किया गया, जिसकी सूची निम्न है–

क्र.सं	**जिला**	**प्रखंड का नाम**	**ग्राम संगठन का नाम**	**राशि (रूपया)**
1.	खगड़िया	चौथम	आँचल जीविका महिला ग्राम संगठन	1 लाख
2.	गया	खिजरसराय	संगम जीविका महिला ग्राम संगठन	1 लाख
3.	दरभंगा	दरभंगा सदर	मनोकामना जीविका महिला ग्राम संगठन	1 लाख
4.	नालंदा	हरनौत	एकता जीविका महिला ग्राम संगठन	1 लाख
5.	नालंदा	हरनौत	खुशबू जीविका महिला ग्राम संगठन	1 लाख
6.	नालंदा	रहुई	नारीशक्ति जीविका महिला ग्राम संगठन	1 लाख
7.	नालंदा	रहुई	खुशहाली जीविका महिला ग्राम संगठन	1 लाख

1. समूह की शक्ति

''मेरा नाम ब्यूटी कुमारी है, मैं भागलपुर जिले के पीरपैंती प्रखंड के मानिकपुर पंचायत के मलिकपुर गाँव की रहने वाली हूँ । मैं अपने पति के शराब पीने के आदत से काफी परेशान रहती थी । नशे में वो हर रोज घर में मार–पीट करते थे। मेरी मेहनत की कमाई के पैसे से मेरे पति शराब पी जाते थे। जब परेशानी ज्यादा बढ़ गई तब ,मैंने अपने एकता जीविका स्वयं सहायता समूह में इस बात का जिक्र किया।

मेरी परेशानी को देखते हुए ज्योति जीविका महिला ग्राम संगठन की बैठक में इस पर चर्चा हुई। ग्राम संगठन के सदस्यों ने ग्राम स्तर पर शराब के खिलाफ रैली निकाली, साथ ही गाँव में अवैध रूप से शराब बेचने वालों को शराब नहीं बेचने के लिए चेतावनी दी। लेकिन अवैध शराब दुकानदारों ने हमारी बात नहीं सुनी।

हम सभी ने थाना को भी इसकी सुचना दी,लेकिन पुलिस ने कोई ठोस हल नहीं निकाला। कोई समाधान नहीं निकलते देख हम सभी महिलाओं ने गाँव के शराब भठ्ठी को तोड़ दिया। जब इस घटना को समाचार पत्रों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया, तब जाकर पुलिस ने शराब दुकानों पर छापेमारी की और सभी दुकानों को बंद कराया। समूह की एकता का यह फल मिला की आज हमारे गाँव मलिकपुर में शराब नहीं बिकती है और हम सभी का परिवार खुशहाल है।''

नाम : ब्यूटी कुमारी

समूह : एकता जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : मलिकपुर, पीरपैंति, भागलपुर

- ब्यूटी कुमारी अपने पति के शराब की लत से परेशान थी।
- ब्यूटी कुमारी को उनके पति शराब के नशे में प्रताड़ित भी करते थे।
- अपनी समस्या ब्यूटी कुमारी ने ज्योति जीविका महिला ग्राम संगठन में बताई।
- ग्राम संगठन ने शराब के खिलाफ गांव में अभियान चलाया। कई शराब की भट्ठियों को तोड़ डाला।
- महिलाओं के विरोध के बाद से गांव में शराब की बिक्री बंद है।

2. शराब छोड़ा तो बिखरा परिवार जुड़ा

'जज्बे की कड़ी धूप हो तो क्या नहीं मुमकिन, कौन कहता है कि पत्थर पिघलता नहीं'। इन पंक्तियों को सच साबित कर एक महिला ने वह कर दिखाया, जो मन्नत और दुआएं भी नहीं कर पाईं। एक व्यक्ति 20 वर्षों तक शराब के नशे में ऐसा डूबा कि चार–पांच बच्चों की मौत हो गई। पत्नी ने घर छोड़ दिया। यूं कहें कि पूरा परिवार बिखर गया। मगर ऐसे बिखरते परिवार को शबनम ने बचाया। वह जोगिंदर मियां की शराब पीने की आदत को छुड़ा कर समाज में प्रेरणा का स्रोत बन गईं।

नाम : शबनम बानो

समूह : रहमान जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : लक्ष्छी गांव, भोरे, गोपालगंज

गोपालगंज जिले में भोरे प्रखंड के लक्ष्छी गांव की शबनम बानो ने अपने ही गांव के जोगिंदर मियां को न केवल शराब की लत से दूर किया बल्कि उसके बिखरे परिवार को पुनः जोड़ने में भी सफलता पाई। शराब की लत छोड़ने के बाद जोगिंदर आज अपने परिवार के संग खुशहाल हैं। वह अब अपने इकलौते बेटे को स्कूल भेजने लगा है। अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा बचाने के लिए उसने पोस्ट ऑफिस में अपना बचत खाता खुलवाया है।

- ✦ जोगिंदर की शराब की लत की वजह से उसके चार मासूम बच्चों की मौत हो गई थी।
- ✦ हालात बदतर होने पर उसकी पत्नी जमीना घर छोड़ अपने मायके चली गईं।
- ✦ पड़ोस की शबनम खातून ने जोगिंदर को शराब की लत छुड़वा कर उसके बिखरे परिवार को जोड़ने का काम किया।

जोगिंदर मियां करीब 20 वर्षों से शराब का आदी था। उसकी शादी जमीला खातून से हुई। जमीला जब पहली बार ससुराल आई तभी अपने शौहर को शराब पीते देख उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। उसके बाद मानो हर दिन शराबी पति की मारपीट और लड़ाई–झगड़ा उसकी दिनचर्या बन गई। जमीला यह सब चुपचाप सहन करती रही। लेकिन हद तो तब हो गई जब शराब की लत की वजह से उसके घर के बरतन तक बिकने की नौबत आ गई। इसी बीच शराब की लत की वजह से जोगिंदर के चार मासूम बच्चों की मौत हो गई। इसके बाद जमिला पूरी तरह टूट गई और जोगिंदर से रिश्ता तोड़ अपने मायके आ गई।

शबनम ने ली चुनौती : इसी बीच पड़ोस में शबनम दुल्हन बन कर आई। जोगिंदर के घर की हालत उससे देखी नहीं गई। इस दौरान वह जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। इधर, बिहार सरकार ने राज्य में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा की तो इससे शबनम देवी को आशा की किरण दिखाई दी। उसने जोगिंदर को शराब पीने की लत छुड़वा कर उसके जीवन को पटरी पर लाने का संकल्प ले लिया। एक माह के प्रयास के बाद आखिर उसमें बदलाव दिखने लगा। वह प्रतिदिन काम करके 300 रुपये की कमाई करने लगा। चूंकि अब शराब नहीं पीने की वजह से उसके पास पैसों की बचत होने लगी।

3. परिवार के हित में शराब बंदी

मधुबनी जिला के लौकही प्रखण्ड की कुसुमवती देवी का परिवार नशा के दुष्प्रभाव को वर्षों से झेल रहा था। उनके पति शराब पीने के आदि थे।पति दैनिक रूप से मजदूरी का काम करते थे। पति द्वारा शाम में दारू पीकर आना, गाली गलौज करना, मार–पीट करना आम बात थी। बच्चे की पढ़ाई रुक चुकी थी। कुसुमवती देवी अपने ग्राम संगठन माँ जीविका, औरहा, पंचायत करियोत में इसकी चर्चा दबे जुबान में कर चुकी थी। शराब बंदी कानून से कुसुमवती देवी को एक नई जिंदगी मिली,पति के ऊपर कानूनी भय का दबाब बनाया। व्यावहारिक रूप से बदलाव लाकर, पति के जीवन में परिवर्तन लाई। परिणाम स्वरूप पति ने शराब छोड़ दिया।आज कुसुमवती देवी के बच्चे पढ़ने स्कूल जाते है, पति समय से घर आते हैं। परिवार आर्थिक विकास की ओर अग्रसर है।

नाम : कुसुमवती देवी
पता : औरहा, करियोत, लौकही, मधुबनी

- कुसुमवती देवी का परिवार नशा के दुष्प्रभाव को वर्षों से झेल रहा था।
- शराबी पति शराब पीकर उनके साथ मारपीट और गाली–गलौज करता था।
- शराबबंदी के बाद उनके पति ने शराब पीना छोड़ दिया।

4. बन्द हुई शराब तो घर हुआ आबाद

नाम : प्रतिमा देवी
समूह : एकता जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : नरवारा गांव, तरियानी, शिवहर

शिवहर जिले में नरवारा जिले की प्रतिमा देवी एकता जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। प्रतिमा देवी के पति– शैलेन्द्र पासवान 40 वर्ष की उम्र के हैं। वह राजमिस्त्री का काम कर रोजाना 200 से 250 रुपये तक कमा लेते हैं और आधा से ज्यादा पैसा शराब पीने में खर्च कर देते थे। शराब के कारण उसको पति रोजाना घर में वाद–विवाद करते थे। कलह के कारण बच्चों का सही से देखभाल नही हो पाता और न ही न पढ़ाई–लिखाई। वह बताती हैं, ''बिहार में शराबबंदी होने से आज परिवार काफी खुशहाल है। आज हमारे परिवार का आमदनी 200 से 250 रु0 तक हमारे पति लाकर घर में देते है। एवं हमारे बच्चे अच्छा से खाना खाकर स्कूल में पढ़ने जाते है।''

- राजमिस्त्री का काम करने वाला शैलेंद्र पासवान अपनी कमाई का आधा हिस्सा शराब पी कर उड़ा देता।
- पति ने शराब पीना तब छोड़ा जब लाख कोशिश के बाद भी शराब नहीं मिलती।
- अब शराब नहीं पीने से वह अपनी पूरी कमाई घर की जरूरतों पर करता है खर्च ।

5. बच्चों को छोड़नी पड़ी थी पढ़ाई

नाम	:	सीता देवी
समूह	:	मां सरस्वती जीविका स्वयं सहायता समूह
पता	:	मुधसरैया, मांझा, गोपालगंज

- ✦ गोपलगंज जिले के मांझा प्रखंड की सीता देवी के पति को थी शराब पीने की लत
- ✦ वह अपनी पूरी कमाई कर देता था शराब पर बरबाद
- ✦ लेकिन बिहार में शराबबंदी लागू किए जाने से शराब नहीं मिलने से उन्हें छोड़नी पड़ी शराब
- ✦ अब अपनी कमाई से घर जरूरतें पूरी करने में करता है खर्च

मधुसरैया गांव की रहने वाली सीता देवी के पति रविशंकर राम वेल्डर का काम करते थे। वह इससे होने वाली कमाई से अपने घर का पालन–पोषण करता था। इसी बीच रविशंकर को शराब पीने की आदत हो गई और इससे उसके घर की स्थिति बिगड़ने लगी। अब वह रोज होने वाली कमाई के पैसे से शराब पी जाता और नशे ही हालत में खाली हाथ घर जाता। घर पर मौजूद पत्नी और बच्चों के कुछ बोलने पर वह उनसे मारपीट भी करने लगा। सीता देवी बताती है, 'उन्हें घर की जरूरतों से कोई मतलब नहीं रहा। वह अपनी पूरी कमाई शराब पर उड़ाने लगा। कुछ कहने पर उल्टे वह मारपीट और गाली–गलौच करता था।'

सीता देवी कहती है कि पति की कमाई के पैसे पूरी तरह से शराब पर बह जाता। ऐसे में घर की माली हालत खराब होने लगी। साथ ही बच्चों की भी पढ़ाई बीच में ही छूट गई। एक बेटे ने मैट्रिक एवं दूसरे बच्चे ने आठवीं में ही पढ़ाई छोड़ दी।

घर के 'बुरे दिन' शुरू हो गए थे। तभी बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्य में शराब पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया। गांव से लेकर शहर तक शराब की बिक्री बंद हो गई। अब शराब बेचने वाले और पीने वाले दोनों पर पुलिस की सख्त नजर थी। रविशंकर राम ने भी शराब छोड़ने का फैसला कर लिया। इसके बाद सीता देवी को अपने घर के लिए 'अच्छे दिन आने' की उम्मीद दिखी।

सीता देवी कहती है कि उसका पति अब अपनी कमाई का पूरा पैसा घर पर देता है। इस महीने उसके पति ने कमा कर 10,000 रुपये घर को दिए हैं। इससे घर की कई जरूरतें पूरी हुई है। उन्हें उम्मीद है कि पति के शराब छोड़ देने से उसके घर की माली हालत सुधरेगी।

6. जीविका की महिलाओं ने दिखाई संगठन की एकता

गया जिले के खिजरसराय प्रखंड स्थित सिमरौका गांव की महिलाओं ने शराबबंदी का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया है। जीविका के गौरी स्वयं सहायता समूह और संगम महिला जीविका ग्राम संगठन से जुड़ी महिलाओं की एकता, कर्मठता, शराब के खिलाफ मुखर आवाज और संगठित प्रयास ने सिमरौका गांव को पूरी तरह शराबमुक्त कर दिया है। अब इस गांव में शराब की कोई दुकानें नहीं हैं। इनके पति और बेटों ने शराब पीने की लत छोड़ दी है। स्कूल या मंदिर के लिए जातीं गांव की बहू–बेटियों के खिलाफ छेड़खानी की घटनाएं बंद हो गई हैं। इतना ही नहीं, शराब पीकर सड़क किनारे पड़े–पड़े महिलाओं पर फब्तियां कसने या गाली–गलौज करने वाले लोग अब घर के कामों, तरक्की–उन्नति में महिलाओं का हाथ बंटा रहे हैं। इतना ही नहीं इस ग्राम संगठन से प्रेरित होकर अब आसपास के गांवों में भी जीविका समूह से जुड़ी महिलाओं ने शराब के खिलाफ आवाज तेज कर दी है।

शराब पीकर घर आते ही पुरूष पैसों के लिए अपनी मां, पत्नी और बेटियों से मार–पीट करने लगे। घर में जो कुछ भी रुपये बचा कर रखे जाते वे इसे छीन लेते। इससे समूह से जुड़ी महिलाओं के लिए साप्ताहिक बचत करना भी मुश्किल हो गया। वे अपनी सीमित आय के बावजूद जरूरी खर्चों की राशि में कटौती कर बड़ी मुश्किल से कुछ पैसे बचा कर रखती थीं ताकि समूह में सप्ताहिक बचत कर सके। लेकिन उनके पति उनसे ये राशि भी छीन लेते। घर में ही नशाखोर पति या बेटे के इस आतंक ने महिलाओं को पूरी तरह पीड़ित कर दिया, जबकि पुलिस प्रशासन अब तक मुकदर्शक बनी हुई थी। यहां तक कि शराब पीकर सिर फोड़ने का एक मामला जब पुलिस थाने तक पहुंचा तो जवाब मिला कि गांव जीविका की महिलाएं इस मामले में क्या कर रही है? यानी अब प्रशासन भी शराब माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई के पूर्व जीविका समूहों से जुड़ी महिलाओं से विशेष सहयोग की उम्मीद कर रहा है। क्योंकि इस सामाजिक बुराई को खत्म करने के लिए केवल प्रशासन नहीं बल्कि समाज की महिलाओं को भी आगे आना होगा। इसके बाद गांव की महिलाओं ने पुलिस थाने में जाकर इसकी शिकायत दर्ज कराई और शराब दुकान बंद करने का निवेदन किया। संगम ग्राम संगठन की महिलाओं के संगठनात्मक प्रयास और पुलिस प्रशासन के सहयोग से गांव में शराबबंदी करने में कामयाबी मिली।

नाम : रीता देवी
समूह : गौरी जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : सिमरौका, खिजरसराय, गया

- खिजरसराय के सिमरौका गांव में ही पहली बार महिलाओं ने शराबखोरों से लिया था लोहा।
- संगम जीविका ग्राम संगठन की महिलाओं ने बिना पुलिस की मदद के ही गांव की शराब भट्ठियों पर बोल दिया था धावा ।
- रीता देवी के नेतृत्व में महिलाओं को शराबखोरों के खिलाफ लड़नी पड़ी थी लंबी लड़ाई।
- सिमरौका गांव में सफलता के बाद पूरे बिहार में शराब के खिलाफ आवाज हुई तेज।
-

7. शराबी पति को हटाकर थामी दुकान की कमान

बसंतपुर प्रखड में हृदयनगर पंचायत की पूजा देवी किराने की दुकान चलाने में व्यस्त हैं। वह न केवल एक सफल गृहणी के साथ –साथ कारोबारी भी हैं बल्कि उसने समाज का शराबमुक्त करने में अहम भूमिका निभाई है। पूजा के हृदयनगर गांव में ज्यादातर पुरुष आदतन शराबी थे। यहां तक कि उनके पति भी किराने की दुकान से होने वाली कमाई शराब पर उड़ा देते थे। दुकान पर शराबियों का जमावड़ा लगा रहता। इससे समाज की बहु–बेटियां खरीदारी के लिए दुकान तक नहीं आ पातीं। दुकान से कमाई न होने पर घर में पैसे किल्लत बढ़ने लगी। खेत से आमदनी भी घट रही थी। पूजा देवी ने मोर्चा संभाला और खुद ही दुकान पर बैठ कर बिक्री का हिसाब–किताब रखने लगी। धीरे–धीरे उसने पूरी दुकान की जिम्मेदारी संभाल ली। इससे कमाई का पूरा पैसा अब दुकान या घर के कामों में खर्च होने लगा।

इधर, उसके पति अभी भी शराब के आदी थे। पहले अपने घर को दुरुस्त करने के बाद पूजा ने समाज को शराबियों से दूर करने का मोर्चा संभाला। पूजा ने सबसे पहले समूह की बैठक में इस मुद्दे को उठाते हुए अन्य महिलाओं को इनके खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद फिर ग्राम संगठन में भी महिलाओं को उत्प्रेरित करते हुए पूरे गांव में शराबखोरों के खिलाफ मुहिम शुरू कर दी।

एक दिन पूरे गांव की महिलाओं ने घूम–घूम पर शराबियों को खदेड़ा और चेतावनी दी कि आगे कोई शराब पीते दिख जाएं तो महिलाएं झाडू से उसकी खबर लेंगी। इसका असर भी दिखा। पुरुष शराब तो पीते, लेकिन चोरी–छूपे। लेकिन बिहार सरकार द्वारा इस पर प्रतिबंध लगा दिए जाने के बाद गांव या बाजार में शराब मिलना बंद हो गया। इससे उन्हें अब शराब छोड़ना पड़ा।

नाम : पूजा देवी

समूह : कुबेर जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : हृदयनगर पंचायत, बसंतपुर, सुपौल

- ✦ शराबी पति से तंग आकर पूजा ने थामी किराने दुकान की कमान।
- ✦ पहले दुकान की कमाई शराब में उड़ा देता था उसका पति।
- ✦ घर को दुरुस्त करने के बाद समाज में शराबखोरों के खिलाफ महिलाओं को किया गोलबंद और फिर चलाया शराबमुक्त अभियान।
- ✦ पूजा के नेतृत्व में गांव की अन्य महिलाएं इस मुहिम में हुईं शामिल।

8. ग्राम संगठन को बनाया ताकतवर

भीमपुर के मुख्य चौराहे पर सब्जी की दुकान लगाने वाली लाखों देवी वर्ष 2010 में शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थीं। आज वह शक्तिमान ग्राम संगठन की अध्यक्ष भी हैं। भीमपुर के मुख्य बाजार पर सब्जी की दुकान लगाकर परिवार चलाने वाली लाखो देवी कहती हैं कि उसने अपने गांव की ज्यादातर पुरुष शराब के नशे में धुत रहते। किसी काम धंधे उनका कोई वास्ता नहीं था। वे जो कुछ भी कमाते, शराब पर खर्च कर देते। इससे घर में खाने के लाले पड़ने लगे। लाखो देवी बताती हैं कि इस स्थिति से निपटने के लिए महिलाओं ने स्वयं कोई काम या मजदूरी करने का फैसला किया। लेकिन जब वे कुछ कमा कर घर लातीं तो उसके पति उससे रुपये छीन कर शराब पी जाता। यह स्थिति बढ़ने लगी। लाखो देवी ने बतौर ग्राम संगठन अध्यक्ष इस मामले पर आगे आने का फैसला किया। वह बताती हैं कि संगठन की अन्य महिलाओं को एकत्रित कर उसने शराब पीने वालों एवं बेचने वालों पर धावा बोल दिया। महिलाओं ने गांव में रैली निकालकर पहले शराब न पीने के लिए प्रेरित किया ताकि घर में पत्नी–बच्चों को अच्छा खाना नसीब हो सके। लेकिन जब बात नहीं बनी तो महिलाओं ने शराब के ठेके को ही उजाड़ना शुरू कर दिया। इस दौरान पुलिस प्रशासन का भी सहयोग मिला। आखिरकार भीमपुर गांव को शराबमुक्त कराया जा सका।

नाम : लाखो देवी
समूह : देव जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : भीमपुर पंचायत, छातापुर, सुपौल

- भीमपुर गांव के ज्यादातर लोग रहते थे शराब में धुत्त।
- शक्तिमान जीविका ग्राम संगठन की अध्यक्ष लाखो देवी ने गांव को शराबमुक्त करने का उठाया बीड़ा।
- ग्राम संगठन की महिलाओं के सामूहिक प्रयास से गांव को कराया गया शराबमुक्त।

9. शराब की भट्ठियां तोड़ी और शराबियों को खदेड़ा

गेपालगंज जिले में कुचायकोट प्रखंड के सिरिसिया गांव में शराब पीने–पिलाने का काम जोरों पर था। यहां कई जगह शराब के ठेके चलते और गांव के नवयुवक दिन रात शराब पी कर मतवाले घूमते। आए दिन गांव की बहु–बेटियों पर फब्तियां कसने या आपस में मारपीट करने की घटना भी आम हो गई। अब हालात 'पानी सिर के उपर से बहने' जैसा हो गया। गांव की महिलाओं ने एकत्रित होकर इस समस्या से निपटने के बारे में विचार किया। नारी जीविका महिला ग्राम संगठन की अध्यक्ष बिदान्ती देवी ने अपने गांव को पूर्णतः शराबमुक्त करने का बीड़ा उठाया।

दरअसल 21 जनवरी को जब माननीय मुख्यमंत्रीजी ने टेली कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये बिहार के समस्त जिले की महिलाओं को संबोधित करते हुए शराबबंदी के फैसले को प्रभावी तरीके से क्रियान्वित करने की प्रतिबद्धता दिखाई तो इससे महिलाओं को बल मिला। बिदान्ती देवी के नेतृत्व में नारी ग्राम संगठन की महिलाओं ने 4 शराब भट्ठियों को तोड़ डाला। महिलाएं हाथ में झाड़ू लेकर शराब के ठेके पर पहुंच जाती और वहां शराब पीने वालों को खदेड़ कर भगा देतीं। शराबबंदी के लिए इन महिलाओं की बहादुरी को देख इस मुहिम से और महिलाएं जुड़ती चली गईं। बिदान्ती देवी ने ग्राम संगठन की ओर से 3–4 जागरूकता रैली निकाली और लोगों को शराब न पीने के लिए प्रेरित किया। महिलाओं के इन प्रयासों की ही असर है कि आज कोई भी व्यक्ति शराब पीकर गांव प्रवेश नहीं कर सकता है।

नाम : बिदान्ती देवी
समूह : कमल जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : सिरिसिया , कुचायकोट, गोपालगंज

- गोपालगंज जिले का सिरिसिया गांव था शराबखोरों से ग्रसित।
- नारी ग्राम संगठन की अध्यक्ष बिदान्ती देवी ने गांव को शराबमुक्त करने का उठाया बीड़ा ।
- महिलाओं के समूह ने गांव में चल रही शराब की 4 भट्ठियों को तोड़ डाला ।
- इसके अलावा हाथ में झाड़ू लेकर शराब ठेके पर पहुंच कर शराब पीने वाले लोगों ।

10. शराब ने तबाह कर दिया घर–परिवार

"मैं पूनम सिंह गोपालगंज जिले के सदर ब्लॉक अंतर्गत दिव्या ग्राम संगठन में सीएम के पद पर कार्य करती हूं। आठवीं में पढ़ने के दौरान की मेरी शादी करा दी गई। मेरे ससुराल में ज्यादातर पुरुष सदस्य शराब पीते थे। वे जमीन बेचकर भी शराब पी जाने को आतूर थे। एक दिन अचानक शराब पीकर मेरे ससूर ने मेरी सास को पीटना शुरू कर दिया और अंत में उसके शरीर पर तेल छिड़क कर आग लगा दी और उसे मौत के घाट उतार दिया। यह घटना देख मेरी रुह कांप उठी। मैं उन लोगों से बेहद डरने लगी। मेरे लिए अपने शराबी पति, ससूर और देवर के साथ अकेले घर पर रहना किसी डरावने सपने से कम नहीं था। इसी दौरान एक दिन मेरे ससूर की तबियत की खराब हो गई। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया तो पता चला कि उसकी किडनी खराब हो गई है। करीब 15 दिन तक इलाज के बाद उनकी मृत्यु हो गई। इन दो अहम घटना के बाद मैं अपने पति को शराब न पीने के लिए मनाती। लेकिन इससे उन्हें कोई असर नहीं पड़ा। अब तो वे शराब के लिए गहना भी बेचने लगे और मना करने पर मुझसे और मेरे बच्चों के साथ मारपीट भी करते। अत्यधिक शराब पीने से उनकी भी तबियत खराब रहने लगी। इलाज के लिए हमारे पास पैसा भी नहीं था। उनकी पागलों जैसी हालत हो गई। और आखिर एक दिन उसने खुद को गोली मार कर आत्महत्या कर ली। इसके बाद मेरी जिंदगी बद से बदतर हो गई।

शराब ने मेरे परिवार के तीन सदस्यों की दर्दनाक मौत हुई। घर–मकान गिरवी पर रखा था। मेरे पास दो छोटे–छोटे बच्चे थे और मेरी मदद करने वाला कोई नहीं। न तो मायके में भाई–भौजाई को मेरी स्थिति पर दया आई और न ही पड़ोस में रह रहे देवर को। इसके बाद मैंने स्थिति से खुद की लड़ने का फैसला किया। तभी पड़ोस की महिलाएं जीविका से जुड़ रही थीं और तब मैं भी जीविका समूह से जुड़ गई। साथ ही जीविका में सीएम के रूप में चयनित होकर अपने लिए काम का एक अवसर मिला। अब मैं जीविका के सीएम के रूप में काम कर अपने बच्चों का पालन–पोषण कर रही हूं।"

नाम : पूनम सिंह

समूह : जानकी जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : सदर ब्लॉक गोपालगंज

- ✦ शराब की वजह से सास, ससूर और पति की हुई दर्दनाक मौत।
- ✦ शराबी पति ने पूनम सिंह की सास को जला कर मार डाला था।
- ✦ फिर किडनी खराब होने से ससूर की भी हो गई मौत।
- ✦ शराब के नशे में पागल पति ने भी एक दिन खुद को गोली मारकर कर ली आत्महत्या ।
- ✦ पूनम अब जीविका में सीएम के पद पर काम कर करती है अपना गुजारा।

11. बिक्री बंद होने से मजबूरन छोड़नी पड़ी शराब

नाम : इनरवती देवी
समूह : राधा जीविका स्वयं सहायता सहायता समूह
पता : बेलखंड , बरौली, गोपालगंज

- गोपलगंज जिले के बेलखंड गांव की इनरवती देवी की बेटा शरात की लत ने पूरे परिवार को तबाह कर दिया था ।
- लाख समझाने–बुझाने के बाद भी वह शराब छोड़ने को तैयार नहीं थे।
- बिहार में शराबबंदी की घोषणा के बाद नहीं मिलने लगी शराब।
- शराब नहीं मिलने से उसके बेटे को मजबूरन छोड़नी पड़ी शराब।

गोपालगंज जिले के बरौली प्रखंड के बेलखंड गांव की इनरमती देवी, जो राधा जीविका स्वयं सहायता समूह और हिमालय जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य है, अपने बेटे की शराब पीने की लत से परेशान थी। इनरवती देवी का बेटा भूटेली राम प्रत्येक दिन शाम को शराब पी कर नशे की हालत में जहां–तहां बेहोश पड़ा रहता। उसे न तो अपने घर–परिवार और बच्चों की परवाह थी और न ही उसके जिम्मे कोई काम था। केवल शराब पीना और नशे की हालत में कहीं पड़ा रहना मानो उसकी दिनचर्या हो गई थी। इससे इनरवती देवी का घर घोर आर्थिक तंगी से गुजरने लगा। इनरवती देवी जब दूसरों के घरों या खेतों पर काम करती तब उसके घर का चूल्हा जल पाता। भूटेली राम कोई काम नहीं करता, लेकिन उसे शराब पीने के लिए रोज पैसे की जरूरत होती। ऐसे में वह घर का सामान ही बेच देने को आतूर थे। इसी क्रम में उसने घर के कुछ सामान समेत एक साइकिल भी बेच दी और उससे मिले पैसे से शराब पी गया।

इनरवती देवी घर की हालत देख बेहद परेशान थी। उसने अपने घर की समस्या को समूह की बैठक में उठाया। सभी महिलाओं ने एकत्रित होकर उसके बेटे को समझाने का प्रयास किया। लेकिन इसका उस पर कोई असर नहीं हुआ। तभी बिहार सरकार ने राज्य में शराब की बिक्री पर रोक लगा दी। इससे आस–पास के गांव एवं बाजार में शराब की बिक्री बंद हो गई। भूटेली राम ने लाख कोशिश की लेकिन उसे शराब का एक कतरा भी नहीं मिला। मजबूरन सप्ताह दो सप्ताह उसे बिना नशा किए रहना पड़ा। इस बीच उसे घर के लोगों का साथ मिला और आखिरकार उसने शराब छोड़ घर के कामों में हाथ बंटाने का फैसला किया।

आज भूटेली राम अपनी मां और पत्नी के साथ खेत पर काम करता है और इससे मिलने वाले दो–चार पैसों से न केवल उनका घर चलता है बल्कि हर दिन कुछ न कुछ रुपये की बचत भी होने लगी है। इसके बाद इनरवती देवी के घर की स्थिति अब धीरे–धीरे सुधरने लगी है।

12. शराबबंदी ने बदली किस्मत

नाम : सीता देवी
समूह : मां सरस्वती जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : मुधसरैया, मांझा, गोपालगंज

- गोपलगंज जिले के मांझा प्रखंड की सीता देवी के पति को थी शराब पीने की लत।
- वह अपनी पूरी कमाई कर देता था शराब पर बरबाद।
- लेकिन बिहार में शराबबंदी लागू किए जाने से शराब नहीं मिलने से उन्हें छोड़नी पड़ी शराब।
- अब अपनी कमाई से घर जरूरतें पूरी करने में करता है खर्च ।

मधुसरैया गांव की रहने वाली सीता देवी के पति रविशंकर राम वेल्डर का काम करते थे। वह इससे होने वाली कमाई से अपने घर का पालन–पोषण करता था। इसी बीच रविशंकर को शराब पीने की आदत हो गई और इससे उसके घर की स्थिति बदल गई। अब वह रोज होने वाली कमाई के पैसे से शराब पी जाता और नशे ही हालत में खाली हाथ घर जाता। घर पर मौजूद पत्नी और बच्चों के कुछ बोलने पर वह उनसे मारपीट भी करने लगा। सीता देवी बताती है, 'उन्हें घर की जरूरतों से कोई मतलब नहीं रहा। वह अपनी पूरी कमाई शराब पर उड़ाने लगा। कुछ कहने पर उल्टे वह मारपीट और गाली–गलौच करता था।'

सीता देवी कहती है कि पति की कमाई के पैसे पूरी तरह से शराब पर बह जाता। ऐसे में घर की माली हालत खराब होने लगी। साथ ही बच्चों की भी पढ़ाई बीच में ही छूट गई। एक बेटे ने मैट्रिक एवं दूसरे बच्चे ने आठवीं में ही पढ़ाई छोड़ दी।

घर के 'बुरे दिन' शुरू हो गए थे। तभी बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्य में शराब पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया। गांव से लेकर शहर तक शराब की बिक्री बंद हो गई। अब शराब बेचने वाले और पीने वाले दोनों पर पुलिस की सख्त नजर थी। रविशंकर राम ने भी शराब छोड़ने का फैसला कर लिया। इसके बाद सीता देवी को अपने घर के लिए 'अच्छे दिन आने' की उम्मीद दिखी।

सीता देवी कहती है कि उसका पति अब अपनी कमाई का पूरा पैसा घर पर देता है। इस महीने उसके पति ने कमा कर 10,000 रुपये घर को दिए हैं। इससे घर की कई जरूरतें पूरी हुई है। उन्हें उम्मीद है कि पति के शराब छोड़ देने से उसके घर की माली हालत सुधरेगी।

13. शराबबंदी ने सुधार दी घर की माली हालत

गोपालगंज जिले में कुचायकोट प्रखंड के सिरिसिया पंचायत की शारदा देवी पूजा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं और वह सीआरपी के रूप में भी अपनी सेवा देती है।

शारदा देवी के एकलौते बेटे को शराब की लत लग गई और वह खूब शराब पीने लगा। इस वजह से आए दिन उसका किसी न किसी के साथ लड़ाई–झगड़ा होता रहता। घर के खर्चों में मां को सहारा देने की जगह वह अपनी कमाई का सारा हिस्सा पीने पर ही खर्च कर देता। घर की हालत इतनी खराब हो गई कि कई दिनों तक तो घर का चूल्हा तक नहीं जल पाता। इससे घर के अधिकांश सदस्यों का स्वास्थ्य खराब रहने लगा। घर की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय होने लगी।

घर की माली हालत देख शारदा देवी ने अपने समूह की महिलाओं को इकट्ठाकर उन्हें समझाने का प्रयास किया। लेकिन इससे उसके बेटे पर कोई असर नहीं पड़ा। आखिरकार थक हार कर उसने हालात से समझौता कर लिया। इसी बीच शारदा के लिए तब उम्मीद की किरण दिखाई दी जब राज्य सरकार ने बिहार में शराबबंदी की घोषणा कर दी। इस सरकारी फरमान से सबसे ज्यादा फायदा शारदा देवी के घर को हुआ। शराबबंदी से आसपास की गांव में शराब की दुकानें बंद हो गई। पीने वालों पर पुलिस की निगरानी बढ़ गई। ऐसे हालात में शारदा देवी के बेटे के लिए शराब पीना मुश्किल हो गया। शराब न मिलने की वजह से वह चाह कर भी पी नहीं पाता।

आखिरकार एक दिन उसने दिल से शराब न पीने का मन बना लिया। इसके बाद तो शारदा देवी के घर की कहानी ही बदल गई। अब उसके घर में कोई शराब पी कर नहीं आता और न ही किसी के साथ लड़ाई–झगड़े की नौबत है।

नाम : शारदा देवी
समूह : पूजा जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : सिरिसिया, कुचायकोट, गोपालगंज,

- शारदा देवी का बेटा शराब की लत से था ग्रसित।
- लाख समझाने के बाद भी वह नहीं छोड़ रहा था शराब।
- लेकिन बिहार में शराबबंदी लागू किए जाने से उसे छोड़नी पड़ी शराब।

14. अत्याचार सहन न करने की कसम खाई

'' मेरे पति और ससुर जी बहुत शराब पीते थे और घर आकर सबके साथ मार–पीट करते थे। उन्हें शराब पीने से मना करती थी तो मुझे और मेरे बच्चों को भी पीटते थे। पड़ोस के लोगों से भी आए दिन झगड़ा होता रहता था। मैंने ममता जीविका महिला ग्राम संगठन की दीदियों को बताया कि सबसे बड़ी समस्या गाँव में दारू का भट्ठा है, जहाँ से हमारे पति शाम को शराब पी कर आते है और घर पर मार–पीट करते हैं। सभी दीदी ने ग्राम संगठन में मिलकर निर्णय लिया कि शराब बंद करवाया जाय। इसके बाद सभी दीदी ने गाँव में शराब बंद करने के विषय में सब को समझाया, लेकिन भट्ठी के लोगों ने नहीं माना। शाम को जब मेरे पति फिर से पीकर आए तो बोलने लगे कि शराब बंद करवाओगी।

इसके बाद मुझे मारने लगे, उन्होंने अपना भी माथा फोड़ लिया और घर का खाना फेंक दिया। मुझे बहुत गुस्सा आया क्योंकि स्थिति अब बर्दाश्त के बाहर हो गई थी। ग्राम संगठन की मदद से सभी दीदी के मिलकर शराब की भट्ठी को तोड़–फोड़ दिए तथा शराब बनाने की बर्तनों को साथ उठा लाए, इससे शराब बनाने वालों के साथ मार–पीट शुरू हो गई। इस कार्य में कुछ दीदियों के पति द्वारा भी सहयोग किया गया। हम लोगों द्वारा बार–बार समझाने पर भी जब ये लोग नहीं माने तो जिला से सर लोगों को भी बुलाया गया । इस शराब बंदी की घटना के बाद जब मैं घर लौटी तो पति और ससुर जी मुझे घर से जाने के लिए कहने लगे, फिर से मार पीट शुरू हो गयी लेकिन मेरे सास ने मेरा साथ दिया।

अब बिहार में पूर्ण शराब–बंदी के बाद ये लोग शराब नहीं पीते हैं। अब मुझे मारते भी नहीं हैं। अपने बच्चों को भी प्यार करते हैं। इसके अतिरिक्त गाँव के आस–पास के लोग भी महुआ शराब पी कर गाली गलौज करते थे। शराब बंदी के बाद से इस तरह की घटना बंद है। टॉल फ्री नम्बर पर शराब से संबंधित शिकायत भी की गई, जिसपर कार्रवाई के बाद अब स्थिति ठीक है।

नाम : सुलेखा देवी

समूह : सुमन जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : बेलगाछी, रानीगंज, अररिया

- सुलेखा देवी के पति और ससूर शराब पीकर करते थे मार–पीट
- इससे परेशान सुलेखा देवी ने जीविका समूह की दीदियों के साथ मिलकर शराब भट्ठियों को किया नष्ट
- महिलाओं के दबाव के आगे झुकते हुए गांव में शराब बेचना हुआ मुश्किल

15. एक नई शुरूआत

नाम : पुष्पा देवी
समूह : मुस्कान जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : पलासमनी गांव, बहादुरगंज, किशनगंज

✦ पुष्पा देवी के पति आइस क्रिम बेच कर करते थे परिवार का भरण–पोषण।

✦ लेकिन शराब की लत लगते ही उसने कमाई का सारा पैसा नशे में उड़ाया ।

✦ पुष्पा देवी ने समूह की महिलाओं के साथ मिलकर किया समझाने का प्रयास।

✦ राज्य में शराब की बिक्री बंद होने के बाद उसे मजबूरन छोड़नी पड़ी शराब।

किशनगंज जिले के बहादुरगंज प्रखण्ड स्थित पलासमनी ग्राम की पुष्पा देवी जो कि मुस्कान जीविका स्वयं सहायता समूह एवं क्रांति जीविका महिला ग्राम संगठन से जुड़ी हुई हैं। इनके पति आइसक्रीम (बर्फ) एवं शाम का नास्ता (झाल–मूढ़ी) बेच कर परिवार का गुजारा करता था। लेकिन गलत संगति के कारण उसे शराब पीने की बुरी लत लग गई थी। नशे की लत के कारण वे अपनी कमाई का गाढ़ा हिस्सा शराब पर व्यय करते थे। जब शराब पर अधिक व्यय के कारण कारण पुष्पा दीदी को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ने लगा तो उन्होंने बीड़ी बनाकर कुछ पैसे अर्जित करना चाहा। लेकिन पति द्वारा शराब के लिए पुष्पा दीदी की मेहनत की कमाई का पैसा छीन लिया जाता था और मना करने पर घर में झगड़ा शुरू हो जाता। पुष्पा दीदी को मार–पीट भी सहना पड़ता था। गृह कलह इतना बढ़ गया था कि पुष्पा को कई रात बच्चों के साथ घर से बाहर गुजारनी पड़ी थी। गृह कलह का विभत्स रूप तब हुआ जब पुष्पा दीदी के पति द्वारा घर के बर्तन यथा थाली वगैरह शराब के लिए बेचा जाने लगा। झगड़ा कलह इतना बढ़ गया कि शराब के लिए पुष्पा दीदी के पति द्वारा घर के बच्चों को मारने की धमकी देकर दीदी से पैसे ऐंठने लगे थे । दीदी के पास समूह में पैसा जमा करने तक का पैसा नहीं होता था ।

अब राज्य में पूर्णरूपेण शराब बंदी लागू होने के पश्चात अब पुष्पा दीदी के पति शराब नहीं पीते,

घर–गृहस्थी फिर से पटरी पर लौटने लगी है । पुष्पा दीदी के पति की कमाई का सभी पैसा घर को चलाने में व्यय होता है, जिससे घर में खुशहाली लौट आयी है। पुष्पा दीदी का कहना है कि 'अब फिर से बिहार में कभी शराब शुरू न हो ताकि उनका सुकुन बरकरार रहे।'

16. शराब का दंश

उर्मिला देवी के पति मिठाई की दुकान चलाते थे। लेकिन उन्हें शराब की लत थी, जिससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा और हार्ट अटैक से उनका देहांत हो गया। अब उसके घर में स्वयं उर्मिला देवी और उनका एकमात्र लड़का बचा। पति के मृत्यु के बाद घर गृहस्थी चलाने में अकेली दीदी व्यस्त रहती थी। इसका असर ये हुआ की उनका लड़का गलत संगती में पड़ शराब का आदि हो गया। लाख समझाया बुझाया गया पर इसका कोई असर उस पर नहीं पड़ा। जब घर से उसे पैसा नहीं मिलता तो वह घर के सामान, चावल, गेहूं आदि बेचकर शराब पी जाता। लड़के की सुधार की आशा में दीदी ने अपने बेटे की शादी करवा दी। शराबी लड़का अपनी पत्नी और बच्चों को भी पीटता था। घर में हमेशा कोहराम मचा रहता।

बाद में वो उधार लेकर शराब पीना शुरू कर दिया, जिसकी वजह से उधार देने वाले उनके जमीन कब्ज़ा करने लगे। जो कुछ भी जमीन थी वह भी ख़त्म हो गया। घर में दाने–दाने के लिए लोग मोहताज हो गए। शराब की लत की वजह से उसकी किडनी ख़राब हो गयी और फिर एक दिन वह दुनिया छोड़ कर चला गया। परिवार में माँ पत्नी दो बेटी है, जिसमें एक गूंगी है और एक बेटा है। उर्मिला दीदी का कहना है कि दोबारा शराब राज्य में लागु न हो क्योंकि आज शराब बंदी से गांव में शांति तो है।

नाम : उर्मिला देवी

समूह : मधु जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : पुरंदाहा पंचायत, कोचाधामन, किशनगंज

- उर्मिला देवी के पति मिठाई की दुकान चला कर कर करते थे परिवार का गुजारा
- लेकिन शराब पीने की वजह से उसकी असमय मृत्यु हो गई, जिससे पूरे परिवार का भार उर्मिला देवी के कंधे पर आ गया
- उर्मिला देवी का एकलौता बेटा कोई काम कर मां का हाथ बंटाने की जगह खुद बन गया शराबी
- आखिर एक दिन उसकी किडनी खराब हो गई और दुनिया छोड़ कर चला गया

17. जीने की आजादी

तारा दीदी को उस वक्त बहुत ही ख़राब लगता जब शराबी शराब पीकर गाली मोहल्ले में खुले आम गाली गलोज करते और सड़क पर चलती महिलाओं के छेड़ते। तारा देवी कहती है, ''मेरा घर भी शराब के इस बुरी लत से दूर नहीं था। मेरे पति शराब पीते–पीते मर गये| ठीक उसी राह पर मेरा बेटा भी चल पड़ा। वह नशे की हालत में अपनी पत्नी और बेटे सभी को प्रताड़ित करता। आखिर तंग आकार उन्होंने शराब बंदी पर अपने जीविका समूह के महिलाओं ग्राम संगठन के महिलाओं को एकजुट कर पुरंदाहा के शराब बनाने के भट्ठी के मालिक से इसे बंद कराने को कहा, लेकिन जब उसने नहीं माना तो गांव के करीब पांच–छह सौ महिलाओं ने एक साथ एकजुट होकर शराब के भट्ठी को तोड़ कर गांव में शराबबंदी का अलख जगाया। आज तक तारा देवी पर इस संदर्भ में झूठा केस चल रहा है। दीदी कहती है, अब जो हो जाय लेकिन गांव में शराब नहीं बिकने देंगे।

नामा : तारा देवी
समूह : बजरंगबली जीविका स्वंय सहायता समूह
पता : पुरंदाहा, कोचाधामन, किशनगंज

- ✦ तारा देवी का पति शराब पीते–पीते मौत के द्वार पर पहुंच गए
- ✦ इस घटना के बाद तारा देवी ने गांव में शराब न बिकने देने की कसम खाई
- ✦ करीब सात–आठ सौ महिलाओं ने मिलकर गांव में शराब की भट्ठियों को तोड़ डाला और शराबियों को खदोड़ा

18. महिलाओं की एकता के आगे सहम गए शराबी

नाम : सियामनी देवी
समूह : ममता जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : प्यारेचक , सदर ब्लॉक अरवल

- ✦ सियामनी देवी की शिकायत पर ग्राम संगठन की महिलाओं ने शराबखोरों पर लगाई लगाम ।
- ✦ शराब के ठेके पर बोला धावा और शराबियों को खदेड़ा।
- ✦ गांव में शराब पीकर आने वालों पर भी महिलाएं रखती थीं कड़ी नजर ।
- ✦ तमाम दिक्कत देख नशाखोरों ने कर ली शराब से तौबा ।

अरवल जिले की सियामनी देवी के घर में 5 बच्चों समेत कुल 7 सदस्य था। लेकिन कमाने वाली वह खुद अकेली थी। उसके पति तो शराब पी कर पड़े रहते। न काम से वास्ता और न परिवार से। उल्टे दिन रात पत्नी से झगड़ा और मारपीट करते। सियामनी देवी को लगा कि सारा दोष शराब का है। जब तक शराब नहीं छुटेगी तब तक उसके घर का यही हाल रहेगा।

सियामनी दीदी ने जीविका के ग्राम में संगठन में अपनी बात रखी और कहा कि जब तक शराब बंद नहीं करवाएंगे तब तक हमारे घर की तंगहाली दूर नहीं होगी। सभी महिलाएं उसकी बात से सहमत हुईं। सबने मिलकर गांव में बिक रही शराब को नष्ट किया और फिर चेतावनी दी कि आगे यदि कोई शराब बेचेगा तो उसके खिलाफ पूरे गांव की महिलाएं एकजुट हो जाएंगी। महिलाओं की एकता देख शराबी सहम गए। उन्होंने शराब पीना और पिलाना छोड़ दिया। हालांकि छिटपुट तरीके से यदि कोई शराब पीकर गांव प्रवेश करता तो महिलाएं एकत्रित होकर उसे भी भला बुरा कहती। परिणास्वरूप गांव में नशाखोरों ने इससे तौबा करने में ही भलाई समझी।

19. और गांव में लौटी खुशहाली

सीतामढ़ी जिले के मेजर गंज प्रखंड में कोआरी मदन गांव की रहने वाली कृष्ण जीविका स्वयं सहायता समूह की कोषाध्यक्ष, पनमा देवी अपने गांव के रहन सहन एवं माहौल से काफी दुखी एवं चिंतित थी क्योंकि इस गांव के अधिकांश पुरुष एवं नाबालिग लड़के भी हर समय चाहे सुबह हो या शाम, दोपहर हो या रात शराब के नशे में धुत्त रहते थे। गांव में झगड़ा झंझट या गाली–गलौज होते रहना आम बात थी। गांव के ही मछली बाज़ार में शराब की लगभग 20 दुकानें थीं, जहाँ हर वक्त शराब की बिक्री होती। इस कारण समूह की अन्य दीदियों के पति एवं बेटों में इसकी लत बढ़ती जा रही थी। इस परेशानी से समूह की दीदियों के घर में आमदनी का पैसा नहीं के बराबर आ रहा था। जिससे उनको समूह में बचत करने और ऋण लौटाने में दिक्कत हो रही थी। गांव में शराबियों और इसके कारोबारियों के खिलाफ पनमा देवी चाह करके भी कुछ नहीं कर पा रही थी क्यूंकि सारा गांव ही इसके चपेट में था।

शराब बंद होने की घोषणा हो गई। परन्तु गांव में चोरी छिपे शराब की बिक्री हो रही थी। तब पनमा देवी ने गांव में घूम–घूमकर चोरी से शराब बेचने वालों को खोजने लगी और धमकाने लगी– ''अब न सुधरबा त सरकार के फोन कर देव।'' इसी के डर से सभी शराब कारोबारी जो चोरी से शराब बेचते थे, शराब बेचना बंद कर दिया। पनमा देवी के इस प्रयास, हिम्मत और अनवरत निगरानी से आज गांव में कहीं भी शराब की बिक्री नहीं होती है और गांव में खुशहाली लौट आई है।

नाम : पनमा देवी

समूह : कृष्ण जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : कोआरी मदन, मेजरगंज, सीतामढ़ी

- गांव में शराब पीने के माहौल से पनमा देवी बेहद चिंतित रहती थी।
- बिहार सरकार द्वारा शराब बंद किए जाने की घोषणा के बाद वह गांव घूम–घूमकर शराबखोरों को करने लगी सचेत ।
- इसके बावजूद जो लोक शराब बेच रहे थे उनके खिलाफ उन्होंने की शिकायत ।

20. नरक जैसे हालात से मिली मुक्ति

सीतामढ़ी जिले के बाजपट्टी प्रखंड के वनगांव बाज़ार की रहने वाली अत्यंत गरीब परिवारों में से एक 35 वर्षीय मुन्नी देवी का परिवार दयनीय स्थिति में था। उसके पति रमेश साह हलवाई का काम करते है, तीन बेटे और एक बेटी के साथ पिछले दस सालों से नरक जैसी जिंदगी जीने को मजबूर थी। इनका परिवार इनके पति के एक छोटे से नाश्ते एवं चाय की दुकान और कभी कभी गांव में या गांव के आस पास हलवाई का काम करके हुई आमदनी से किसी तरह चल पा रही थी।

मुन्नी देवी के इस नारकीय जीवन का मुख्य कारण था शराब, जिसका सेवन इनके पति पिछले 7–8 सालों से कर रहे थे। कई बार मुन्नी देवी के विरोध एवं कई बार बीमार पड़ने के कारण शराब छोड़ भी चुके थे परन्तु बीमारी ठीक हो जाने के बाद अपने गावं वालों के संगत के कारण फिर से शराब पिने लगते थे। मुन्नी देवी के घर में इनके पति प्रतिदिन मुन्नी देवी के साथ मारपीट और गाली गलौज करते थे। अपने बच्चों को भी मारा पीटा करते थे। वो सिर्फ हर समय दारू पिने में लगे रहते थे. मुन्नी देवी के परिवार से उनका हर संबंधी दूर हो गया था। यहाँ तक कि मुन्नी देवी की माँ, बाबूजी और भाई भी रमेश साह के पीने की आदत के कारण इनसे संबंध तोड़ चुके थे।

मुन्नी देवी ने जीविका के द्वारा शराब बंदी के लिए निकली गई विभिन्न रैलियों में भाग लिया और बहुत समझाने का प्रयास किया, परन्तु हमेशा गांव वालों के द्वारा मजाक ही उड़ाया गया। उसकी हर कोशिश नाकाम साबित हो रही थी। आखिर 1 अप्रैल से जब बिहार सरकार द्वारा पूर्ण शराब बंदी की घोषणा की गई और तब जाकर मुन्नी देवी के गांव में शराब की बिक्री बंद हो गई और तब से इनके पति की भी शराब पिने का काम बंद हो गया। आज मीना देवी के पति शराब नहीं मिलने के कारण शराब छोड़ चुके हैं और प्रतिदिन अधिक से अधिक काम करते हैं और सारी आमदनी मुन्नी देवी को लाकर देते हैं। लड़ाई झगडा बंद हो गया है, वो अब बच्चों पर भी पूरा ध्यान दे रहे है।

नाम : मुन्नी देवी
समूह : चांदनी जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : बनगांव उत्तरी, बाजपट्टी, सीतामढ़ी

- ✦ अपने शराबी पति से तंग मुन्नी देवी के लिए घर चलाना हो गया था मुश्किल।
- ✦ हलवाई की दुकान चलाने वाले मुन्नी देवी के पति अपनी कमाई का 80 फीसदी हिस्सा शराब पर उड़ा देते।
- ✦ लेकिन शराबबंदी के बाद अब वह अपनी पूरी कमाई अपने घर में देते हैं।
- ✦ अब घर का महौल अच्छा हो गया है।

21. समूह की दीदियों ने चेताया तो रास्ते पर आया

नाम : नीलम देवी
समूह : मां काली जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : रामपुर वैना पंचायत, सदर ब्लॉक, अरवल

- नीलम देवी के बेटे को गलत संगत की वजह से लग गई नशे की लत
- बेटे की शराबखोरी से नीलम देवी का घर तबाह होने लगा
- इसके बाद समूह की दीदियों की मदद से उसने बेटे को समझाया और शराब ठेके पर रखने लगी नजर
- अब वह शराब छोड़ अंडे की दुकान चला कर रहा परिवार की मदद

अरवल जिले में रामपुर वैना पंचायत की नीलम देवी पहले से ही घोर गरीबी से जूझ रही थी। उसे उम्मीद थी कि उसका बेटा बड़ा होकर कुछ काम–धाम कर घर की जरूरतें पूरी करने में उन्हें मदद करेगा। लेकिन उम्मीद से परे उसका बेटा कमलेश गलत संगत की वजह से शराब के चंगुल में फंस गया। वह माँ को सहयोग देने की जगह घर के लिए मुश्किलें ही खड़ी करने लगा। प्रत्येक दिन घर में कलह बढ़ने लगी। बेटे की शराब पीने की लत से वह काफी परेशान थी। नीलम देवी ने अपनी समस्या समूह की बैठक में उठाई। उसने कहा कि शराब की वजह से उसका घर तबाह हो गया है। इसके बाद समूह की दीदियों ने उसके बेटे को समझाया। साथ हीं गांव में शराब के ठेके को चेतावनी दी कि वे अगले एक से दो दिन में अपनी दुकान बंद करें, नहीं तो इसकी शिकायत पुलिस में कर दी जाएगी। समूह की दीदियों द्वारा दबाव बनाने के बाद गांव में शराब का ठेका बंद हो गया। हालांकि इसके बावजूद गांव के बाहर से वह शराब पीकर आ जाता। लेकिन 1 अप्रैल से बिहार में शराबबंद हो जाने के बाद उसके लिए कहीं से भी शराब मिलना मुश्किल हो गया। धीरे–धीरे कमलेश ने शराब पीने की लत छोड़ दी है। इस बीच नीलम देवी ने आईसीएफ की राशि से कर्ज लेकर अंडे की दुकान खोल ली, जहां उसका बेटा भी उसकी मदद कर रहा है। इससे घर में अब हर दिन कुछ न कुछ आमदनी होने लगी है। साथ ही अपने 10 कट्ठा जमीन में सब्जी की खेती करता है।

22. शराब पीकर आने वालों को नहीं मिलेगा खाना

नाम : मीना देवी
समूह : शारदा जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : सकरी पंचायत, सदर ब्लॉक अरवल

- पूरी तरह मजदूरी पर आश्रित मीना देवी के पति शराब पीकर धुत्त रहने
- इससे घर में बच्चों के खाने के भी लाले पड़ने लगे
- आंचल ग्राम संगठन की महिलाओं ने शराब भट्ठियों की शिकायत पुलिस को कर दी और इसे नष्ट करवा दिया
- शराब पीकर आने वालों को खाने न देने का ग्राम संगठन ने बनाया नियम

अरवल जिले की मीना देवी का जीवन बेहद कष्ट से गुजर रहा था। मीना देवी के पति विजय पासवान मजदूरी छोड़ नशे में धुत्त रहते थें। इस कारण परिवार व बच्चों के लिए दो जून की रोटी जुटाना भी मुश्किल हो गया। इसके अलावा विजय अमूमन हर दिन अपनी पत्नी व बच्चों के साथ मारपीट और झगड़ा करता था। मीना देवी ने इसकी शिकायत समूह और फिर ग्राम संगठन में की। ग्राम संगठन ने निर्णय लिया कि गांव में जहां देशी शराब बनायी जाती है, सर्वप्रथम उसे बंद करवाई जाएगी। इसके अलावा जिसके घर में कोई शराब पीकर आएगा, घर में उसका खाना नहीं बनाया जाएगा। यानी शराब पीने वालों को उस दिन भूखे पेट रहना पड़ेगा। ग्राम संगठन के इस निर्णय का अच्छा असर हुआ। ग्राम संगठन की महिलाओं की चौकसी बढ़ गई। शराब के ठेके पर भी कड़ी निगरानी होने लगी। दीदियों ने टॉल फ्री नंबर पर शराब भट्ठियों की सूचना पुलिस को दी। इससे पुलिस ने भट्ठियां तोड़ कर इसमें लगे लोगों पर कार्रवाई की। इसके बाद गांव में विजय पासवान समेत गांव के अन्य लोगों ने भी शराब पीने से तौबा कर ली। परिणामस्वरूप आज गांव पूरी तरह शराबमुक्त हो गया है।

23. महिलाओं के हिम्मत की जीत

नाम	:	सियामनी देवी
समूह	:	ममता जीविका स्वयं सहायता समूह
पता	:	प्यारेचक पंचायत, सदर ब्लॉक अरवल

- सियामनी देवी की शिकायत पर ग्राम संगठन की महिलाओं ने शराबखोरों पर लगाई लगाम
- शराब के ठेके पर बोला धावा और शराबियों को खदेड़ा
- गांव में शराब पीकर आने वालों पर भी महिलाएं रखती थीं कड़ी नजर
- तमाम दिक्कत देख नशाखोरों ने कर ली शराब से तौबा

अरवल जिले की सियामनी देवी के घर में 5 बच्चों समेत कुल 7 सदस्य हैं। लेकिन कमाने वाली वह खुद अकेली थीं क्योकि उसके पति तो शराब पी कर पड़े रहते। न काम से वास्ता और न हीं परिवार से। उल्टे दिन रात पत्नी से झगड़ा और मारपीट करते। सियामनी देवी को लगा कि सारा दोष शराब का है। जब तक शराब नहीं छुटेगी तब तक उसके घर का यही हाल रहेगा।

सियामनी दीदी ने जीविका के ग्राम में संगठन में अपनी बात रखी और कहा कि जब तक शराब बंद नहीं करवाएंगे तब तक हमारे घर की तंगहाली दूर नहीं होगी। सभी महिलाएं उसकी बात से सहमत हुईं। सबने मिलकर गांव में बिक रही शराब को नष्ट किया और फिर चेतावनी दी कि आगे यदि कोई शराब बेचेगा तो उसके खिलाफ पूरे गांव की महिलाएँ एकजुट हो कार्रवाई करेगी। महिलाओं की एकता देख शराबी सहम गए। उन्होंने शराब पीना और पिलाना छोड़ दिया। हालांकि छिटपुट तरीके से यदि कोई शराब पीकर गांव प्रवेश करता तो महिलाएं एकत्रित होकर उसे भी भला बुरा कहती। परिणास्वरूप गांव में अधिकांश नशाखोरों ने इससे तौबा करने में ही भलाई समझी। इसके बाद सरकार का नया कानून बनने के बाद तो शराब पीने का मतलब सीधे जेल जाना है। यही कारण है कि आज गांव में कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पीता है। सियामनी देवी बताती है कि अब उसके घर के हालात बदल गए हैं। उसके पति अब घर के बाहर जाकर मजदूरी करते हैं और इससे होने वाली कमाई परिवार पर खर्च करते हैं।

24. चलें उन्नति की राह

मेरा नाम माला देवी है। मैं भागलपुर जिले के रंगरा चौक के सधुआ चापर पंचायत के सधुआ गाँव की रहने वाली   हूँ । मैं वीणा जीविका स्वयं सहायता समूह एवं दीपक जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य हूँ। मैंअपने पति से काफी परेशान रहती थी। मेरे पति मजदूरी कर शाम को घर लेट सेआते थे और अपनी कमाई के सारे पैसे शराब में उड़ा देते थे। शराब पीने के बाद नशे में वो मेरे साथ गाली–गलौज एवं मारपीट भी करते थे। मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। मेरे जैसी स्थिति समूह से जुडी अन्य महिलाओं की भी थी।

नाम : माला देवी
समूह : वीणा जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : सधुआ, रंगर चौक, भागलपुर

- ✦ माला देवी के पति अपनी कमाई का सारा पैसा शराब में उड़ा देते थे।
- ✦ शराब पीने के बाद पति की प्रताड़ना भी माला देवी झेलती थी।
- ✦ शराब के खिलाफ ग्राम संगठन द्वारा अभियान चलाया गया।
- ✦ कई शराब की दुकानें एवं शराब की भट्ठियों को तोड़ा गया।
- ✦ अब गांव के सारे घरों में शांति है। सभी परिवारों में खुशियां छा गयी है।

समूह की बैठक मेंमैने अपने पति के शराब के लत और फिर नशे में मारपीट करने की चर्चा की। यह बात ग्राम संगठन तक पहुंची। ग्राम संगठन के द्वारा शराब के खिलाफ जागरूकता रैली निकालने और शराब दुकानदारों को समझाने का निर्णय लिया गया। लगभग 200 महिलाओं ने गाँव में रैली निकली। सबसे पहले लोगो को जागरूक किया गया, फिर शराब की दुकानों पर जाकर उन्हें बंद करने को कहा गया।दूकानदार नहीं मानें, लेकिन हमलोगों ने अपने अभियान को जारी रखा। इस बीच सरकार ने पूर्ण शराब बंदी की घोषणा कर दी। हमें मजबूत आधार मिला गया। हम सभी महिलाओं ने शराब के दुकानों का घेराव किया। दुकानदारों को चेताया कि अगर शराब बेचना बंद नहीं करोगे तो पुलिस को बुलाकर जेल भिजवा देंगे। हमारी एकता और शक्ति देखकर दुकानदारों ने कुछ समय माँगा। सभी महिलाओं ने उन्हें चेतावनी के साथ–साथ समय दिया। कुछ दिनों बाद सभी शराब दुकानदारों ने शराब बेचना बंद कर दिया।हमारे गाँव में शराब की बिक्री नहीं होती है। अब हम सभी खुश है,और हमारे पति भी ठीक से व्यवहार करते हैं।

25. बंद हुई शराब की दुकान

सुलतानगंज प्रखंड के गंगनियाँ पंचायत की गंगनियाँ गांव की बबिता देवी अपने गाँव की पुरानी स्थिति को याद करते हुए बताती है कि गांव में दो शराब की दुकान थी। दोनों दुकान गांव से बाहर जाने वाले प्रमुख रास्ते में थी। महिलाओं को कहीं भी आने–जाने और लड़कियों को स्कूल जाने में परेशानी का सामना करना पड़ता था। समूह की सभी दीदी मिलकर विचार किया फिर सभी मिलकर शराब बंद कराने के लिए शराब की दुकान पर गए। दुकानदार ने कहा कि यह हमारे रोजगार का साधन है और मैं इसे नहीं बंद कर पाउंगा। उत्सव जीविका स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने बोला कि बहुत सारा रोजगार है, इसलिए शराब बेचना छोड दीजिए। इस बात को लेकर गाली गलौज भी हुआ और दुकानदार शराब बेचना बंद नही किये। किरण जीविका महिला ग्राम संगठन इस समस्या को रखा गया। ग्राम संगठन की लगभग 200 दीदियाँ शराब की दुकान पर गयी और दुकानदार को चेताया कि आप के दुकान के कारण गांव का हर घर व्यक्ति बर्बाद हो रहा है। हमलोगों के बच्चे बर्बाद हो रहे हैं। समूह सदस्यों की बात को सुनकर एक दुकानदार ने शराब बेचना बंद कर दिया परन्तु दूसरा दुकानदार ने कहा कि दुकान बंद कर देंगे तो खायेंगे क्या? ग्राम संगठन की सभी दीदियों को गाली गलौज का भी सामना करना पड़ा । परन्तु सदस्यों ने अभियान जारी रखा। इस प्रयास और मुहिम को देखकर दुसरे दुकानदार ने भी दुकान बंद कर दिया। हमारी सबसे बडी समस्या का समाधान हो गया।

नाम : बबिता देवी

समूह : उत्सव जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : गंगनियाँ ,गंगनियाँ, भागलपुर

- ✦ गंगनिया गांव में शराबियों के उत्पाद के कारण महिलाओं एवं बच्चियों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था।
- ✦ कहीं आने–जाने में शराबियों द्वारा फब्तियां कसना, गाली–गलौज करना आदि आम बात थी।
- ✦ जीविका दीदियों ने शराब दुकानदारों को दुकान बंद करने का अल्टीमेटम दिया और शराबबंदी के लिए निरंतर अभियान चलाया।
- ✦ आखिरकार शराब दुकानदारों ने अपनी दुकान बंद की और अब गांव में शांति छाई हुई है।

26. एकता में बल

इस्माइलपुर गांव की रहने वाली बबिता देवी लक्ष्मी जीविका स्वयं सहायता समूह एवं चन्दन जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य हैं। एक दिन जब वह समूह की बैठक में भाग लेने जा रही थीं, तभी गांव के ही लोगों ने फब्तियाँ कसना शुरू कर दिया। इसी तरह एक बार और वह बैठक में भाग लेने जा रही थी तब गाँव के ही आठ दस लोग शराब के नशे में उनसे छेड़–छाड़ करना शुरू कर दिया। उसमें उनका पति भी शामिल था।

समूह की अन्य दीदियों ने बैठक में देर से आने के बारे में पूछी तब उसने सारी बातों को समूह के समक्ष रखा। चर्चा के दौरान समूह की दीदियों ने बताया की किरण देवी और रिंकू देवी के पति शराब बेचने का काम करते हैं। समूह की बैठक में चर्चा के उपरांत निर्णय लिया गया कि इसकी चर्चा ग्राम संगठन की बैठक में करेंगे। ग्राम संगठन की बैठक में समूह की सभी 12 दीदी ने मिलकर कहा कि अगर हम सभी चाहें तो शराब बंद करा सकते हैं। शराब बंदी के लिए ग्राम संगठन द्वारा रैली निकाली गई। शराब पिने वाले को ग्राम स्तर पर समझाया एवं चेताया गया।

माननीय मुख्यमंत्री द्वारा 1 अप्रैल 2016 से शराबबंदी के बारे में अखबार में आया और समूह सदस्यों ने गाँव में शराब बेचने वाले को चेताया। दुकानदार इसे देखकर डर गया और बोला कि अब शराब बेचना बंद कर देंगे दुकानदारों ने समूह से मदद मांगी। दुकानदारों ने समूह सदस्यों से कहा कि हमारी पत्नियाँ समूह से जुड़ी है और हमें समूह से ऋण दिया जाये ताकि नया रोजगार कर सके।

समूह ने निर्णय लेकर समूह सदस्यों के पतियों को व्यवसाय करने हेतु समूह से क्रमशः 10,000 तथा 15,000 रुपया ऋण के रूप में दिया। अब समूह सदस्य के पति नाश्ता और किराना का दुकान चला रहे हैं। अब इनके बच्चे स्कूल पढ़ने जातें हैं और पति ने भी शराब पीना और बेचना छोड़ दिया है।

नाम : बबिता देवी
समूह : लक्ष्मी जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : इस्माइलपुर, भागलपुर

- बबिता देवी को उनके पति ने ही अपने दोस्तों के साथ शराब पीकर छेड़छाड़ की।
- बबिता देवी ने इसकी शिकायत समूह एवं ग्राम संगठन स्तर पर की।
- समूह एवं ग्राम संगठन ने गांव स्तर पर शराबबंदी के लिए अभियान चलाया।
- कई दुकानदारों ने अपनी दुकान बंद कर, जीविका से रोजगार की मांग की।
- शराब दुकानदारों के पत्नियों को समूह से जोड़कर उन्हें रोजगार के लिए ऋण उपलब्ध करवाया।

27. शराब माफियाओं के खिलाफ मुहिम

सहरसा जिले के सौरबाजार प्रखंड के सौरबाजार गांव की रहने वाली विभा महावीर जीविका स्वयं सहायता समूह एवं एकता ग्राम संगठन की सदस्य हैं । विभा देवी के जीवन को पति के शराब पीने की लत ने तबाह कर दिया था। विभा देवी के पति हर दिन शराब पीकर आते थे। मना करने पर वह उनसे झगड़ा करते और कभी–कभी मारपीट भी करने लगते। अत्यधिक शराब पीने के कारण उनके पति की तबीयत काफी खराब रहने लगी। उन्होंने अच्छे डॉक्टर से अपने पति का इलाज कराने का फैसला किया। किसी तरह उन्होंने पैसे की व्यवस्था की और अच्छी तरह से इलाज कराया। आखिरकार उनके पति की जान बच पाई।

पति की तबियत ठीक होने के बाद विभा देवी शराब के मामले में काफी सख्त हो गईं। वह पति पर नजर रखने लगी ताकि वे फिर शराब न पीएं। इसी क्रम में वह आसपास की दुकानों और ठेकों पर भी नजर रखने लगी, जहां शराब बनाई और बेची जाती थी। शराब माफिया ने जब उसकी बात नहीं मानी तो उन्होंने समूह की दीदियों की मदद ली। विभा देवी समूह के बैठक में दीदियों को बताती कि वो अपने पति को शराब पीने को मना करने के साथ ही गाँव में शराब बनाने और बेचने वालों को ऐसा करने से रोकें। इस प्रकार विभा देवी अपने घर से इस अभियान की शुरुआत करके समूह की दीदियों को भी इस अभियान से जोड़ा।

विभा देवी के इस अभियान को तब और पंख लगा जब बिहार के माननीय मुख्यमंत्री ने बिहार में शराबबंदी की घोषणा कर दी। इसके बाद आस पास अन्य ग्राम संगठनों की महिलाएं जागरूक हुईं और शराब माफियाओं के खिलाफ मुहिम शुरू कर दी। अभियान को आगे बढाते हुए विभा देवी और अनके ग्राम संगठन की दीदियों को जहाँ भी शराब की बिक्री के बारे में पता चलता है वे तुरंत टॉल फ्री नंबर पर फोन कर खबर करती हैं। सरकार के पूर्ण मद्य निषेध कार्यक्रम को जमीनी स्तर पर लागू कराने में विभा अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं।

नाम : विभा देवी,
समूह : महावीर जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : सौरबाजार, सौरबाजार, सहरसा

- विभा देवी के पति शराब के कारण बुरी तरह बीमार हो गए।
- विभा देवी ने बड़ी मुश्किल से उनका ईलाज कराया।
- पति की बीमारी के बाद विभा ने शराब के खिलाफ अभियान चलाया और सफल हुईं।

28. गांव को कराया शराबमुक्त

मधेपुरा जिले के कुमारखंड प्रखंड में सुखासन गांव में शराब पीकर घर आने वाले पुरुष अपनी पत्नी और बच्चों को आए दिन पीटते रहते थे। हर रोज शाम को बच्चों की चीख–पुकार और महिलाओं का रुदन जैसे मानों आम बात हो गई थी। इसी गांव की कुन्ती देवी को यह सब देख रहा नहीं गया और उन्होंने समाज की इस स्थिति को बदलने का फैसला किया। कुन्ती देवी ने समूह की बैठकों में इस विषय पर चर्चा की और अन्य महिलाओं को शराब पीने वालों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए तैयार किया। इसके बाद महिलाओं के समूह ने शराब पीने वालों से बात की। उन्हें समझाया गया कि वे शराब न पीएं और घर में मारपीट न करें। कुछ लोगों पर इसका असर हुआ और उन्होंने शराब पीना कम कर दिया। महिलाओं के समूह ने शराब बेचने वालों के खिलाफ भी मुहिम शुरू कर दी। शुरुआत में उन लोगों ने शराब बिक्री बंद करने से इनकार कर दिया। लेकिन महिलाओं के दबाव के आगे झुकते हुए उन्होंने आखिरकार शराब की बिक्री बंद करनी पड़ी। वैसे कुछ पुरुष बाहर जाकर चोरी छुपे शराब पी ही लेते थे। बिहार में शराबबंदी की घोषणा के बाद इस मुहिम को गति मिली है। अब तो कानून और पुलिस प्रशासन भी महिलाओं के साथ है। महिलाएं अब शराब पीने वालों और पिलाने वालों पर कड़ाई से नजर रख रही हैं। कुन्ती देवी के इस प्रयास से यह गांव तरह शराब मुक्त हो गया है।

नाम : कुन्ती देवी
समूह : दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह,
पता : सुखासन, कुमारखंड, मधेपुरा

- ✦ सुखासन गांव में शराबियों का आतंक बढ़ता ही जा रहा था।
- ✦ शराबियों के आतंक के खिलाफ कुन्ती देवी ने अभियान चलाया।
- ✦ अभियान में समूह एवं ग्राम संगठन की दीदियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।
- ✦ अभियान का असर यह हुआ कि शराब दुकानदारों को अपनी दुकानें बंद करनी पड़ी।
- ✦ लोगों ने चोरी छिपे पिना शुरू कर दिया लेकिन जीविका दीदियों ने उन्हें भी ढुढ़ निकाला और उन्हें सजा दी।
- ✦ आखिरकार महिलाओं के अभियान ने रंग दिखाया, अब गांव पूरी तरह शराबमुक्त है।

29. शराब पीने वालों की अब खैर नहीं

नाम : रोशनी खातून
समूह : रहमान जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : रानीपट्टी, परमानन्दपुर, सुपौल

बिहार–नेपाल सीमा से सटे रानीपट्टी गांव में शराब पीने–पिलाने का धंधा जोरों पर था। ज्यादातर घरों के पुरुष सदस्य गांव में बनने वाले देसी शराब का भरपूर सेवन करते और दिन में भी शराब पीकर सड़क किनारे पड़े रहते। शराब के लिए पैसे न देने पर वे अपनी पत्नी से मारपीट भी करते। इन सबसे तंग आकर रोशनी खातून ने इस स्थिति में बदलाव लाने का निश्चय किया। रोशनी रहमान जीविका स्वयं सहायता समूह, उजाला महिला जीविका ग्राम संगठन एवं जीवन ज्योति संकुल स्तरीय संघ से जुडी हैं । उन्होंने इस मसले पर समूह एवं ग्राम संगठन की अन्य महिलाओं से बात की और शराब पीने वाले और बेचने वालों के खिलाफ मुहिम शुरू करने का फैसला किया। ज्यादातर महिलाएं इसकी भुक्तभोगी थीं। सबने मिलकर शराबखोरी के खिलाफ आवाज उठाया।

उजाला ग्राम संगठन की करीब 33 महिलाओं ने शराब पीने वालों से बात की। उन्हें शराब न पीने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। महिलाओं के समूह ने शराब बनाने वालों से बात की। लेकिन उन्होंने भी बिक्री बंद करने से साफ इनकार कर दिया। थक हार कर इन महिलाओं ने स्थानीय पुलिस में इसकी शिकायत की। मगर यहां भी कोई सुनवाई नहीं हुई। पुलिस ने शराब पीने और शराब बेचने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। परिणास्वरूप महिलाएं काफी निराश हो गईं। लेकिन इनकी कोशिश जारी रही। वे लगातार उनके खिलाफ मुहिम चलाते रही।

अप्रैल 2016 से राज्य में शराब पर प्रतिबंध लगने से महिलाओं को उम्मीद की किरण दिखाई दी। रोशनी खातून और अन्य दीदियां फिर शराबियों के खिलाफ सक्रिय हुईं। उन्होंने शराबखोरी के खिलाफ इस मुहिम और तेज कर दिया है।जहां भी शराब बेचे जाने या किसी के पीने की खबर आती है, महिलाओं का समूह तत्काल इसकी खबर पुलिस को करता है।

- ✦ रानीपट्टी गांव के लोगों को आसानी से शराब की उपलब्धता थी।
- ✦ शराब पीने के बाद महिलाओं को प्रताड़ित करना आम बात थी।
- ✦ महिलाओं ने शराबबंदी के लिए अभियान चलाया।
- ✦ शराबबंदी के बाद अब गांव का माहौल पूरी तरह बदल गया है।

30. शराब छोड़ा तो पटरी पर आया परिवार

सहरसा जिले के पथरघट्ट प्रखंड के जलैया पस्तकारगांव की वंदना देवी के पति संतोष कुमार मोबाइल की दुकान चला कर अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे। सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था तभी संतोष की संगत कुछ गलत लोगों के साथ हो जाने की वजह से उन्हें शराब पीने की लत लग गई। वह अब रोजाना दुकान की कमाई शराब में उड़ाने लगा। दुकान की कमाई से घर के लिए तेल–सब्जी लाने की जगह वह शराब पीकर घर आने लगा। वंदना के कुछ कहने पर वह उनसे गाली–गलौच और मारपीट करता। वंदना देवी इससे तंग आने लगी। इसी बीच अत्यधिक शराब पीने की वजह से संतोष की तबियत खराब हो गई।

वंदना सनम जीविका स्वयं सहायता समूह, हिमगंगा जीविका महिला ग्राम संगठन एवं किसनपुर जीविका संकुल स्तरीय संघ से जुडी हैं। एक बडी ताकत थी वंदना के साथ । वंदना ने समूह से पैसे उधार लेकर अपने पति का इलाज कराया। समूह में इस बात की चर्चा हुई और समूह एवं ग्राम संगठन की महिलाओं ने उनके पति को समझाया। इसका असर भी हुआ। तबियत ठीक होने के बाद उसने शराब पीना छोड़ दिया। लेकिन यह अधिक दिन तक नहीं चल सका। इस बार तो शराब पीने की वजह से उनकी दुकान तक बंद हो गई। ग्राम संगठन की महिलाओं ने दोबारा उन्हें समझाने का प्रयास किया। तब संतोष ने कहा कि अब उनके पास रोजी–रोटी का कोई सहारा नहीं बचा है। वह क्या करे? इसके बाद ग्राम संगठन में वंदना देवी के नाम कुछ पैसे उधार दिए, जिससे वह अपना दुकान फिर से शुरू किया। अब संतोष ने शराब की आदत छोड़ दी है और वह मोबाइल की दुकान चला कर अपने परिवार का भरण–पोषण करने लगे हैं।

नाम : वंदना देवी
समूह : सनम जीविका स्वयं सहाय समूह
पता : जलैया पस्तकार, पथरघट्ट, सहरसा

- ✦ शराब की उपलब्धता आसान होने के कारण संतोष जैसे युवा इसके शिकार हुए।
- ✦ दुकान की बिक्री को शराब में खर्च करना संतोष की आदत में शामिल थी।
- ✦ पत्नी वंदना के समझाने का भी कोई भी असर उसपर नहीं होता था।
- ✦ शराब के कारण संतोष बीमार हो गया, उसका व्यवसाय चौपट हो गया।
- ✦ वंदना ने समूह से ऋण लेकर उसका ईलाज करवाया।
- ✦ ग्राम संगठन से ऋण लेकर वंदना ने पुनः अपने पति का व्यवसाय आरंभ करवाया।

31. शराबबंदी से आई खुशहाली

प्रतिमा देवी के लिए सरकार का मद्य निषेध कानून एक नई उम्मीद लेकर आया है। अब उसकी खुशी का ठिकाना नहीं है, जब वह अपने व्यवसाय को पूरे तन्मयता के साथ करती हैं। कोई परेशान करने वाला नहीं है। प्रतिमा मधेपुरा जिले के मुरलीगंज प्रखंड के रामपुर, वार्ड नम्बर–13 की रहने वाली है और कृष्ण जीविका स्वयं सहायता समूह एवं भक्ति जीविका महिला ग्राम संगठन, रामपुर की सदस्य है। प्रतिमा देवी स्थानीय बाजार में अंडे की दुकान चला रही हैं। अपने पति संतोष मालाकार को वह इस दुकान में मदद करती हैं। प्रतिमा देवी बताती हैं कि एक–डेढ़ साल पहले जहां हमारे अंडे की दुकान थी, वहीं पास में एक शराब की दुकान खुल गयी। अब लोग शराब लेकर उनके दुकान आ जाते और वहीं शराब का सेवन करने लगते थे। कई बार उनके पति एवं उसने खुद शराबियों को उनके दुकान पर शराब पीने से रोकने की कोशिश की लेकिन शराबी नहीं माने। कई बार गाली–गलौज से मारपीट तक की नौबत आ गयी लेकिन शराबी अपनी आदतों से बाज नहीं आते। उन शराबियों को दबंगों का भी साथ मिला हुआ था। अंत में मैंने और मेरे पति ने यह फैसला लिया कि दुकान को शाम होने से पहले ही बंद कर दिया जाए। ताकि शाम होते ही दुकान में लगने वाली भीड़ ना लग सके। हमें इस कारण काफी आर्थिक नुकसान भी झेलना पड़ा। लेकिन इसी बीच समूह की बैठक में मुझे जानकारी मिली कि राज्य सरकार बिहार में शराब की बिक्री पर पाबंदी लगाने वाली है। यह खबर सुनकर मुझे काफी खुशी हुई।

01 अप्रैल को वह भी दिन आ गया जब हमारे दुकान के बगल वाली शराब की दुकान बंद हो गयी। शराब की दुकान बंद होने के बाद हमने अपने अंडे की दुकान फिर से देर शाम तक खोलना शुरू कर दिया। प्रतिमा देवी कहती हैं कि शराब की दुकान बंद होने से हमें काफी खुशी हुई। अब किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है। दुकान देर शाम तक खुले रहने के कारण हम आर्थिक रूप से फिर से सशक्त हो रहे हैं।

नाम : प्रतिमा देवी
समूह : कृष्ण जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : रामपुर, वार्ड–13, मीरगंज मुरलीगंज, मधेपुरा

- शराबियों के आतंक के कारण प्रतिमा देवी को अपने अंडे की दुकान को शाम होने से पहले ही बंद कर देना पड़ता था।
- काफी प्रयास के बाद भी शराबियों ने उन्हें परेशान करना नहीं छोड़ा।
- शराबबंदी के बाद जबसे शराब की दुकानें बंद हुई हैं, तब से व्यवसाय करना आसान हो गया।

32. शराब बंदी के लिए जंग

जयमाला देवी उन चंद महिलाओं में एक है जो बिहार में शराबबंदी के पूर्व भी शराब के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करती रही हैं। जयमाला देवी चार वर्षों से अधिक समय से जीविका से जुडी हैं । जयमाला देवी वर्तमान में शक्ति ग्राम संगठन एवं मेहनत संकुल स्तरीय संघ की अध्यक्ष भी हैं तथा शंकर स्वयं सहायता समूह से सम्बद्व हैं। जयमाला देवी बताती हैं कि 'एक समय तो हमारे गांवों एवं उसके आस पास के गांवों में मानों शराब की दुकानों की बाढ़ आ गयी थी। हर गली, मुहल्ले में शराब की दुकान धड़ल्ले से खोल दी गयीं थीं। इसका नतीजा यह निकला कि जो पहले से शराबी थे, उन्हें शराब मिलना आसान हो गया, वहीं जो शराबी नहीं भी थे वे भी शराब की तरफ आकर्षित होने लगे। नतीजा यह निकला कि हर तरफ शराबियों की टोली दिखने लगी। महिलाओं का कहीं आना–जाना मुश्किल होने लगा था। इसी दरम्यान हमारे ग्राम संगठन शक्ति में भी दीदियों की शिकायतें आनी शुरू हो गयी कि उनके पति शराब पीकर घर आते हैं और उनकी पिटाई करते हैं। कई दीदियों ने बताया कि जो पैसा बचत के लिए हम जमा करते हैं पति उन पैसों को भी छिनने लगे हैं।'

हमने ग्राम संगठन में फैसला लिया कि ग्राम संगठन की सामाजिक विकास कमिटी इस मुद्दे पर जल्द से जल्द कठोर फैसला ले और जिन दीदियों के पति उन्हें शराब पीकर या पीने के लिए परेशान करते हैं, उन्हें कठोर सजा दी जाए। हमने वैसे परिवारों को चिन्हित करना शुरू कर दिया और दीदियां उन परिवारों तक जाती और पतियों को समझाने–बुझाने के साथ डराती–घमकाती भी थीं। इसका असर काफी साकारात्मक हुआ।

जयमाला देवी एक प्रसंग का जिक्र करते हुए कहती हैं कि 'हमारे समूह की सदस्य मीना देवी के पति को बार–बार समझाने के बाद भी वे अपनी आदतों से बाज नहीं आ रहे थे। शराब पीकर मीना देवी को परेशान करते थे। सामाजिक विकास कमिटी द्वारा उन्हें बार–बार समझाया गया लेकिन वे नहीं माने अंत में हमलोगों ने जब पुलिस में इसकी शिकायत की तो जाकर मामले का निष्पादन हुआ।'

नाम : जयमाला देवी
समूह : शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : रामपुर, वार्ड–13, रामुपर, मीरगंज, मुरलीगंज, मधेपुरा

- ✦ रामपुर गांव में शराब की दुकान की अधिकता ने शराबियों की संख्या में काफी ईजाफा कर दिया।
- ✦ स्थानीय लोगों एवं महिलाओं को इससे काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था।
- ✦ जीविका दीदियों ने शराब दुकानों एवं शराबियों के खिलाफ अभियान चलाया।
- ✦ कई बार स्थानीय पुलिस की भी मदद ली और शराबियों को सबक सिखाया।

33. शराबियों से लड़ी जंग

बिहार में शराबबंदी के बाद गांवों का माहौल बदलने लगा है। गांव के चौक–चौराहों पर खुले शराब की दुकानों पर लगने वाला मजमा अब खत्म हो चुका है। कल तक परेशान चेहरों पर मुस्कान फिर से लौटने लगी है। इसी तरह के मुस्कान के साथ वंदना देवी अपने नाश्ते की दुकान पर हमारा स्वागत करती हैं। कहती हैं कि 'आपको जिस तरह की शांति अभी इस दुकान में दिख रही है, दो–तीन महीने पहले यहां की स्थिति ऐसी नहीं थी। इससे ठीक उलट थी। मेरे इस नाश्ते की दुकान पर अधिकांश शराबियों को कब्जा रहता था। बार–बार मना करने के बाद भी शराबी अपनी आदतों से बाज नहीं आते थे। शराब पीने से मना करने पर शराबियों द्वारा गाली–गलौज और मारपीट तक की जाती थी।'

मैं और मेरे पति राजीव मालाकार शराबियों की आदतों से परेशान थे। शराबी बगल की शराब की दुकान से शराब खरीदकर हमारी दुकान पर आकर पीने लगते थे। जिसके कारण आम ग्राहक हमारी दुकान में आने से बचने लगे। हमारे दुकान की बिक्री काफी कम होने लगी। हमेशा हमें इस बात का डर लगा रहता था कि कहीं कोई घटना–दुर्घटना ना हो जाए। मैंने अपने प्रिया स्वयं सहायता समूह एवं खुशी ग्राम संगठन में इस बात की भी शिकायत की। ग्राम संगठन द्वारा कार्रवाई भी की गयी। दो–चार दिन स्थिति सही रहती थी लेकिन उसके बाद स्थिति जस की तस हो जाती थी। इसी बीच राज्य सरकार ने बिहार में शराबबंदी की घोषणा की तो हमें काफी खुशी हुई। हमें लगा कि हमारे वर्षों के सपनों को मुख्यमंत्री ने सुन लिया है और बिहार को पूरी तरह शराब मुक्त कर दिया है। वंदना देवी बताती हैं कि अब हमें दुकान चलाने में किसी भी प्रकार की दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ता है। हमारे दुकान की बिक्री भी बढ़ गयी है। अब सबकुछ अच्छा–अच्छा हो रहा है।

नाम : वंदना देवी
समूह : प्रिया जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : मुरलीगंज, मुरलीगंज, मधेपुरा

- वंदना देवी अपने नाश्ते की दुकान में शराबियों की आवाजाही से परेशान रहती थी।
- शराबियों द्वारा उन्हीं की दुकान पर शराब पीना शुरू कर देते। मना करने पर मारपीट पर उतारू हो जाते।
- ग्राम संगठन को शिकायत की तो ग्राम संगठन द्वारा कार्रवाई की गयी।
- शराबबंदी के बाद अब दुकान का संचालन आराम से हो रहा है।

34. शराबबंदी ने बदली जिन्दगी

नाम : शुल्ली देवी
समूह : दूर्गा जीवका स्वयं सहायता समूह
पता : इनरवा, सहरसा

- शुल्ली देवी के पति शराबी थे। अपने आमदनी का अधिकांश हिस्सा शराब में खर्च कर देते थे।
- शराब पीने के बाद बच्चे एवं पत्नी के साथ मारपीट करना, गाली–गलौज करना आम बात थीं।
- शराबबंदी के बाद अब शुल्ली देवी के पति शराब नहीं पीते हैं और अपने परिवार पर ध्यान देते हैं।

शुल्ली दीदी दूर्गा जीवका स्वयं सहायता समूह अन्तर्गत कैलाश जीविका ग्राम संगठन इनरवा की सदस्या हैं। इनके पति–नुनूराम शराबी थे। अपनी कमाई का अधिकांश पैसा शराब पीने में खर्च कर देता था। साथ ही शराब के नशे स्थिति में अपने बच्चे व पत्नी के साथ बदसलूकी भी करता था। परिवार आर्थिक तंगी व कर्ज से दबा हुआ था। दो वक्त की रोटी भी परिवार के सदस्यों को नहीं मिल पा रहा था। बच्चे बाल मजदूरी करने को विवश थे। 1 अप्रैल 2016 के सरकार द्वारा पूर्ण शराबबंदी शुल्ली देवी के लिए जीवन का वरदान साबित हुआ। शुल्ली देवी कहती है कि–''हूजूर त एकरा पहले मजाक मानली पर दू से चार दिन में हमरा इ बात हकीकत लागल की हमर मालिक सबेरे काम क के धर आ जाए लागल उनका पारा ठंडा रहे लागल न कुछ बोले ला आ मन मार के जे दिला से खा लिला त हमरा तनि विश्वास भे लागल की इ बात मजाक न सही छइ। आब हमरा हाथ मे 100 रू0 के बदला सब दिन 200 से उपर रूपया आमदनी हो लागल।'' शुल्ली देवी अब काफी चैनसे अपना सामान्य जीवन जी रही है। साथ ही बच्चों के चेहरे पर भी मुस्कान लौट आयी है।

35. ग्राम संगठन की पहल से बंद हुई शराब

नाम : सुदीना देवी
समूह : भवानी जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : दीप, लखनौर, मधुबनी

- दीप गांव शाम होते ही नशे की आगोश में चला जाता था।
- शराब के कारण गांव में महिलाओं की प्रताड़ना में काफी बढ़ोत्तरी हो गयी।
- ग्राम संगठन ने शराब के खिलाफ अभियान चलाया। कई टीम शराबियों को ढूंढ़ती और उन्हें समझाती थी।

सुदीना देवी दीप गाँव की रहने वाली हैं जो शराब बंदी से पहले शराब के ही आगोश में रहता था। गाँव के युवा तक देशी शराब के नशे में धुत रहते थे। इस वजह से लगभग प्रत्येक ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति ठीक नही थी। सुदीना देवी ने अपनी इन दिक्कतों को समूह के मीटिंग में रखा। सुदीना देवी के द्वारा शराब बंदी के लिए काम करने पर जोर दिया जाने लगा क्योंकि उसका देवर सूर्य देव भी शराब पीता था। वो अपना सारा कमाई शराब के नशे में उड़ा देता था। परिवार में अक्सर मार–पीट ,गाली गलौज करता था। शक्ति जीविका महिला ग्राम संगठन ने शराब बंदी के ऊपर अपने सामाजिक अंकेक्षण उपसमिति को सक्रिय किया। जिसका मुख्य कार्य शराब से पीड़ित व्यक्ति का पता लगाना था। समिति कई छोटे छोटे टुकड़े में बंटी और गाँव भ्रमण गुप्त रूप से करने लगी। भ्रमण के दौरान यह पाया गया कि सही में भवानी समूह की सुदीना देवी के देवर श्री सूर्य देव महतो काफी शराब पीता है। ग्राम संगठन की महिलाओं ने उसे समझाया की किस तरह से शराब उसकी जिंदगी को खोखला कर रहा है। इसके बाद ग्राम संगठन की महिलाओं ने घूम घूम कर गाँव में सभी को शराब से होने वाले परिणामो से अवगत कराया साथ ही ये धमकी भी दी की कोई अगर शराब पीता या शराब बेचता हुआ मिल जाएगा तो उस पर गाँव की महिलायें कड़ी कारवाई करेंगी। शुरुआत में तो दिक्कत हुई लेकिन बाद में महिलाओं को सफलता मिलने लगी। सूर्य देव ने भी शराब पीना छोड़ दिया। अब सुदीना देवी के परिवार में खुशहाली का माहौल रहता है।

36. शराब मुक्त हुआ गाँव समाज

मीना देवी शादी के बाद जब ससुराल आई तो सीमित संसाधन के कारण काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा । इनके पति बिरजु दास दिहाड़ी मजदूरी करते थे। ससुराल में गाँव–समाज का माहौल काफी असहज था, क्योंकि चारों तरफ शराब बेचने वाले, पीने वाले और जुआड़ियो का अड्डा बना हुआ था। वर्ष 2009 में मीना देवी जीविका द्वारा बनाए जा रहे स्वयं सहायता समूह में जुड़ गईं । अब मीना देवी सामाजिक बुराईयों पर समूह में चर्चा करने लगीं। खासकर शराब के कारण पीड़ीत महिलाओं का दुःख सुनकर, समुह की महिलाओं को जागरूक करने लगी। मीना देवी के पति शराब नहीं पीते थे तथा इस समाजिक अभियान में उनका भरपुर सहयोग किया। खबड़ा गॉव के दबंगो को यह बात रास नहीं आयी और आए दिन तू–तू मैं–मैं होने लगी। अब मीना देवी को लगा कि खुद ही शराब मुक्त समाज के लिए कुछ करना होगा। अपने आस–पास के समूहों और ग्राम संगठनों की महिलाओं को एकत्रित करने लगी । सितम्बर, 2012 में शराब बेचने वाले के खिलाफ आर–पार की लड़ाई शुरू हुई। मीना देवी कहती हैं कि 'जब अपने परिवार के बारें में सोंची तो काफी सहम गई, कहीं इनके साथ कोई अनहोनी न हो जाए।' लेकिन दृढ़संकल्पित मीना देवी ने अपना पैर पीछे नहीं खींची। इसी बीच शराब बेचने वालों के खिलाफ छिड़ी मुहिम में गाँव के दबंग जाति के लोग ने मीना पर तलवार से प्रहार किया, लेकिन वे बाल–बाल बच गई और इनके साथ चल रही महिलाओं ने मिलकर तलवार छिनकर उस आदमी की जमकर पिटाई कर दी। हमलावर के घर से देशी शराब का पाउच निकालकर एन0 एच0 28 पर बिछा दिया और रोड जाम कर दिया।

आज खबड़ा गाँव में जिनके भी पति शराब बेचते थे या शराब पीते थे उनके परिवार से कोई न कोई महिला सदस्य स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई हैं एवं स्वयं सहायता समूह से ऋृण लेकर स्वरोजगार कर रही हैं। वर्तमान समय में मीना देवी ग्राम संगठन में लेखापाल का कार्य करती है और इनके पति सेंटिंग की ठिकेदारी करते है । इनकी मासिक आमदनी 15000–20000 रू है । इनको तीन संतान है , एक बेटी और दो बेटा है । बेटी वर्ग नौ में और बड़ा बेटा वर्ग दो में तथा छोटा बेटा वर्ग एक में पढ़ रहें है ।

नाम : मीना देवी

समूह : जय संतोषीजीविका स्वयं सहायता समूह

पता : मुसहरी, मुजफ्फरपुर

- मीना देवी के ससुराल में चारों तरफ शराब बेचने वालों, पीने वालों और जुआड़ियो का अड्डा बना हुआ था ।
- मीना देवी ने शराब बेचने वालो के खिलाफ आर–पार की लड़ाई शुरू की। मीना पर तलवार से प्रहार किया गया, लेकिन वो बाल–बाल बच गई।
- महिलाओं ने हमलावर के घर से देशी शराब निकालकर एन0 एच0 28 पर बिछा दिया और रोड जाम कर दिया।
- वर्तमान समय में खबड़ा गाँव में कोई भी शराब कारोबारी नहीं है ।

37. शराब बंदी कुसुमवती देवी के परिवार के हित में

नाम : कुसुमवती देवी
माँ जीविका महिला ग्राम संगठन
पता : औरहा, करियोत, लौकही, मधुबनी

मधुबनी जिला के लौकही प्रखण्ड की कुसुमवती देवी का परिवार नशा के दुष्प्रभाव को बर्षो से झेल रहा था। उनके पति शराब पीने के आदि थे। पति दैनिक रूप से मजदूरी का काम करते थे। पति द्वारा शाम में दारू पीकर आना, गाली गलौज करना, मार–पीट करना आम बात थी। बच्चे की पढ़ाई रुक चुकी थी। कुसुमवती देवी अपने ग्राम संगठन माँ जीविका , औरहा, पंचायत करियोत में इसकी चर्चा दबे जुबान में कर चुकी है।

शराब बंदी कानून से कुसुमवती देवी को एक नई जिंदगी मिली,पति के ऊपर कानूनी भय का दबाब बनाया। व्यावहारिक रूप से बदलाव लाकर, पति के जीवन में परिवर्तन लाई। परिणाम स्वरूप पति ने शराब छोड़ दिया।आज कुसुमवती देवी के बच्चे पढ़ने स्कूल जाते है, पति समय से घर आते हैं। परिवार आर्थिक विकास की ओर अग्रसर है।

- ✦ कुसुमवती देवी का परिवार नशा के दुष्प्रभाव को वर्षों से झेल रहा था।
- ✦ शराबी पति शराब पीकर उनके साथ मारपीट और गाली–गलौज करता था।
- ✦ शराबबंदी के बाद उनके पति ने कानून के भय से शराब पीना छोड़ दिया।

38. रंजू के प्रयास से क्षेत्र में हुई शराब बंदी

नाम– रंजु देवी
समूह– महराज जीविका स्वयं सहायता समूह
गाँव – शाहपुर, पंडौल, मधुबनी

शराब का क्या परिणाम हो सकता है ये कोई रंजु देवी से पूछे। रंजु देवी ,पति स्व0–संतोष चौधरी ग्राम–शाहपुर , प्रखण्ड–पंडौल, जिला–मधुबनी के निवासी हैं। उनके पति शराब के लत से बुरी तरहसे पीड़ित थे। पति के द्वारा अत्यधिक शराब सेवन से परिवार कलह का स्थल बन चुका था। उनके घर की आर्थिक स्थिति पूर्णतया डगमगा चुकी थी। खाने–पीने के लाले पड़ गए थे। रंजू देवी को लगता था की या तो वह आत्म–हत्या कर लें अथवा घर छोडकर कहीं भाग जाएँ । कुछ दिनों के बाद शराब पीने से उनके पति बीमार पड़ गए । चिकित्सकों के अनुसार उनका किडनी पूर्णतया खराब हो गया था । अंत में उनके पति की मौत हो गयी। रंजू देवी काफी दुखी थी। उनके पास एक छोटा बच्चा भी है। पति के मौत के बाद रंजू देवी ने संकल्प लिया कि जो मेरे साथ हुआ वह किसी और के साथ नहीं हो। इसमें इन्होने अन्य दीदी के सहयोग लेने की ठान ली। इसके लिए सबसे पहले अपने समूह महराज जीविका स्वयं सहायता में चर्चा करवायी, उसके बाद श्री राम ग्राम संगठन में। ग्राम संगठन के निर्णय के अनुसार सभी दीदी इकट्ठी हुई। और नजदीक के ठेकेवाले को शराब के खराब प्रभाव के विषय में बताई । शुरुआत में दीदियों को प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। फिर अपनी संख्या एवं सोच की शक्ति के द्वारा खुद शराब के दुकान में ताला लगा दी। उस गाँव के सभी परिवार में जाकर शराब के बुरे प्रभाव के प्रति लोगों को जागृत की। अब वह गांव पूरी तरह शराब मुक्त गांव बन चुका है।

- ✦ रंजू देवी के पति की मौत अत्यधिक शराब पीने से हो गयी।
- ✦ पति की मौत के बाद रंजू देवी ने शराब के खिलाफ अभियान चलाया।
- ✦ शराब के खिलाफ अभियान में जीविका समूह की दीदियों ने उनका सहयोग किय।
- ✦ रंजू देवी के प्रयास से गांव में पूरी तरह शराबबंदी हो गयी। सरकार के पूर्ण मद्य निषेध के निर्णय के बाद इस अभियान को और ज्यादा बल मिला।

39. पुनिता के हौसले को सलाम

नाम : पुनिता देवी
समूह : जानकी जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : रांटी, राजनगर, मधुबनी

- ✦ पुनिता देवी ने शराबबंदी अभियान में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।
- ✦ शराबबंदी के लिए रैली, नुक्कड़ नाटक आदि का प्रदर्शन किया।
- ✦ ग्राम संगठन की दीदियों के साथ मिलकर ताड़ी की दुकानों को बंद करवाया।
- ✦ पूर्ण शराबबंदी के बाद अब रांटी गांव पूरी तरह शराबमुक्त हो चुका है।

मैं पुनिता देवी पति रमेश मंडल, ग्राम़पोस्ट–रांटी जिला–मधुबनी की रहने वाली हूँ। मैं जनवरी 2007 को जानकी जीविका स्वयं सहायता समूह, 4 जुलाई 2007 को मिलन जीविका ग्राम संगठन एवं 25 जनवरी 2012 को प्रयास जीविका संकुल स्तरीय संघ से जुड़ी। जीविका से जुड़ने से के बाद मैंने कई सामाजिक कार्य किए जैसे छोटे बच्चों को स्कूल भेजना, समूह से जुड़ी दीदियों को पढ़ेलिखे बच्चों के माध्यम से पढ़ना,साफ–सफाई करवाना, शौचालय निर्माण के लिए दीदियों को प्रेरित करना प्रमुख है।

इन सबसे के अलावा नशाखोरी बन्द करने के लिए जागरुक करना। मैंने ग्राम संगठन और संकूल स्तरीय संघ के सहयोग से शराबबंदी के लिए कई रैलियां निकाली एवं चौक–चौराहों पर जागरुकता फैलायी। वर्ष 2015 में मैं महिलाओं के समूह को संगठित करके घर के पास चल रहे ताड़ी की दुकान को रात 11 बजे जला दिया और सभी घड़े को नष्ट कर दिया मेरे और जीविका की दिदियों के सहयोग का ही यह नतीजा है कि आज मेरा पूरा गांव पूर्ण रुप से नशा से मुक्त हो गया है।

इसके बाद 1 अप्रैल 2016 को राज्य में शराब बंद होने के उपरांत भी तकरीबन 30–35 परिवार सड़क के किनारे ताड़ी की दुकान चला रहे थे। इसको देखने के बाद समूह की सभी दीदियों ने विचार विमर्श किया और उन लोगों के घर जाकर उन्हें समझा बुझाकर उनकी भट्ठी को बंद करवाया और फिर से दुकान नहीं चलाने के लिए समाझाया। इसके साथ ही उसे यह भी कहा की अगर फिर से दुकान खोला तो हमलोग पुलिस को खबर कर देंगे। इस बात का असर देखने को मिल रहा है। आज पुरा गाँव शराब मुक्त हो गया है।

40. बदली गांव की सूरत

नाम : सीता देवी
समूह : शिव शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : नवादा, सकरी पूर्वी पंचायत, पंडौल, मधुबनी

मधुबनी जिला, पंडौल प्रखण्ड , सकरी पूर्वी पंचायत के नवादा गाँव की सीता देवी,शिव शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई है। उनके पति शराब की बुरी लत से पीड़ित थे।वह पति को बहुत समझाती थी,लेकिन इसका कोई खास असर नहीं होता था। कई बार उन्हें इसके लिए घरेलु हिंसा का भी शिकार होना पड़ता था। अप्रैल महीने में जब पूर्ण शराब बंदी की घोषणा हुई , तो सीता देवी ने अपने पति पर काफी दबाब बनाया, शराब की कमी एवं सीता देवी के सहयोगपूर्ण दबाव के कारण उनके पति ने शराब हीं नहीं, बल्कि नशा के अन्य रूपों का भी त्याग कर दिया ।

- ✦ पति के शराबी होने के कारण सीता देवी को प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता था।
- ✦ पति को समझाने पर भी उसका कोई असर नहीं होता था।
- ✦ सरकार द्वारा पूर्ण शराबबंदी के बाद अब सीता देवी के पति शराब नहीं पीते हैं।
- ✦ शराबबंदी के बाद अब सीता देवी के घर में खुशहाली आ गयी है।

इस घटना ने सीता देवी के परिवार मे कई परिवर्तन लाये, अब उनके पति मजदूरी करके सीधे घर आते हैं। बच्चे के पढ़ने के विषय में पुछते हैं। मजदूरी का सारा पैसा घर में लाकर देते हैं। अब सीता देवी का परिवार एवं सीता देवी काफी खुश हैं। परिवार में खुशी और शांति का माहौल हैं।

41. खुशहाल हुआ घर–आंगन

सेवी देवी की शादी संतोष कुमार से हुई। संतोष कुमार शराब की लत का शिकार था। शराब पीने के बाद वह सेवी देवी के साथ मारपीट करना, उसे प्रताड़ित करना उसके पति की आदत में शामिल था। सेवी देवी के पति जो भी कमाते थे, उन सभी पैसों की वे दारू पी जाते थे। अपने पति की शिकायत सेवी देवी किससे करती क्योंकि उनके ससुर भी शराब के लत के शिकार थे। सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण वो चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रही थी। आखिर सेवी देवी ने जीविका के बैनर तले शराबबंदी के लिए अभियान चलाने का निर्णय लिया। और यह अभियान गांव–गांव तक पहुंच गया। सरकार द्वारा पूर्ण मध निषेध कानून के बाद इस अभियान को और भी बल मिला। शराबबंदी हो जाने के कारण अब दीदियों की खुशियों का ठिकाना नहीं है।

नाम : सेवी देवी
समूह : गायत्री जीविका स्वयं सहायता समूह

- ✦ सेवी देवी के पति एवं श्वसुर दोनों ही शराब के लत के शिकार थे।
- ✦ शराब का विरोध करने पर उसे काफी प्रताड़ित किया जाता था।
- ✦ जीविका द्वारा शराबबंदी के लिए चलाये गये अभियान से सेवी देवी जुड़ी।

42. नहीं चाहिए शराबी जीवन साथी

नाम : निभा कुमारी
पता : खुटौना , मधुबनी

- ✦ निभा कुमारी ने अपने सुंदर भविष्य के लिए ऐसा निर्णय लिया कि सभी भौक्चके रह गये।
- ✦ उन्होंने शराबी पति से वरमाला स्टेज पर ही शादी करने से इंकार कर दिया।
- ✦ उनके इस फैसले की सभी ने सराहना की।
- ✦ शराबबंदी की दिशा में यह एक बड़ा कदम है।

मधुबनी जिला के खुटोना प्रखण्ड की सुश्री निभा कुमारी की आज अपनी एक अलग पहचान है। उन्होंने अपने जीवन में जो निर्णय लिया, वैसे निर्णय काफी कम लोग ले पाते हैं। निभा कुमारी एक कृषक श्रमिक परिवार की सदस्य हैं। उसकी शादी, मधुबनी जिले के जयनगर प्रखण्ड के पड़वापचहर गाँव के श्री रंजीत कुमार कामत, पिता श्री रमेंद्र कमात के साथ तय हुई। निर्धारित तिथि पर बारात आयी। पूरे गाँव में हर्षोल्लास का माहौल था। वर के मित्र शराब पीकर नाच–गा रहे थे। इसी बीच वर भी मामा के साथ छक कर दारू पिया और विवाह मंडप पर आ गया। इतना ही नहीं लड़के ने विवाह मंडप पर ही बियर की मांग कर दी।

निभा से यह बर्दाश्त नहीं हुआ। वह दुर्गास्वरूपा हो गयी उसने यह निर्णय लिया कि "एक पियक्कर जीवन साथी से कुवांरी रह जाना अच्छा है।" इतना हीं नहीं, इस मौके पर उसने खुद को अपमानित महसुस किया। उसने वरमाला को फेंक दिया, सभी बराती और सराती अचंभित रह गए। जब मामला लोगों के समझ में आया तो सबों ने निभा कुमारी को समझाने का प्रयत्न किया लेकिन उसने किसी की न सुनी। न ही अपने परिवार के कमजोर आर्थिक स्थिति की और न ही व्यक्ति विशेष की। उनके मन में एक ही बात थी "जीवन में नशा को नहीं आने देंगे।" उनके इस फैसले से महिलाओं एवं लड़कियों में काफी खुशी देखी गयी। सबने निभा के निर्णय की सराहना की। निभा कुमारी की इस हिम्मत से प्रभावित होकर नशा विमुक्त व्यक्ति सुधेश्वर कामत ने उनसे शादी का निर्णय लिया। उनकी शादी तय हो गयी।

43. शराब बंदी के लिए संगठन का संघर्ष

नाम : पुनम देवी
माँ भगवती जीविका महिला ग्राम संगठन
पता : कुशवाहा टोल पहाड़पुर, किशनपुर, पत्तरघट, सहरसा

- ✦ समूह की सदस्य दीदियों को जब उनके शराबी पतियों द्वारा काफी प्रताड़ित किया जाने लगा तो, इसके खिलाफ ग्राम संगठन द्वारा अभियान चलाने का निर्णय।
- ✦ शराबियों एवं शराब दुकानदारों के खिलाफ आंदोलन।
- ✦ शराबियों के खिलाफ पुलिस का भी सहयोग ग्राम संगठन की सदस्यों ने लिया।

दिनांक 14 जनवरी 2016 को माँ भगवती जीविका महिला ग्राम संगठन कुशवाहा टोल पहाड़पुर, किसनपुर, पत्तरघट, सहरसा की सामाजिक बैठक हो रही थी। बैठक के दौरान पूनम देवी के पति शराब पीकर उसे गाली गलौज करने लगा। उस समय उसे समझा–बुझाकर घर भेज दिया गया। इस घटना से ग्राम संगठन की सभी दीदी हतप्रभ रह गयी। इस घटना के बाद ग्राम संगठन की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि शराबबंदी के लिए गांव में अभियान चलाया जाए। ग्राम संगठन के द्वारा एक शराब बंदी हेतु उपसमितियों का गठन किया गया जिसका नाम "मद्य निषेध कार्य उपसमिति"रखा गया।

ग्राम संगठन के द्वारा निर्णय लिया गया कि शराब से ग्रसित दीदियों के पतियों को घर घर में जाकर शराब न पीने की चेतावनी दी जाए साथ में यह भी कहा जाय कि 15 दिन के अन्दर यदि शराब नहीं छोड़ते हैं तो पुलिस को बुलाकर हाजत में बंद करवा दिया जाएगा। सामाजिक कार्य उपसमितियों के सदस्यों द्वारा शराब बेचने वाले को दुकान पर जाकर कहा गया कि आप शराब बेचना बंद करें अन्यथा पुलिस को सूचना दे दी जाएगी। 15 दिन के बाद ग्राम संगठन की बैठक आयोजित हुई तो बैठक में पता चला कि शराब पीने वाले दीदियों के पति, दीदियों को समूह एवं ग्राम संगठन की बैठक में जाने से रोक लगा दिया गया। साथ ही शराब वाले दुकानदार समूह की दीदियों के घर जाकर धमकी देना शुरु कर दिया। ग्राम संगठन के द्वारा इस बात की सूचना संकुल स्तरीय संघ की बैठक में दी गयी। संकुल स्तरीय संघ द्वारा इस मुद्दे पर ग्राम संगठन को हर स्तर पर मदद दी गयी। जिसका काफी व्यापक असर देखा गया।इसी बीच सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2016 से देशी मसालेदार शराब को सरकार पूर्ण रुप से बंद करने जा रही है। इस बात को सुनकर दीदियों के उत्साह में बढ़ोतरी हुई। इसी बीच में 5 अप्रैल 2016 को पूर्ण शराब बंदी के बाद इस गांव को शराबमुक्त घोषित किया गया।

44. शराब के खिलाफ जीती जंग

समूह : कोशी जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : पीरगंज, मोहनपुर नवहट्टा,सहरसा

सहरसा जिले के नवहट्टा प्रखण्ड अंतर्गत मोहनपुर पंचायत के पीरगंज गाँव में 80–85 महादलित परिवार रहते हैं। गंगा सदा वहां शराब भठ्ठी का संचालन करता था। जहाँ उस महादलित बस्ती के अधिकतम परिवार के सदस्य प्रति प्रतिदिन शाम को शराब का सेवन करते थे। जिसकी वजह से उनके घरों में पारिवारिक कलह होता रहता था। दिन भर की मजदूरी के पश्चात शराब पीना एवं महिलाओं को प्रताड़ित करना यह दिन–प्रतिदिन की बात हो गई थी। जिससे उनके परिवार के बच्चों एवं उनके भविष्य पर बुरा प्रभाव पड़ता था।

इस दिनचर्या से तंग आकर कुछ महिलाओं ने दृढ़ निश्चय लिया और शराब भट्ठी को नष्ट करने निकल पड़ीं। सभी महिलाओं ने एकमत होकर गंगा सदा को चेतावनी दी और कहा कि, हम पर हो रहे अत्याचारों का कारण यह शराब की भट्ठी तत्काल बंद करो। महिलाओं की एकता देखने के बाद गंगा सदा ने यह धंधा बंद कर दिया। भट्ठी बंद होने के पश्चात् घरों की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ। परन्तु कुछ दिनों बाद गंगा सदा ने फिर वही धंधा शुरु कर दिया।

- ✦ शराबियों के आतंक से मोहनपुर पंचायत की सारी महिलाएं परेशान थीं।
- ✦ प्रताड़ना, घर में पैसा नहीं देना से यहां की महिलाएं रोज रूबरू हो रही थीं।
- ✦ ग्राम संगठन द्वारा शराब भट्ठी चलाने वाले गंगा सदा को भट्ठी बंद करने की धमकी।
- ✦ शराब भट्ठी नहीं बंद करने पर महिलाओं द्वारा भट्ठी को तहस–नहस कर दिया गया।
- ✦ शराब भट्ठी संचालक को समझाया गया तथा उसे दूसरे रोजगार से जोड़ा गया।

इस बार ग्राम संगठन की सभी महिलाओं ने एकजुट होकर बड़ी संख्या में उनके भठ्ठी पर धावा बोल दिया। वहाँ पर जितने भी लोग बैठकर शराब पी रहे थे, महिलाओं की भीड़ देखकर भाग खड़े हुए। सभी दीदीयों ने मिलकर उस शराब भट्ठी को तहस नहस कर दिया। अब उस पूरे गाँव में किसी की हिम्मत नहीं हो पायी कि पुनः उस बस्ती के आस–पास कोई शराब की दुकान खोल पाए। न ही किसी पुरुष की हिम्मत हुई कि शराब का सेवन कहीं से करके आये और महिलाओं के साथ मारपीट या हाथापाई जैसा व्यवहार करे। इसके बाद तो जैसे बस्ती का माहौल ही बदल गया। अब जो पैसे शराब के सेवन पर उड़ाए जाते थे, वो बच्चों की शिक्षा एवं पारिवारिक जरुरतों को पूरा करने में लगने लगे। दीदीयों के समझाने के पश्चात् गंगा सादा में भी अविश्वसनीय बदलाव आया। वर्तमान में वह किराना दुकान खोलकर अपने तथा पूरे परिवार का जीवनयापन कर रहा है।

45. हमर घर आईल खुशी

नाम : रजिया देवी
समूह : पार्वती जीविका महिला स्वयं सहायता समूह
पता : कुसुमि मुसाही टोला, सरबेला, इटहरी, सहरसा

सहरसा जिला अंतर्गत बनमा ईटहरी प्रखंड के सरबेला पंचायत के कुशमी मुसहरी टोला में रजिया देवी अपने पति मुसो सदा एवं अपने पांच बच्चों के साथ रहती थी। दूसरों के खेतों में मजदूरी कर इस परिवार का जीवन यापन चलता था। लेकिन रजिया देवी की परेशानी का सबसे बड़ा कारण पति का शराबी होना था। पति जो कमाई करता वो सारी कमाई ताड़ी और शराब में बर्बाद कर देता था। रोज शराब पी कर घर में बच्चों के सामने रजिया देवी को मारना और गाली गलौज करना उसके पति के लिए आम बात थी।

जीविका के पार्वती जीविका महिला स्वंय सहायता समूह से जुड़ी रजिया देवी ने अपनी कहानी समूह की अन्य दीदियों को बतायी। जिसके बाद समूह सदस्यों ने शराब के खिलाफ अभियान चलाया। इसी बीच बिहार सरकार के द्वारा बिहार राज्य में पूर्ण नशा बंदी का कानून पास हुआ और यह कानून राज्य में सख्ती से लागू हुआ। इस कानून के लागू होने से राज्य में शराब बेचना एवं पीना प्रतिबंधित हो गया। अब शराब नही मिलने के कारण शराबियों को इसे छोड़ना पड़ रहा है। इसका असर रजिया देवी के परिवार पर भी हुआ। रजिया देवी का पति जहाँ पहले शराब के गलत आदतों के कारण अपने परिवारिक जीवन को बर्बाद कर रहा था, आज उसी परिवार में खुशियां लौट आई हैं।

- रजिया देवी अपने शराबी पति की प्रताड़ना से काफी परेशान थीं।
- उन्होंने इस बारे में समूह की बैठक में चर्चा की।
- समूह सदस्यों ने रजिया व अन्य दीदियों की परेशानी देख, शराबबंदी के लिए अभियान चलाने का निर्णय लिया।
- सरकार द्वारा पूर्ण मद्य निषेध लागू होने से इस अभियान को और भी ज्यादा बल मिला। आज सरबेला गांव पूरी तरह शराबमुक्त गांव है।

46. सामूहिक प्रयास से मिली सफलता

नाम : सावित्री देवी
समूह : रक्षा जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : बैजनाथ पट्टी, भेलवा, सहरसा

- ✦ भेलवा पंचायत में शराब के कारण महिलाओं का जीना मुहाल था।
- ✦ समूह एवं ग्राम संगठन द्वारा गांव में शराबबंदी के लिए प्रयास आरंभ हुआ।
- ✦ जीविका दीदियों द्वारा दोषियों को सजा भी दी गयी।
- ✦ शराबबंदी के बाद गांव का माहौल पूरी तरह बदल गया।

भेलवा पंचायत के बैजनाथपट्टी गाँव के सदाबहार जीविका महिला के रक्षा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं सावित्री देवी।इस गांव का अधिकांश परिवार शराब का शिकार था तथा महिलाओं को इतना प्रताड़ित करते थे कि बाहर निकलना तो दूर की बात इनके खिलाफ ये अपनी आवाज तक नहीं निकाल पाती थीं।

सावित्री देवी ने अपने शराबी पति की शिकायत ग्राम संगठन से की। ग्राम संगठन द्वारा गांव को शराबमुक्त बनाने की दिशा में कार्य करना आरंभ किया गया। इसी दौरान होली के समय गांव में काफी मात्रा में शराब की बोतल एवं पौच आना प्रारंभ हुआ। दीदियों ने इसके खिलाफ भी जबरदस्त अभियान छेड़ा। दीदियों ने सभी शराब के दुकानदारों को समझाया, पर वे नहीं माने तो उन शराब दुकानदारों को धमकाया। स्थानीय 15–16 समझदार सदस्यों को इकट्ठा कर कई दल बनाया गया, जिन्हें यह बताया गया कि अगर शराब दुकानदार समझाने के बाद भी शराब की बिक्री करें तो प्रशासन को इसकी सूचना दी जाए। जिसके बाद दुकानदारों द्वारा शराब नहीं बेचने की बात कही गयी। साथ ही पुरुषों के द्वारा गलती स्वीकार कर माफी मांगी जाने लगी। ऐसा करने से दीदीयों का आत्मबल बढ़ा। इसी दौरान 1 अप्रैल 2016 से पूर्ण शराबबंदी हो गयी। इससे दीदियों के खुशियों का ठिकाना नहीं रहा। इसके बाद दीदियों ने अपने ग्राम संगठन में यह फैसला लिया कि अब गांव में गांजा या इस प्रकार की और भी कोई नशे की वस्तुएं उपयोग नहीं करने देंगे। इसी दौरान 22 अप्रैल 2016 को समुह सदस्य मंजू देवी के पति को समूह सदस्यों ने गांजा पीते हुए पकड़ा। मंजू देवी के पति को कान पकड़ कर उठक–बैठक करवाकर उन्हें गलती स्वीकार करने पर माफ किया गया तथा ऐसा दुबारा नही करने का चेतावनी दी गई। अब भेलवा पंचायत में किसी भी प्रकार के नशे पर पूर्ण प्रतिबंध है और इस नियम का सभी पालन करते हैं।

47. शराबबंदी : संघर्ष से सफलता

नामः सन्तोषी जीविका महिला ग्रामसंगठन
पताः भलूआ, डोभी,गया

भलूआ ग्राम के मंडल टोला एंव पासवान टोला में अवैध शराब का निर्माण होता था। सभी लोग अपना काम काज छोड़ सारा दिन नशे में धुत रहते थे। इसी गाँव में जीविका द्वारा संपोषित संतोषी जीविका महिला ग्रामसंगठन कार्यरत है। 8 मार्च 2016 से पहले कई बार ग्रामसंगठन के सदस्यों के द्वारा शराब बंद कराने का प्रयास किया गया। 8 मार्च 2016 को महिला दिवस के अवसर पर मगध विश्वविधालय के सभागार में पूर्ण मद्य निषेध हेतु एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में गया जिले के अनेक हिस्सों से जीविका दीदी हजारों की संख्या में उपस्थित हुई । कार्यक्रम से वापस आने के बाद संतोषी जीविका महिला ग्रामसंगठन की अध्यक्ष गुडिया देवी के नेतृत्व में गॉव में पूर्ण रुप से शराब बंद करने का संकल्प लिया गया।

सर्वप्रथम सभी दीदी मंडल टोला और पासवान टोला में गयी। वहां लोगो को समझाया गया कि शराब उत्पादन करना बन्द कर दें। उन्हे ये भी कहा गया कि अगर वो खुद से उत्पादन बन्द नहीं करेगें तो थाने में शिकायत किया जायेगा। इतना सुनते ही शराब कारोबारी आक्रोशित हो गये और महिलाओं को धमकी देने लगे ।

- भलूआ ग्राम के मंडल टोला एंव पासवान टोला में अवैध शराब का निर्माण होता था।
- ग्राम संगठन की महिलाएँ शराब कारोबारियों के अड्डे पर पहुची । महिलाओं ने वहां पर पड़ी सभी शराब बनाने वाली सामग्रियों को नष्ट कर दिया।
- महिलाओं द्वारा लगभग 100 लीटर शराब जब्त किया गया जिसे बाद में पुलिस को सौंप दिया गया।
- अब भलुआ गाँव में शराब की बिक्री एवं सेवन पूर्ण रूप से बंद हो गया है।

करीब 60 की संख्या में ग्राम संगठन की महिलाएँ शराब कारोबारियों के अड्डे पर पहुची ।लोग किसी तरह से भी शराब बंद करने को राजी नहीं हुए। जिससे दोनो पक्षों के बीच तनाव हो गया। महिलाओं ने वहां पर पड़ी सभी शराब बनाने वाली सामग्रियों को नष्ट कर दिया। अगले दिन सुबह शराब कारोबारी महिलाओं के घर लाठी लेकर पहुँच गये। महिलाओं ने तुरन्त थाना को फोन किया । 15 मिनट के अन्दर मौके पर पुलिस पहुची। पुलिस को देखते ही वो लोग भाग गये। महिलाओं द्वारा लगभग 100 लीटर शराब जब्त किया गया जिसे बाद में पुलिस को सौंप दिया गया। पुलिस ने शराब कारोबारियों को चेतावनी दे कर छोड़ दिया।

अब भलुआ गाँव में शराब की बिक्री एवं सेवन पूर्ण रूप से बंद हो गया है। जो शराब के आदि थे वो अब धीरे–धीरे छोटे–मोटे रोजगार में लग गए हैं।

48. शराबबंदी से हुआ जीवन रौशन

25 वर्षीय शबाना खातून एक ऐसी महिला हैं, जो आज शराबबंदी अभियान में मिसाल बन चुकी हैं। सहरसा जिले के सिमरी बख्तियारपुर प्रखंड के सिमरी बख्तियारपुर उत्तरी पंचायत में मद्यपान के खिलाफ आवाज उठाने के कारण आज समाज में शबाना की अपनी अलग पहचान है। निर्धनता एवं शिक्षा के अभाव के बाद भी शबाना खातून जीविका समूह रौनक से जुड़ी और समाजिक कुरीतियों के खिलाफ मुखर होकर आवाज भी उठाने लगी। शबाना खातून का निकाह काफी कम उम्र में ही मो० अफरोज के साथ हो गयी। अफरोज शराबी था और निकाह के बाद ही शबाना को उसने प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। पति की प्रताड़ना से शबाना पूरी तरह टूट गयी। इसी बीच वह 2 बच्चों की माँ भी बन चुकी थी। शबाना बच्चों का वास्ता देकर अफरोज को जितना भी शराब पीने के लिए मना करती, अफरोज शबाना को उतना ही अधिक प्रताड़ित करता था। मगर शबाना ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने गरीब नवाज ग्राम संगठन की बैठक में महिलाओं को मद्यपान के खिलाफ आवाज उठाकर डटकर मुकाबला करने को प्रेरित किया। ग्राम संगठन की बैठक में निर्णय लिया गया कि अब ग्राम संगठन से जुड़े किसी भी परिवार के व्यक्ति को शराब पीने नहीं दिया जाएगा एवं शराब की भट्ठियों को भी बन्द कराया जाएगा।

नाम : शबाना खातून

समूह : रौनक जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : सिमरी बख्तियारपुर सिमरी

- शबाना की शादी काफी कम उम्र में हो गयी।
- पति के शराबी होने के कारण उन्हें काफी प्रताड़ना का सामना करना पड़ता था।
- ग्राम संगठन की बैठक में शराब के खिलाफ अभियान चलाने का निर्णय लिया गया।
- ग्राम संगठन की दीदियों ने शराब की भट्ठियों को तोड़ा।
- शराबबंदी के बाद अब शबाना की जिन्दगी में खुशियों लौट आई।

अब तो मानो शबाना को नई दिशा ही मिल गई। घर आकर उसने पुनः अफरोज को शराब छोड़ने को कहा मगर अफरोज नजदीकी शराब की भट्ठी पर पहुँचा। पीछे–पीछे शबाना भी शराब की भठ्ठी पर पहुँच गई। अफरोज ने जितने रुपये की भट्ठी वाले से शराब आर्डर किया, शबाना ने भी उतने ही रुपये का शराब का आर्डर किया। यह देख अफरोज के मानो पैरों तले जमीन खिसक गई। उसने धमकाते हुए शबाना को भट्ठी से घर जाने को कहा, मगर शबाना ने अफरोज से कहा कि अगर तुम घर के रुपये शराब पीने में बर्बाद कर सकते हो तो मैं क्यों नहीं? अगर तुम शराब नहीं छोड़ोगे तो मैं भी शराब पीना शुरु कर दूँगी। शराब की भठ्ठी पर बवाल बढता देख भीड़ जमा होने लगी। अफरोज को अपनी बेईज्जती का आभास होने लगा। वह बिना शराब पिये ही शबाना के साथ घर वापस आ गया तथा घर में शबाना को प्रताड़ित भी किया। मगर कुछ देर बाद उसे अपनी गलती का आभास हुआ और उसनें शबाना से भविष्य में शराब न पीने का वादा किया। बाद में शराब की भठ्ठी पर शबाना एवं अफरोज के हुए बवाल के बारे मे जानने जब ग्राम संगठन की दीदियां भट्ठी पर पहुँची। शुरू में शराब के भठ्ठी मालिक ने ग्राम संगठन की महिलाओं कमरुन,निशा,साजदा,मुमताज बेगम,जाहिदा,रौशन परवीन,नसीमा, आमिना एवं अफसाना खातून आदि को घमकाया परन्तु भीड़ बढती देख वह भट्ठी बन्द करके चला गया। महिलाओं की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अफरोज अब शराब छोड़ बकरी पालन का काम पूरे मनोयोग से करता हैं तथा शबाना एवं अपने दोनों बच्चों का पुरा घ्यान भी रखता है।

49. उजड़े घर फिर से बसे

नाम : सविता देवी

पता : मुशहरी (बंगलवा), हड़बडिया टोला, बंगलवा, धरहरा (मुँगेर)

मुशहरी बंगलवा, धरहरा, मुंगेर की सविता देवी अपने पति और 4 बच्चोंके साथ अपने जीवन को बेहतर तरीके से जी रही थी। उग्रवाद प्रभावित यह क्षेत्र चारों और पहाड़ी से घिरा हुआ है। यहाँ अतिपिछड़े समुदाय के लगभग 100 से 110 परिवार निवास करते हैं। ये परिवार सामाजिक एवं आर्थिक रूप से काफी पिछड़े हुए हैं।इन लोगों में शराब, ताड़ी जैसे नशा करने की लत लगी हुई थी।

इसी बीच सविता देवी समूह से जुड़ीं और गांव की समस्याओं पर धीरे–धीरे मुखर होने लगी। गांव में नशा की बढ़ती प्रवृति के कारण सविता देवी ने स्वयं सहायता समूहों एवं ग्राम संगठनों में इससे होने वाले नुकसानों पर चर्चा करना आरंभ कर दिया। धीरे–धीरे प्रत्येक दीदी को इस बात का अहसास हुआ कि शराब से उन्हें प्रत्येक स्तर पर नुकसान उठाना पड़ रहा है। समूह की दीदियों के साथ उनके परिजनों ने भी शराब नहीं पीने का संकल्प लिया। दीदियों के प्रयास ने अपना रंग दिखाना ही शुरू किया था कि इसी बीच मुख्यमंत्री द्वारा बिहार में शराबबंदी की घोषणा की गयी। शराबबंदी के बाद अब मुशहरी बंगलवा का माहौल पूरी तरह बदलने लगा है। लोग अब अपने परिवार पर ध्यान देते हैं और नशा जैसे कुरीतियों से दूर रहते हैं।

- ✦ शराब से होने वाले नुकसान को देखकर सविता देवी ने इसके खिलाफ आवाज बुलंद की।
- ✦ जीविका समूह एवं ग्राम संगठन का इनको काफी सहयोग मिला।
- ✦ शराब के खिलाफ गांव में कई स्तरों पर अभियान चलाया गया, जिसका काफी

50. मुन्नी ने नहीं हारी हिम्मत

मुन्नी देवी अपने शराबी पति से काफी परेशान थी। उनके घर में शराब के कारण रोज झगड़ा होता था। मुन्नी देवी के पति भाड़े की ऑटो चलाकर अपने परिवार की आजीविका चलाते थे। लेकिन नशे की लत के कारण पत्नी को प्रताड़ित करना, बच्चों को बेहरमी से पीटना आम बात थी। ज्यादा नशा करने के बाद वह बिना किसी वजह के वह गाँव के लोगो को गालियाँ देता एवं झगड़ा करने लगता था।

मुन्नी देवी कहती हैं कि– नशे की लत के कारण उन्होंने लोगों से कर्ज भी ले रखा था। घर की हालत बद से बदतर होती जा रही थी। घर में खाने को लाले पर गये थे। मुन्नी देवी आगे कहती हैं कि हद तो तब हो गयी, जब उसके पति ने नशे की हालत में 17 साल की बेटी की शादी तय कर दी। शादी का विरोध करने पर आत्महत्या की धमकी देते थे। अंत में जिद कर उन्होंने बेटी की शादी कम उम्र में ही कर दी। मुन्नी बताती हैं कि इसी दौरान जब वे शराब पीकर ऑटो चला रहे थे तो एक गड्ढे में उनका ऑटो पलट गया और वे बुरी तरह जख्मी हो गये। जबतक उनका इलाज चला तब तक उन्होंने शराब को हाथ नहीं लगाया लेकिन जैसे ही वे स्वस्थ हुए उन्होंने फिर से शराब पीना शुरू कर दिया। इन सब से परेशान मुन्नी देवी ने शराब के कारण होने वाली समस्याओं के बारे में जागरूक करना शुरू कर दिया।

ग्राम संगठन द्वारा आयोजित प्रभाव फेरी (मद्य निषेध) में भी मुन्नी देवी बढ़–चढकर हिस्सा ले रही थी। साथ ही अन्य दीदीयों को अपने पति को समझाने भेजती थी। इसी बीच सरकार द्वारा 1 अप्रैल से शराब बन्द करने के बाद मुन्नी देवी के पति सहित तमाम शराबियों ने शराब पीना बंद कर दिया। महिलाओं पर होने वाली प्रताड़ना में भी काफी कमी आई है। मुन्नी देवी कहती हैं कि–सरकार के शराबबंदी के फैसले से हम सब काफी खुश हैं। शराब बंद कर सरकार ने हमें एक नया जीवन दिया है।

नाम – मुन्नी देवी

पता : तेघड़ा, रतैठा, हवेली खड़गपुर, मुंगेर

- ✦ शराबी पति ने मुन्नी देवी का जीना मुहाल कर रखा था।
- ✦ शराब के कारण पति ने काफी पैसा कर्ज ले लिया।
- ✦ शराब पीकर ऑटो चलाने में दुर्घटनाग्रस्त हो गए। समूह से ऋण लेकर पति का ईलाज करवाया।
- ✦ ग्राम संगठन द्वारा शराबबंदी के लिए चलाये जाने वाले अभियान में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

51. सरकार के फैसले से बदला जीवन

लखीसराय जिले के रामगढ़ चौक प्रखंड के गुणसागर गांव को शराब ने पूरी तरह अपनी जद में ले रखा था। गांव के करीब–करीब सभी लोग किसी ना किसी नशे के शिकार थे। हालत यह थी कि शाम होते ही महिलाओं और बच्चों में इस बात का डर समा जाता था कि कब उनके पति/पिता शराब के नशे में आकर उनकी बेहरमी से पिटाई कर दे। उनके साथ गाली–गलौज करे। महिलाएं अपने सामने अपने बच्चों को पिटती देखती थीं और बच्चे अपने सामने अपने मां के साथ होने वाले प्रताड़ना को देखने को मजबूर थे। लेकिन भय और लाचारीवश उनके आगे अत्याचार को सहने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। इसी त्रासदी से रोज गुजरतीं थीं 'वर्षा जीविका स्वयं सहायता समूह' एवं 'क्रांति जीविका ग्राम संगठन' की सदस्य विमली देवी।

नाम– विमली देवी

समूह– वर्षा जीविका स्वयं सहायता समूह

ग्राम संगठन– 'क्रांति जीविका ग्राम संगठन'

जीविका से जुड़ने के बाद विमली देवी अपने अधिकारों और शक्तियों से अवगत तो होने लगी थीं, लेकिन अपने पति के शराब की लत के आगे वो लाचार हो जातीं। नशे में घर आकर वो अपनी पत्नी विमली देवी को गालियां देते। जब वो उन्हें शराब पीने से मना करतीं तो वे उनके साथ मार–पीट करने लगते थे। पिता के अत्याचार से इनके बच्चे भी परेशान थे। शराब के कारण घर आर्थिक संकट से भी गुजरने लगा था। शराब ने लालू चौधरी को भी शारीरिक रुप से काफी कमजोर कर दिया था।

इसी बीच बिहार सरकार के एक अहम फैसले ने निराश और हताश विमली देवी के लिए मानों संजीवनी सा काम किया। 1 अप्रैल 2016 से राज्य में शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लगते ही विमली के पति लालू चौधरी के जीवन में बदलाव आने लगा, बिन शराब के लालू चौधरी के लिए जीवन बिताना शुरु में तो काफी कठिन होने लगा, लेकिन विमली ने अपने पति का भरपूर साथ दिया और उन्हें इस स्थिति से उबरने में मदद की।अब लालू चौधरी की बुरी आदत छूट चुकी है। विमली देवी और बच्चों पर उनका अत्याचार भी अब बीते दिनों की बात हो गई है।

- शराबियों द्वारा अपने बच्चे और पत्नियों को काफी प्रताड़ित किया जाता था।
- डर से इन शराबियों के खिलाफ कोई आवाज नहीं उठाता था।
- शराब पीने के कारण लोगों का स्वास्थ्य भी काफी खराब रहने लगा।
- शराबबंदी लागू होने के बाद लोगों के जीवन में बदलाव।

52. रीता को मिली राहत

लखीसराय जिले के सूर्यगढ़ा प्रखंड के धनौरी गांव के चंदनपुरा पंचायत के संतोषी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य रीता देवी का जीवन संघर्ष से भरा हुआ था। गरीब रीता देवी के पति मांगो राम को शराब पीने की बुरी आदत थी, वे हर शाम शराब के नशे में डूब जाते थे। रीता देवी के लाख समझाने का भी उनपर कोई असर नहीं होता।

रीता देवी बताती हैं कि 'पति खेतिहर मजदूर का काम तो करते थे, लेकिन उन्हें मजदूरी से जो भी पैसे मिलते उसे बजाय अपने परिवार की जरूरतों पर खर्च करने के वे शराब में बरबाद कर देते थे। हद तो तब हो जाती थी, जब मेरे पैसे भी वे शराब पीने के लिए छिन लेते थे। उन्हें परिवार के भरण–पोषण कैसे हो, इसकी चिंता नहीं रहती थी। धीरे–धीरे इन्होंने शराब पीने के लिए दूसरे लोगों से उधार लेना भी शुरू कर दिया। रीता देवी आगे कहती हैं कि–घर चलाने के लिए मुझे मजदूरी करना पड़ा। मजदूरी के पैसे को किसी प्रकार बचा कर मैं बच्चों का लालन–पालन करती थी। 4 बेटी और 1 बेटे को पालने में कई प्रकार की दुश्वारियां भी झेलनी पड़ती थी।'

मुझे हमेशा अपने परिवार का भविष्य अंधकारमय नजर आता था। मैंने हर स्तर से अपने पति को समझाने की कोशिश की। शराब से होने वाले नुकसानों के बारे में उन्हें बताता था, लेकिन कुछ दिन सही रहने के बाद फिर से वे शराब पीने लगते थे। इसी दौरान बिहार सरकार के शराबबंदी के फैसले ने हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया। सरकार के इस फैसले के बाद अब मेरे पति सहित गांव का कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पीता है। रीता देवी यह भी बताती हैं कि एकाएक शराब छूटने के कारण मेरे पति को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन मैंने उनकी काफी मदद की। शराब को अलविदा कहने के बाद मांगो राम बोरा फैक्ट्री में मजदूरी करने लगा। अब मुझे घर चलाने के लिए आर्थिक मदद भी मिलनी शुरू हो गयी है। रीता देवी शराबबंदी के फैसले के लिए सरकार को धन्यवाद देती हैं।

नाम : रीता देवी
समूह : 'संतोषी जीविका स्वयं सहायता समूह'
पता : धनौरी, चंदनपुरा, सूर्यगढ़ा, लखीसराय

- रीता देवी अपने पति मांगों राम के शराब की लत से परेशान थी।
- मजदूरी का सारा पैसा मांगों राम शराब पीने पर खर्च कर देता।
- घर चलाने के लिए रीता देवी को मजदूरी करनी पड़ी।
- कभी–कभी तो रीता देवी के मजदूरी के पैसे को भी मांगों छिनकर शराब पी जाता था।
- शराबबंदी के बाद हालात अच्छे हो गये हैं। रीता के जीवन में खुशियां लौट आई हैं।

53. नशे से मिली मुक्ति

कदम जीविका स्वयं सहायता समूह की ललिता देवी के जीवन में शराब ने उथल–पुथल मचा रखा था। ललिता देवी के पति गजाधर तांती मजदूर थे और अपने कमाई का सारा पैसा शराब पीने में बर्बाद कर देते थे। 4 बच्चों के साथ ललिता देवी को परिवार चलाना काफी मुश्किल होता जा रहा था।

ललिता देवी कहती हैं कि–यही नहीं शराब पीने के बाद बच्चों एवं मेरे साथ मारपीट करना मेरे पति का प्रतिदिन का काम हो गया था। आसपास के लोगों के साथ गाली–गलौज करना आम बात थी।शराब ने हमारे परिवार की माली हालत खराब कर दी थी। उनके लिए पैसे का मतलब सिर्फ शराब में बरबाद करना था। न तो उन्हे अपने परिवार के वर्तमान की चिंता थी, न हीं भविष्य की कोई फिक्र। मैं कर्ज और उधार के सहारे किसी तरह घर चला रही थी। पति द्वारा दिए जा रहे मानसिक और शारीरिक अत्याचार से मैं पूरी तरह त्रस्त हो चुकी थी।

ललिता देवी बताती हैं कि–मैं काफी निराश हो चुकी थी, मेरे सारे प्रयास विफल हो चुके थे। अचानक मुझे पता चला कि सरकार राज्य में शराबबंदी को कानून बना रही है। बेहतर कल की आस खो चुकी मेरे जैसी महिलाओं के लिए यह फैसला किसी वरदान से कम नहीं था। सरकार के इस निर्णय से मेरे पति भी शराब के चंगुल से बाहर निकल आये। उन्होंने फिर से काम करना शुरू कर दिया। अब वो मुझ पर और बच्चों पर ध्यान देने लगे हैं। इतना ही नहीं उन्होंने जीवन–बीमा की एक पॉलिसी भी खरीदी है।

अब हमारे परिवार में फिर से खुशियां लौट आई है। ललिता देवी कहती हैं कि शराब पर प्रतिबंध ने हमारे हौसलों को एक नई उड़ान दी है।

नाम : ललिता देवी
समूह : 'कदम जीविका स्वयं सहायता समूह'
पता : गिद्धा, कैंदी, हलती, लखीसराय

- ✦ ललिता देवी के पति अपने कमाई का सारा पैसा शराब पर खर्च कर देते थे।
- ✦ शराब पीने के बाद ललिता देवी एवं बच्चों के साथ मारपीट करना आम बात थी।
- ✦ हालात इतने खराब हो गये कि ललिता आत्महत्या के लिए सोचने लगी।
- ✦ सरकार द्वारा पूर्ण शराबबंदी के बाद स्थिति में परिवर्तन आया और अब गांव का माहौल पूरी तरह बदल गया है।

54. मद्य निषेध अभियान बना सरिता के लिए वरदान

शिव जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य सरिता देवी का जीवन अत्यंत कष्ट से गुजर रहा था। सरिता देवी के पति पप्पू मिस्त्री शराब की बुरी लत के शिकार थे। शराब पीने के लिए उन्होंने अपने पूर्वजों की 10 धूर जमीन जो उनके पास एकमात्र सम्पत्ति थी, को भी गवां बैठे थे। नशे के कारण धीरे–धीरे परिवार के सामने खाने के भी लाले पड़ने लगे। पांच बच्चों का बड़ा परिवार चलाने में आर्थिक कठिनाईयां आड़े आने लगी। इसी बीच एक बच्चा पोलिया का शिकार हो गया। लेकिन आर्थिक कठिनाई के कारण उस बच्चे का ईलाज भी नहीं हो पाया। सरिता देवी बताती हैं कि–पति सारा दिन शराब के नशे में डूबे रहते। घर आकर वो मुझे और बच्चों के साथ काफी मारपीट करते थे। दिन–प्रतिदिन महाजन के कर्ज के दल–दल में मैं बुरी तरह फंसती चली गयी। हाल यह हो गया कि कभी–कभी इच्छा होती थी कि बच्चों के साथ खुशकुशी कर लूं। इसी बीच जीविका समूह की दीदियां एवं सामुदायिक उत्प्रेरकों ने मेरा हौसला बढ़ाया और शराबबंदी के लिए चलाये जा रहे अभियान के बारे में बताया।

सरिता देवी ने बताया कि–पड़ोस के गांव की 'फुलवारी जीविका ग्राम संगठन' की महिलाओं ने हमारे गांव में मद्य–निषेध अभियान के पक्ष में जुलूस निकाला। रैली में शामिल दीदियों ने बताया कि शराबियों को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर रही हैं। मद्य निषेध अभियान को सफल बनाने की अपील की। फुलवारी जीविका ग्राम संगठन की दीदियों के अभियान से प्रेरित होकर शिव जीविका स्वयं सहायता समूह ने मद्य–निषेध अभियान को सफल बनाने की शपथ ली।

कल तक खुद को मजबूर और लाचार सरिता देवी के साथ आज संगठन की शक्ति थी, अब वो अकेली नहीं थी। समूह की साथी महिलाओं के साथ मिल कर उन्होने अपने पति पर शराब छोड़ने का इस कदर दबाव बनाया कि मजबूर होकर उन्हें शराब से तौबा करना ही पड़ा। आज की सरिता देवी का जीवन कल से काफी अलग है आज वो खुश हैं।

नाम : सरिता देवी
समूह : 'शिव जीविका स्वयं सहायता समूह'
पता : हलसी, हलसी, हलसी, लखीसराय

- ✦ शराब के कारण सरिता देवी के पति ने अपने पूर्वजों की सारी संपत्ति बेच डाली।
- ✦ आर्थिक कठिनाई के कारण सरिता अपने बीमार बच्चे का ईलाज भी नहीं करवा पायी।
- ✦ ग्राम संगठन की दीदियों के प्रयास से गांव में शराब के खिलाफ अभियान चला।
- ✦ राज्य में शराबबंदी के बाद गांव का माहौल काफी बदल गया है।

55. अपने ही घर से शुरू किया शराबबंदी अभियान

शेखोपुरसराय प्रखंड के बेलाउ गांव की सकिला दीदी की जिन्दगी काफी बेहतर तरीके से चल रही थी। सकिला देवी के पति कार्यानंद प्रसाद गांव में ही एक छोटी सी किराना की दुकान चला रहे थे। जिससे रोजमर्रा का सामान बेचकर 200–300 रूपये की आमदनी हो जाती थी। इसी बीच ज्यादा पैसे कमाने की लालच में सकिला देवी के पति नें शराब बेचना शुरू कर दिया। बेचने के साथ साथ उन्होंने पीना भी शुरू कर दिया। अब यह हालत होने लगी कि वे जो भी कमाते सभी दारू में ही खर्च कर देते थे।

सकिला देवी बताती हैं कि–शराब पीने के चक्कर में उनका झगड़ा पति से हो जाता था। कई बार उनके पति गांव वालों से भी बेवजह झगड़ा कर लेते थे। मैंने इस बात की चर्चा अपने समूह एवं ग्राम संगठन में की। दीदियों की सहायता से मैंने अपने पति को समझाया। पति शराब नहीं पीने की बात कहते लेकिन फिर से पीने लगते। हमलोगों ने शराबबंदी का माहौल अपने गांव में बनाया। इसी बीच सरकार द्वारा शराबबंदी की घोषणा की गयी तो सभी दीदियों के चेहरे पर खुशियां फैल गयी।

दीदी अपने पति को शराब बेचने से मना करती रहती मगर पति नहीं माना । दीदी मन में ठानी कि मैं यह शुरुआत अपने घर से ही करूंगी। यही साबित हुआ दीदी ने शराब पीने तथा शराब बेचने के रोकथाम के लिए समूह तथा ग्राम संगठन के माध्यम से कार्य किया। अभियान की शुरूआत सकिला दीदी ने अपने घर से ही प्रारंभ की। जिसका नतीजा सामने यह आया कि आज शराब व्ययसायी तथा शराब को पीने वाला सुधर गये। आज गाँव का माहौल काफी ही शांत है। दीदियों के बीच डर की समाप्ति हो गई आज दीदी काफी ही खुश है। सरकार तथा जीविका का दीदियां आभार प्रकट कर रही हैं।

नाम : सकिला देवी
समूह : कृष्णा जीविका स्वंय सहायता समूह
पता : बेलाऊ, शेखोपुरसराय, शेखपुरा

- ज्यादा कमाने के चक्कर में सकिला देवी के पति ने शराब की दुकान खोली।
- बाद में वे खुद शराब के लत के शिकार हो गए।
- शराब पीने के बाद पति की प्रताड़ना भी उन्हें झेलनी पड़ती थी।
- ग्राम संगठन ने शराबबंदी के खिलाफ अभियान चलाया, जिसका व्यापक असर दिखा।
- शराबपीने वाले एवं शराब बेचने वाले दोनों सुधर गये।

56. सुहागी का शराबबंदी के लिए संघर्ष

खेलने–खाने की उम्र में सुहागी देवी मां बन गयी। सुहागी की शादी मात्र 14 वर्ष के उम्र में ही जीतेन्द्र राम के साथ कर दी गयी। कम उम्र में ही उनपर गृहस्थी का बोझ आ गया। सुहागी देवी बताती हैं कि– पति मजदूरी किया करते थे और उसी से परिवार चलता था। लेकिन उनमें एक बुरी आदत शराब पीने की थी। शराब के कारण घर–गृहस्थी बिखरने लगी। पति शराब के लिए कर्ज भी लेने लगे। हालत यह हो गयी कि उन्होंने अपनी सारी जमीन महाजन एवं शराब के ठेकेदारों के हाथ बेच दिया।

सुहागी देवी आगे बताती हैं कि आखिर घर चलाने के लिए मुझे भी मजदूरी करनी पड़ी। कभी–कभी तो पति मेरे मजदूरी के पैसे भी मुझसे छिन कर शराब पी जाते थे। मना करने पर मारपीट करते थे। कई बार तो घर का सामान भी बेचकर उन्होंने शराब पी लिया। सुहागी देवी कहती हैं कि इस समस्या के बारे में मैंने अपने समूह एवं ग्राम संगठन में बताया। मैंने उनसे मदद भी मांगी कि वे मेरे पति को शराब के लत से मुक्ति दिलावें। समूह एवं ग्राम संगठन द्वारा शराब के खिलाफ अभियान चलाया गया और मेरे पति सहित गांव के अन्य शराबियों को भी शराब नहीं पीने का आग्रह किया गया। इसी बीच हमारे ग्राम संगठन में यह सूचना मिली की कि बिहार में 01 अप्रैल से शराबबंदी हो रही है। फिर क्या हमलोगों के खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

सरकार के फैसले के कारण अब हमारे गांव में शराब की बिक्री नहीं होती है और अब कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पीता है। राज्य सरकार के शराबबंदी के फैसले के बाद सुहागी देवी काफी खुश रहती हैं। वे कहती हैं कि उन्हें यह खुशी 30 साल के बाद मिली।

नाम : सुहागी देवी
समूह : कृष्ण जीविका स्वंय सहायता समूह
पता : वेलाऊ, शेखोपुरसराय, शेखपुरा

- ✦ सुहागी की शादी काफी कम उम्र में कर दी गयी।
- ✦ पति ने शराब के कारण सारी जमीन महाजन के हाथ बेच दिए।
- ✦ मजबूरी में सुहागी को भी मजदूरी करना पड़ा।
- ✦ पति द्वारा मारपीट, प्रताड़ना आम बात थी।
- ✦ ग्राम संगठन को इस बारे में जानकारी दी। ग्राम संगठन ने त्वरित कार्रवाई करते हुए शराबबंदी के लिए कार्य आरंभ किया।
- ✦ शराबबंदी अभियान का व्यापक असर दिखा, शराब पीने और बेचने दोनों पर प्रतिबंध है।

57. कांति को मिली शराब से मुक्ति

दीदी : कान्ति देवी
समूह : कृष्ण जीविका स्वंय सहायता समूह
पता : वेलाऊ, शेखोपुर सराय, शेखपुरा

- कांति देवी की शादी 15 वर्ष की उम्र में ही एक शराबी के साथ कर दी गयी।
- इनके पति का काम सिर्फ शराब पीना था। घर के सामानों को बेचकर भी शराब पी जाते थे।
- घर चलाने के लिए भी कांति देवी को मजदूरी करनी पड़ती थी।
- पति के कृत्य से आजिज आकर उन्होंने ग्राम संगठन की मदद ली।
- ग्राम संगठन द्वारा शराबबंदी के लिए अभियान चलाया गया। जिसका व्यापक असर दिखा।
- शराबबंदी के फैसले ने कांति सहित सभी महिलाओं की जिन्दगी बदल दी।

कान्ति की शादी मात्र 15 वर्ष के उम्र में ही एक नशेड़ी के साथ उनके परिजनों ने कर दी।पति के शराबी होने के कारण उनके सारे सपने बिखड़ गये। पति मनोज तिवारी काम–धाम नहीं कर, सारा समय शराब पीने में बिताता था। कान्ति देवी मजदूरी कर अपने परिवार को चला रही थी। इस प्रकार कान्ति देवी अपने जीवन के 40 वर्ष बिता दिए। कान्ति देवी बताती हैं कि–नशे के लत से घर का अनाज, बर्तन तथा बकरी आदि को बेच कर वे शराब पी जाते थे। स्थिति दिन–प्रतिदिन बदतर होती जा रही थी। मैंने कई स्तर पर शराबबंदी के लिए प्रयास किया लेकिन स्थिति जस की तस बनी रही। हमने हिम्मत नहीं हारी, हमारी लड़ाई सिर्फ नशा के खिलाफ जारी रही। इसी बीच हमें पता चला कि बिहार राज्य में शराब पर पाबन्दी लग जाएगी और यह काम सरकार जीविका दीदियों को सौंप रही है।

इस सूचना से हम दीदी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। हम दीदियों ने गाँव में रैली निकालकर शराब बनाने वालों को समझाने तथा पुलिस के हत्थे पकडवाने का कार्य किया। कांति देवी कहती हैं कि शराबबंदी के बाद हम दीदियों के जीवन में काफी बदलाव आया है। अब ना तो हमारे पति और ना ही कोई गांव वाला शराब पीता है। शराब नहीं मिलने के कारण महिलाओं पर होने वाली हिंसा में भी कमी आई है। शराबबंदी के बाद कान्ति देवी सहित गांव की तमाम महिलाओं के जीवन में खुशियाँ छा गयी। सरकार के फैसले ने इनकी जिन्दगी ही बदल दी।

58. शराब का जहर

सात जन्मों तक साथ निभाने की कसमें खाने वाला पति ने अपनी पत्नी को ही शराब के कारण बेच दिया। यह वाकया हुआ सुदामा देवी के साथ। सुदामा देवी शेखपुरा प्रखंड के वीरपुर गांव की रहने वाली है। शराबी पति के कारण सुदामा देवी का जीवन कठिनाईयों से भर गया। पति के शराब पीने की आदत के कारण रोज झगड़ा हुआ करता था। पति नित्य प्रतिदिन घर का कोई ना कोई सामान बेचकर शराब पी जाया करता था। 7 बच्चों के साथ परिवार चलाना कठिन होता जा रहा था। एक दिन पति के आतंक से सुदामा बच्चों के संग मायके चली गयी, इस बात मौके का फायदा उठाकर उसके पति ने घर का सारा समान बेचकर सभी पैसों की शराब पी ली। मरता क्या ना करता। अंत में सुदामा फिर से घर आई और अपनी गृहस्थी की गाड़ी को किसी प्रकार खिंचना शुरू कर दिया है। इसी बीच एक दिन जब देर शाम तक उनके पति घर नहीं पहुंचे तो उन्होंने उसकी तलाश की। काफी खोजने के बाद वह एक भट्ठी में मिला। जहां उसने काफी शराब पी रखी थी और ठेका वाले को पैसा नहीं देने के कारण ठेका वाले ने उसे वहीं रोक रखा था।

जब सुदामा वहां पहुंची और अपने पति को ले जाने लगी तो उसके पति ने उस ठेका वाले को 5 सौ रूपये के एवज में सुदामा को वहीं बंधक बना भाग गया। काफी रोने–मनाने के बाद भी ठेका वाले उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। अंत में गांव के ही एक व्यक्ति से 5 सौ का कर्ज लेकर वह ठेका वाले के चंगुल से छूटी। इसी बीच सुदामा देवी जीविका समूह से जुड़ी और शराब के खिलाफ अभियान चलाना शुरू कर दिया। जिसका असर काफी साकारात्मक दिखा। इधर, सरकार द्वारा शराबबंदी की घोषणा ने तो सोने पे सुहागा का काम किया। अब सुदामा देवी के पति सहित गांव का कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पीता है। अब गांव का मौसम बदलने लगा है।

नाम : सुदामा देवी
समूह : गुलाब जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : वीरपुर, वेलाव, शेखपुरा, शेखपुरा

- सुदामा देवी के पति शराबी थे। घर का सामान बेचकर भी वे शराब पीते थे।
- शराब का विरोध करने पर सुदामा को कई प्रताड़ना का सामना करना पड़ता था।
- एक बार शराब के लिए सुदामा देवी को शराब भट्ठी संचालक के हाथ ही उसके पति ने बेच दिया।
- दूसरे से कर्ज लेकर सुदामा भट्ठी संचालक से अपने को बचाया।
- इन घटनाओं के बाद जीविका द्वारा गांव में शराब के खिलाफ जबरदस्त अभियान चलाया गया, जिसका व्यापक असर दिखा।

59. फूलो ने बदली बहोरवा की पहचान

खगड़िया जिले के अलौली प्रखंड के दक्षिण बहोरवा गाँव की पहचान अवैध शराब निर्माण के लिए थी। इस गाँव में करीब 30 घर के लोगो का मुख्य रोजगार शराब बनाना था। हर वो शख्स जो पीने–पिलाने का शौक रखता था, उसे इस इलाके की याद आज बहुत सता रही है। शराब के इस कारोबारी इलाके को ध्वस्त कर इतिहास बना दिया है सुदामा ग्राम संगठन की अध्यक्ष फूलो देवी ने।शराब के प्रति ये नफरत उनके ही बेटे ने पैदा की जो हर रोज शराब पीकर घर में ही गली गलौज और मारपीट करता था। शराब के नशे में धुत हर शाम घर में गाली गलौज करता था।

घर की ऐसी हालत देख फूलो देवी काफी परेशान रहने लगी। समूह से जुडी कई महिलाओ ने इस बारे में बात करके ठोस निर्णय लिया। पुलिस से इसकी शिकायत भी की गई पर परिणाम बेहतर नही रहे। कुछ दिनों बाद ही फिर से शराब की बिक्री शुरू हो जाती थी। इन सब से परेशान महिलाओ ने निर्णय लिया की जो करना है खुद करना है। शराब को अगर गाँव की दहलीज से बाहर रखना है,तो भट्ठियों को ध्वस्त करना होगा। बस इसी योजना को सफल बनाने के लिए समूह से जुड़ी सभी सदस्यों ने रणनीति बनानी शुरू कर दी।

शराब पर पूरी तरह अंकुश लगाने के लिय ग्राम संगठन स्तर पर मुहिम चलाने का फैसला लिया गया। आखिरकार सबके साथ ने महिलाओ में हिम्मत भरी और फिर अवैध रूप से चल रहे भट्टियो को ध्वस्त कर दिया गया।राज्य सरकार के पूर्ण शराब बंदी के फैसले के बाद फूलो देवी के साथ ही इस गाँव की सैकड़ों महिलाओं में इस बात की खुशी है कि अब शराब से इस गाँव को मुक्ति मिल गई।

नाम : फूलो देवी
समूह : चाँदनी जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : दक्षिण बहोरवा, चेरा खेरा, अलौली, खगड़िया

- ✦ बहोरवा गांव की पहचान अवैध शराब निर्माण के लिए था।
- ✦ अवैध शराब के कारण इस गांव के लोग शराब के नशे में धुत्त रहते थे।
- ✦ अपने बेटे को शराब के कारण बर्बाद होते देख फुलो देवी ने अवैध शराब निर्माताओं के खिलाफ मोर्चा खोल दिया।
- ✦ ग्राम संगठन स्तर से मुहिम शुरू हुई और कई शराब की भट्ठियों को तोड़ दिया गया।
- ✦ शराबियों के खिलाफ महिलाओं की हिम्मत काम आई और यह गांव शराब से मुक्त है।

60. आशा ने जगायी शराब बंदी की आस

एक समय था जब चौथम का मलपा गांव शराब के नशे में मानों पूरी तरह डूब गया था। शराब ने बच्चे हो या जवान सबको अपनी गिरफ्त में ले लिया। शराब के कारण महिलाओं के प्रताड़ना का अंतहीन सिलसिला जारी था। ऐसे में इस गाँव में शराब बंदी की आशा बन कर आई आशा पटेल।

आशा पटेल आंचल जीविका ग्राम संगठन की अध्यक्षा है। समूह की बैठकों में गांव में शराब बिक्री की बातों पर चर्चा की गई और इसके बाद ग्राम संगठनो की बैठक में भी इस पर चर्चा करते हुए व्यापक कार्यवाई का निर्णय लिया गया। ऐसे में आँचल ग्राम संगठन की अध्यक्षा आशा पटेल को इस अभियान की कमान दी गई और फिर शुरू हुई शराब बंदी के खिलाफ एक ऐसी जंग जिसके रंग में आज पूरा बिहार रंगा हुआ है. महिलाओ ने शराब बिक्री के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान महिलाओ ने अपने हाथो में डंडा, झाड़ू और सूप ले रखा था।

गाँव की सैकड़ो महिलाओ ने सड़को पर उतर कर शराबियों और शराब के ठेके पर ऐसा तांडव मचाया कि शराब कारोबारियों ने अपना कारोबार हमेशा के लिए गाँव से सिमटने में ही भलाई समझी। आक्रोश की इस आग को देख परचूनिया शराब बिक्रेताओ भी ने अपने दुकान का शटर हमेशा के लिए बंद कर दिया। इस कोशिश का सुखद परिणाम ये रहा की मद्य–निषेध दिवस (26 नवम्बर 2015) के अवसर पर सरकार की ओर से पूर्ण शराब बंदी के लिए आँचल जीविका ग्राम संगठन को एक लाख रुपये की राशि से पुरस्कृत किया गया। आज इस गाँव की तस्वीर बदल चुकी है. शराब में बर्बाद होने वाला पैसा अब स्वास्थ और तरक्की पर खर्च हो रहा है. नशे की लत से बर्बाद हो रहा बच्चो का बचपन अब अच्छे भविष्य की ओर अग्रसर है। सरकार के पूर्ण शराब बंदी के फैसले से इस गाँव की महिलाओ में काफी खुशी है।

नाम : आशा पटेल

समूह : इंद्रा जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : आँचल ग्राम संगठन, मलपा, भौली, चौथम, खगड़िया

- मलपा में शराब की दुकानें काफी संख्या में खुल जाने के कारण, अधिकांश लोग शराब पीने लगे थे।
- महिलाओं को शराबियों के कारण विभिन्न प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता था।
- आंचल ग्राम संगठन की अध्यक्ष आशा पटेल ने शराब के खिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाया।
- सैकड़ों महिलाएं सड़क पर उतरीं। कई दुकानों में तोड़–फोड़ किया गया। डर से शराब दुकानदारों ने शराब बेचना बंद कर दिया।
- आंचल ग्राम संगठन को गांव में शराबबंदी के लिए मुख्यमंत्री के हाथों एक लाख का पुरस्कार भी मिला।

61. शराब बंदी से बदली सुनीता की जिंदगी

छह बच्चों की मांग सुनीता देवी को उसके शराबी ने एकदिन इतना पीटा कि वह बुरी तरह घायल हो गयी। पति जितेन्द्र प्रसाद द्वारा घायल करने के बाद उसे ले जाकर शमशान में फेंक दिया। किसी राहगीर के द्वारा उसके कराहने पर उसे वहां से निकालकर अस्पताल में भर्ती कराया। सुनीता देवी बड़ी मुश्किल से स्वस्थ हुई, लेकिन उसके पति को इन चीजों से कोई मतलब नहीं था और वह अपनी कमाई का अधिकांश हिस्सा शराब पीने में ही खर्च कर देता था।

षराब पीने और पिलाने वाले की संख्या दिन प्रति दिन गाँव में बढ़ती जा रही थी जिसके कारण गाँव में लड़कियों–औरतों का घर से निकलना मुश्किल हो गया था। इससे गाँव की हर महिला परेशान थी। महिलाओं ने इस बात पर चर्चा अपने अपने समूहों में करनी शुरू कर दी। मद्य–निषेध कानून बनने पर महिलाओं को बल मिला। इस बात से प्रेरित होकर सुनीता देवी ने भी अपने सभी समूहों में गाँव में शराब बंदी को लेकर चर्चा शुरू कर दी। उसी गाँव के ग्राम संगठन आदि शक्ति जीविका महिला ग्राम संगठन ने शराब बंदी के लिए गाँव में रैली निकालने लगी। रैली के दरमयान गाँव के लोग इन महिलाओं को चिढाते रहते थे, कुछ तो यहाँ तक कह देते थे की " कुछु न होतई "। मगर 01 अप्रैल 2016 से जब शराब बंदी पुरे राज्य में लागू हो गई तो लोगो की सोच भी बदलने लगी। अब वही गाँव वाले इन महिलाओं की तारीफ करते नही थकते हैं। शराब बंदी का असर तो पुरे गाँव में हुआ। गाँव में जहाँ तहां शराब बिकना बंद हो गया। यही से ना जाने कितने परिवारों की किस्मत बदल गई। सुनीता देवी के पति जीतेन्द्र प्रसाद में भी बदलाव आने लगा। पहले वो हमेशा घर से बाहर रहता था अब वो घर पर भी समय देने लगा सुनीता देवी के जिंदगी में अब खुशियाँ ही खुशियाँ है। इसके लिए वो जीविका और बिहार सरकार को धन्यवाद देती हैं।

नम : सुनीता देवी
समूह : गंगोत्री जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : धनावा, सहौरा, इस्लाम नगर अलीगंज, जमुई

- शराब का विरोध करने पर शराबी पति ने सुनीता को बुरी तरह घायल कर, शमशान में फेंक दिया।
- बड़ी मुश्किल से सुनीता की जान बची।
- शराबियों के बढ़ते आतंक के खिलाफ महिलाएं गोलबंद हुईं और विरोध करना शुरू कर दिया।
- पहले लोगों ने मजाक किया, और बाद में विरोध लेकिन महिलाओं की बढ़ती ताकत के सामने उनकी नहीं चली और शराब की दुकानें बंद हो गयी।

62. शराबबंदी की जलाई मशाल

धधौरद्य गाँव पूर्ण रूप से शराब मुक्त है। प्रखंड सिकंदरा के पंचायत ईटासागर में स्थित ये गाँव आज मिसाल है, दूसरे गाँव के लिए। यहीं रहती हैं फुल कुमारी देवी। फूल कुमारी देवी अपने पति विजय साव के शराब पीने की आदत से काफी परेशान थी। मारपीट, प्रताड़ना, गाली–गलौज आम बात थी। फुल कुमारी देवी की स्थिति को देख कर गाँव की ही पुष्पा देवी ने उसे समूह से जोड़ा। समूह से जुड़ने के बाद फुल कुमारी को अपनी शक्ति का एहसास हुआ। उसने समूह में अपने पति के शराब के लत पर चर्चा की। समूह की महिलाओं ने फुलकुमारी देवी के पति को समझाया लेकिन वो नही माना। महिलाओं ने इस बात की चर्चा बंधन जीविका महिला ग्राम संगठन और उसी गाँव के दुसरे ग्राम संगठन, देवी जीविका महिला ग्राम संगठन में शराब बंदी को लेकर चर्चा की। जिसमें यह निर्णय लिया गया कि शराब बंदी केलिए अभियान चलायें। जो भी दुकानदार शराब बेचता है, उसे समझाया जाए। महिलाओं द्वारा अभियान आरंभ कर दिया गया। शराब दुकानदार महिलाओं की इतनी भीड़ देख कर सहम गया। उसने कहा कि हमें कोई दूसरा रोजगार बताओ तो हम शराब बेचना छोड़ देंगे । समूह की दीदियों ने कहा कि अपनी पत्नियों को समूह में जोड़ दें ताकि उसे कुछ लोन दिया जा सके। जिससे आप अपना कोई व्यवसाय अपनी पत्नी के साथ मिलकर कर सकें । दुकानदारों को ये बातें समझ में आ गई। उन्होंने शराब बेचना बंद कर दिया था । इस गाँव में पूर्ण शराब बंदी का नजारा होली से पहले ही दिखने लगा था। राधा देवी, जो शिव गुरु जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं वो बताती है कि–जब हमलोग रैली या शराब बंदी पर चर्चा करते थे तो गाँव के लोग हमारा मजाक उड़ाते थे। कहते थे कि– तुम्हारे कहने से कोई शराब बेचना बन्द कर देगा? लेकिन आज वे ही लोग गाँव की महिलाओं को इज्जत की नजर से देखते हैं।शराबबंदी का नतीजा यह हुआ कि फुल कुमारी देवी के पति ने भी शराब पीना ही छोड़ दिया। फुल कुमारी जैसी और भी कई महिलायें हैं जिसे इस शराब बंदी का लाभ मिला है और वे अब अपनी जिंदगी बेहतर तरीके से जी रही है ।

नाम : फूल कुमारी देवी
समूह : पार्वती जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : धधौर, ईटासागर, सिकंदरा, जमुई

- फुल कुमारी देवी अपने शराबी पति से काफी परेशान थी।
- पति की प्रताड़ना से तंग आकर उन्होंने समूह में इसकी शिकायत की।
- समूह ने ग्राम संगठन की मदद से शराबबंदी के समर्थन में अभियान चलाया।
- सामूहिक प्रयास से शराबबंदी हुई, गांव में सबने शराब पीना बंद कर दिया।

63. छंटा अंधियारा, लौटी खुशियां

नाम : प्यारी देवी
समूह : राधा जीविका, स्वयं सहायता समूह
पता : बोधगया, गया

- ✦ शराब ने प्यारी देवी के परिवार को तोड़ दिया, बच्चे ननिहाल में रहते थे।
- ✦ शराबी पति की प्रताड़ना से प्यारी देवी तंग आ चुकी थीं।
- ✦ गृहस्थी चलाने के लिए प्यारी देवी को मजदूरी करनी पड़ती थी।
- ✦ शराब के बढ़ते चलन को रोकने के लिए जीविका द्वारा विभिन्न स्तरों पर प्रयास शुरू हुए।
- ✦ जीविका के प्रयास का नतीजा बिहार में पूर्ण शराबबंदी के रूप में हमारे सामने है।

प्यारी देवी के पति अयोध्या मिस्त्री अत्यधिक शराब पीते थे। उन्हें लोगों ने काफी समझाया, भला–बुरा कहा, फिर भी वह शराब नही छोडते थे। शराब उनकी आदत में शामिल हो गया था। शराब के बिना वे रह नहीं पाते थे। शराब पर उनके बढ़ते खर्च के कारण उन्होंने घर चलाने में योगदान देना भी बंद कर दिया। शराब ने प्यारी देवी के परिवार को तोड़ दिया। उनके बच्चे उनके साथ नहीं रहकर अपने ननिहाल में रहते थे।

प्यारी देवी के साथ रोज प्रताड़ना की एक नई कहानी दुहराई जाती। प्यारी देवी कहती हैं कि– 'उनके पति की आदत लगातार बिगड़ती जा रही थी। सुबह से शाम तक वे सिर्फ शराब पीते थे। अपना सारा पैसा शराब में खर्च देते थे। घर चलाने में मदद नहीं करते थे, जिसके कारण मुझे भी मजबूरी में मजदूरी करना पड़ा। मैं मजदूरी कर बमुश्किल घर चला पा रही थी। कभी–कभी तो मेरे मजदूरी का पैसा भी शराब पीने के लिए वे छिन लेते थे। बेटी शादी के लायक हो गयी थी, लेकिन इनका ध्यान उसकी शादी की तरफ नहीं था। हमारी बेटी की शादी, दादा–दादी, चाचा–चाची ने मिलकर करवाया। हमारी स्थिति दिन–प्रतिदिन बदतर होती जा रही थी।'

प्यारी देवी ने बताया कि–हम अपने समूह और ग्राम संगठन द्वारा लगातार शराबबंदी की मांग करते रहे। हमने गांव में शराब के खिलाफ अभियान भी चलाय। अंत में सरकार ने हमारी आवाज सुनी और 1 अप्रैल 2016 से शराब बंदी कर दिया। प्यारी देवी कहती हैं कि–शराबबंदी के बाद इन्होंने शराब पीना बंद कर दिया। अपनी पिछली बातों पर इन्हें काफी अफसोस होता है। वे फिर से काम करना शुरू कर दिया और अपनी कमाई अब घर चलाने के लिए भी देते हैं। प्यारी देवी कहती हैं कि इस शराबबंदी से सबसे ज्यादा मुझे यह फायदा हुआ कि मुझे अब प्रताड़ना का शिकार नहीं होना पड़ता है और मेरा बेटा भी अब हमारे साथ रहता है। प्यारी देवी शराबबंदी के लिए जीविका एवं राज्य सरकार को धन्यवाद देती है। वह कहती हैं कि हमारे परिवार में खुशहाली लौट आई है, अंधेरा छंट गया है।

64. उठाया पत्थर और किया आसमां में सुराख

ग्राम संगठन : अम्बे ग्राम संगठन
पता : हरिदासपुर, आमस, गया

- हरिदासपुर गांव की पहचान पहले शराबी गांव के रूप में थी।
- इस पहचान को मिटाने के लिए महिलाओं ने पहलकदमी की।
- शराब बेचने वालों, शराब पीने वालों सभी पर जुर्माना वसुलने का निर्णय ग्राम संगठन की बैठक में लिया गया।
- दीदियों के इस निर्णय के खिलाफ उन्हें काफी डराया, धमकाया गया लेकिन दीदियों ने हिम्मत नहीं हारी।
- निर्णय को अमल में लाते हुए कई शराबियों से 1350 रूपये की वसूली की गयी।
- दीदियों के भय से गांव में शराब की बिक्री और पीने दोनों पर प्रतिबंध लग गया।

बिहार के आम गांव की तरह गया जिले के आमस प्रखंड का हरिदासपुर गांव भी है। लेकिन पूर्व में इसकी पहचान एक शराबी गांव के रूप में थी। यहां के अस्सी फीसदी लोग अपने आय का अधिकांश हिस्सा शराब पर खर्च कर देते थे। शराब इस गांव को एक बीमारी के रूप में खोखला करती जा रही थी। शराब के कारण इस गांव में गरीबी, अशिक्षा, घरेलू हिंसा, आपसी संघर्ष विरासत में मिली हुई थी। शराब ने इस गांव के सभ्य लोगों एवं महिलाओं के जीना मुहाल कर रखा था। आखिर इस कुरीति से मुक्ति पाने के लिए यहां की महिलाओं ने कदम बढ़ाया। जीविका समूह से जुड़ी दीदियों ने स्वयं सहायता समूहों व ग्राम संगठनों की बैठकों में शराब के कारण हो रही परेशानियों एवं उसके निदान पर चर्चा की। आखिरकार महिलाएं इस बात पे सहमत हुईं कि गांव में जो भी व्यक्ति शराब पीते हुए, बेचते हुए पाया जाएगा उस पर जुर्माना होगा। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि शराब पीने वालों को 1 हजार रूपया, शराब बेचने वालों को 5 हजार रूपया, दूसरे गांव से पीके आने वाले को 5 सौ रूपया वसूला जाएगा। साथ ही उन्हें कान पकड़ कर उठक–बैठक भी करनी होगी। इस निर्णय के क्रियान्वयन के लिए युवकों एवं महिलाओं की कई टीम बनाई गयी। इसके साथ ही शराब में आकंठ डूबे हरिदासपुर गांव में 11 सितम्बर 2015 से शराब पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी गयी।

आरंभ में तो थोड़ी परेशानी अवश्य हुई लेकिन जीविका समूह से जुड़ी दीदियां अपने निर्णय पर अटल रहीं। उन्हें कई स्तरों पर डराया, धमकाया गया। समूह से जुड़ी दीदियों को प्रताड़ित भी किया गया लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। शराबबंदी के कारण जिन लोगों के समक्ष रोजगार के संकट उत्पन्न हुए थे, उनके लिए भी रोजगार की संभावनाओं को तलाशा गया। युवकों एवं महिलाओं की टीम अपने कामों में मुस्तैद रहीं और गांव के जिन लोगों ने नियम को तोड़ा उनसे जुर्माना वसूला गया। जुर्माने की रकम 13 हजार 500 से ज्यादा वसूला गया। समूह की दीदियों ने अपने नियम को इतना सख्त बना रखा था कि एक बार एक समूह की दीदी ही शराब बेचते हुए पकड़ी गयी तो उन्हें भी दंड का भागी बनना पड़ा। गांव में नियमों का इतना डर व्याप्त हो गया कि ना तो अब इस गांव में कोई शराब पीता है और ना ही बेचता है। अब इस गांव की पहचान बदल गयी है। यहां के लोग अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रहे हैं। कल तक जिस गांव में लोगों के चेहरे तनाव भरे होते थे, अब वहां के लोगों के चेहरे पर एक विजयी मुस्कान है। एक संकल्प की जीत का गर्व है।

65. सामुहिक प्रयास से शराबमुक्त हुआ गांव

नाम : झुनिया देवी
शिव गुरू ग्राम संगठन

- झुनिया देवी अपने पति के शराब पीने की आदत से परेशान थी।
- शराब के कारण झुनिया ने अपना व्यवसाय भी चौपट कर लिया।
- ग्राम संगठन में जब इस मुद्दे पर चर्चा हुई तो, इस बात पर सहमति बनी कि शराबबंदी के लिए व्यापक अभियान चलाया जाए।
- शराबबंदी अभियान कई स्तरों पर आयोजित किया गया, जिसका व्यापक असर दिखा।

झुनिया देवी अपने पति के शराब पीने आदत से परेसान थी। झुनिया देवी कहती हैं कि–पति के शराब पीने की लत से बच्चे और परिवार का भविष्य खराब हो रहा था। पति किशोरी यादव दूध बेच कर परिवार का भरण–पोषण करते थे। प्रति दिन 300–350 रु. की कमाई हो जाती थी । पर पति के रोज–रोज पीने की आदत की वजह से परिवार में भोजन की समस्या उत्पन्न हो गयी थी। झुनिया देवी बताती हैं कि–पति की ऐसी आदत खराब हो गयी थी, कि दूध बेचने के समय में भी पीने लगते थे।

जिसके कारण दूध भी फट जाया करता था। ग्राहकों को दूध नहीं मिलने से उनको आमदनी भी नहीं होती थी। झुनिया देवी कहती हैं कि पति की आदतों से तंग आकर मैंने अपनी समस्या ग्राम संगठन कि बैठक में रखी। ग्राम संगठन के दीदियो ने निर्णय लिया कि इस ग्राम में शराब बंदी के लिए व्यापक आन्दोलन करेंगी। इसकी रूप–रेखा भी तैयार हो गयी कि कौन दीदी क्या करेंगी ? यह आन्दोलन एक क्रांति का रूप ले लिया। आम सभा व नुकड़ नाटक के माध्यम से शराब कि हानि के बारे में बताया जाने लगा। परिवार में किस तरह से शराब के सेवन से बच्चो पर बुरा प्रभाव पड़ता है और पैसे कि बर्बादी से बच्चो की पढाई व पोषण भी नहीं हो पाता के बारे में बताया जाने लगा।

इन गतिविधियों में सभी लोगो ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में सभी लोगो ने शपथ लिया कि अब ना ही यहाँ शराब बेचने देंगे और नाही पीने देंगे। इस आम सभा का असर ऐसा हुआ कि गाँव लोगों ने शराब सेवन बंद कर दिया। ग्राम संगठन की दीदियो को ग्राम के सभी लोग धन्यवाद देते हैं कि आज उन्ही जीविका दीदी की वजह से हमारा ग्राम शराब मुक्त हुआ। अब झुनिया देवी और पति व बच्चे का सही से परिवार का पोषण कर रहे हैं। अब वो ग्राम संगठन शराबबंदी के लिए मिसाल बन गयीं हैं।

66. घर में लौटी सुख–शांति

नाम : मुन्नी देवी
समुह : चंदा ग्राम संगठन,
पता : रामपुर, आमस, गया

- शराब के कारण मुन्नी देवी का परिवार बर्बाद हो गया।
- पति शराब पीकर गाड़ी चलाने में दुर्घटनाग्रस्त हो गए।
- जीविका से ऋण लेकर पति का ईलाज करवाया और घर में भोजन की व्यवस्था की।
- शराबबंदी के बाद अब पति ने शराब पीना बंद कर दिया है। अब वह अपने परिवार के भविष्य क लिए सोचना शुरू कर दिया है।

गया जिले के पहारपुर गाँव में चंदा ग्राम संगठन की सदस्य मुन्नी देवी के परिवार को शराब ने तबाह कर रखा था। शराब के शिकार उसके पति को शराब के सामने कुछ भी नहीं दिखता था।

मुन्नी देवी बताती हैं कि उनके घर में उनके अलावे उनके पति अशोक साव,बच्चे और सास–ससुर रहते है। पति के शराबी होने के कारण घर की स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। शराब मेरे परिवार का भविष्य खराब करता जा रहा था।मुन्नी आगे कहती हैं कि–पति अशोक साव राज मजदुरी कर परिवार चलाते थे। प्रति दिन के हिसाब से 300–350 रु. की कमाई थी। बच्चों की पढाई भी शुरू हो चुकी थी। रोज रोज पीने की आदत की वजह से परिवार के सामने भोजन का संकट आ गया था। बच्चों की पढाई भी बंद होने लगी थी।

मुन्नी आगे बताती हैं कि–एक दिन ऐसा आया कि जब पति अशोक साव शराब के नशे में दुर्घटनाग्रस्त हो गए। जिसमें उनके पांव की हड्डी टूट गयी। अब हमारे पास ना ही इलाज के लिए पैसे थे और ना ही खाने के लिए अनाज। मुन्नी देवी कहती हैं कि इस बुरे वक्त जीविका मेरे काम आया। चंदा ग्राम संगठन से एच.आर. एफ ऋण से 10000 लेकर पति–अशोक साव का इलाज करवाई। साथ ही भोजन के लिया एफ. एस.एफ. ऋण से 50 किलो ग्राम चावल व 5 किलो दाल लिया। इसी बीच बिहार में शराब बंदी कानून लागु हुआ। तब से गाँव में शराब नहीं बनता है और नहीं लोग पीते है। अब हमारे पति ठीक हो चुके हैं। अब हमारे पति शराबबंदी की वजह से शराब नहीं पीते हैं और नहीं घर में लड़ाई करते है। पति द्वारा प्रतिदिन के हिसाब से 350 रु. की कमाई अब बच्चों के पढाई और एच.आर.एफ. और एफ.एस.एफ. ऋण अपने ग्राम संगठन को वापस कर रही हूँ। अब हमारे घर में खुशी का माहौल है और पैसे की बचत हो रहा है। अब हमारे बच्चे पर नहीं बुरा प्रभाव पड़ रहा है और पति जो समय और पैसा शराब पीने में बर्बाद करते थे वो समय बच्चे को पढ़ाने में देते हैं।

67. बदल गयी गांव की पहचान

नाम : प्रभा देवी
समूह : चमेली जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : प्रहन्दा, गया

- गया का प्रहन्दा गांव एक ऐसा गांव था, जहां के अधिकांश लोग सुबह की चाय की जगह शराब पीना पसंद करते थे।
- शराबबंदी के बाद इस गांव की तस्वीर बदल गयी है।

बिहार में पूर्ण शराबबंदी के पूर्व कई गाँव ऐसे भी थे, जहाँ के गरीब ग्रामीण सुबह–सुबह चाय के बदले शराब ही पीते थे। अहले सुबह से ही चाय की दुकान के बदले शराब की दूकान पर जमावड़ा लग जाता था। गया जिले के प्रहन्दा गाँव की रहनेवाली प्रभा के पति भी ऐसा ही करते थे। प्रभा देवी चमेली जीविका स्वयं सहायता समूह तथा आशा जीविका महिला ग्राम संगठन की अध्यक्ष हैं। हर रोज सुबह–सुबह पति के शराब पीने की लत से प्रभा परेशान रहती थी। पति कोई काम नहीं करते थे। प्रभा मजदूरी कर थोड़े पैसे भी लाती थी तो उसके पति रात में उसके पैसे चुराकर या छिनकर शराब पी जाया करते थे। जिसके कारण घर की हालत दयनीय हो गई थी। प्रभा ने कई बार अपने पति को समझाया। गांव के लोगों ने भी समझाया, लेकिन पति समझने के बजाय झगड़ा करते थे। लेकिन जबसे शराबबंदी हुई है, प्रभा के पति ने शराब पीना छोड़ दिया है। अब बोधगया जाकर मजदूरी करते हैं। मजदूरी के पैसे से घर के लिए सब्जी और राशन लाते हैं। प्रभा शुक्रगुजार है सरकार कि जिसने सूबे में शराबबंदी कर महिलाओं की झोलियाँ खुशियों से भर दी है।

68. शराबमुक्त गांव के लिए शुरू की मुहिम

शोभा देवी का परिवार अत्यंत ही गरीब था। आकस्मत वो किसी खर्च के हेतु गांव में ही 5 प्रतिशत महीना पर ब्याज लिया करते थे। गांव में सूदखोरी तथा अवैध शराब का घंघा जोर–शोर से चलता था।

शोभा देवी जीवन ज्योति जीविका समूह से 2014 वर्ष में जुड़ी। वैसे गाँव में चल रहे अवैध शराबखोरी से सारी महिलायें परेशान थी लेकिन अपने आप को अकेला पाकर किसी भी महिला द्वारा इसके विरूद्व आवाज उठाने की हिम्मत नहीं थी। समूह में सभी महिलाओं में एक साथ बैठने से सभी महिलाओं में इसके विरूद्व आवाज उठाने की हिम्मत आयी। महुआवा गांव में अवैध शराब का घंघा बहुत वर्षो से चला आ रहा था। समूह के बैठक के दौरान अपनी संख्या तथा क्षमता को कम देखते हुए इस मुद्दे को ग्राम संगठन में चर्चा कर इस अवैध शराब भठ्ठी के खिलाफ तत्कालीन जिलाधिकारी को 108 महिलाओं के हस्ताक्षर कराकर, शोभा देवी के द्वारा जिलाधिकारी को पत्र दिया गया। प्रशासन से भी तत्पर सहायता न मिलता देख ग्राम संगठन की सभी महिलायें एकजुट हुई तथा हाथों में झाडु लेकर अवैध शराब भठ्ठी पर जाकर उसे पूरी तरह से तोड़ दिया।

नाम : शोभा देवी
जीवन ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : ग्राम वाटगंज, रामगढ महुआवा, चकिया, पूर्वी चम्पारण

- महुआवा गांव में अवैध शराब का घंघा बहुत वर्षो से चला आ रहा था।
- शोभा देवी के द्वारा अवैध शराब भठ्ठी के खिलाफ 108 महिलाओं के हस्ताक्षर के साथ जिलाधिकारी को पत्र दिया गया।

69. शराब पर लगी रोक

नाम :
समूह : किरण जीविका ग्राम संगठन
पता : डिरावॉ, बौधगया, गया

- किरण जीविका ग्राम संगठन ने गांव में बिक रहे शराब के खिलाफ अभियान छेड़ा।
- शराबबंदी के खिलाफ अभियान में दीदियों को कई बार मुश्किलों का सामना भी करना पड़ा और पुलिस की मदद भी लेनी पड़ी।
- दीदियों के अभियान का व्यापक असर दिखा और गांव में शराब की बिक्री पूरी तरह बंद हो गयी।
- ग्राम संगठन द्वारा गांव में एक बोर्ड भी टांग दिया गया है, जिसमें यह सूचना है कि इस गांव में शराब पीना मना है।

किरण जीविका ग्राम संगठन द्वारा अनेक समाजिक तथा आर्थिक कार्य किये गये हैं। जिसमें शराब बंदी पर किये गए इसके प्रयास की सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। डिरावां गांव बाजार के नजदीक होने के कारण यहां शराब बनाने का रोजगार काफी तेजी से चल रहा था। गॉव के भी अधिकतर लोग शराब पीने के आदि हो चुके थे। नशा में होने के बाद ग्रामीण आपस में झगड़ा भी करने लगते थे। जिसके कारण केस–मुकदमा भी ज्यादा होने लगे थे। कुछ दीदी के पति तोघर में खाने वाले अनाज को बेच कर शराब पी जाया करते थे।

ग्राम संगठन की दीदी ने आपस में विचार किया कि क्यों न हमलोग सभी दीदी मिल कर शराब बनाने बाले को ही बंद करवा दें। सभी दीदियों ने एक दिन 18 जनवरी 2015 को पुरे गॉव में घुम–घुम कर शराब बनाने बाले वाले से बात किया। दीदियों ने उनसे साफ कहा कि शराब बनाना बन्द कर दें। ताकि गांव के किसी भी व्यक्ति को शराब नहीं मिले और वे शराब का सेवन नहीं कर सकें। सारी दीदियां एक सप्ताह बाद फिर से उन दुकानदारों एवं उनके घरों में खोज–बीन कीं। घरों मे जाकर खोज–बीन करने पर एक दो घर में शराब भी मिला उसकों बरबाद करने लगी तो उस घर की दीदी तथा उसके पति ग्राम संगठन के दीदी से झगड़ा करने लगे। दीदी को बहुत समझाया गया कि यह एक प्रकार का जानलेवा पदार्थ है इसके उपयोग से काफी नुकसान होता है। इसके बाद भी दीदी नहीं समझ पायीं तथा उनके पति लाठी निकाल कर सभी दीदी को भगाने लगे।

इसी बीच ग्राम संगठन की दीदी ने चेनकी थाना में फोन करके पुरी बतायी। थाना प्रभारी आये और दीदियों को सहयोग किया। शराब बेचने वालें को पुलिस ने हिरासत में एक दिन रखा। दीदियों से माफी मांगने के बाद उसे छोड़ा गया। दीदियों ने गांव में एक बोर्ड भी टांग दिया कि यहां शराब पीना मना है।

70. शराब के खिलाफ बना माहौल

पूनम देवी बजरंगी स्वयं सहायता समूह एवं उपकार ग्राम संगठन की अध्यक्ष हैं। सामाजिक मुद्दों पर ये हमेशा से सक्रिय रही हैं। कुछ वर्षों पूर्व जब सिमराहा गांव में शराब की दुकानें काफी संख्या में खुल गयीं तो शराब पीने वालों की संख्या में भी काफी बढ़ोत्तरी हो गयी। शराब पीने के बाद शराबियों के आतंक से गांव की महिलाएं, बच्चे आदि काफी परेशान रहते थे।

शराबी गांव में खौफ का माहौल बनाए हुए था। शराब पीकर किसी से भी लड़ाई कर लेना, गाली–गलौज करना उन लोगों के लिए आम बात थी। शराबियों के आतंक से समूह की दीदियों को भी परेशानी होने लगी। आखिरकार इस समस्या पर समूह की बैठक में चर्चा की गयी। समूह की अध्यक्षा पूनम देवी ने इस मुद्दे की गंभीरता समझ शराबबंदी के खिलाफ अभियान चलाने का निर्णय लिया। पूनम देवी ने पहले गांव के शराबियों को चिन्हित किया। फिर उनसे समूह में मिलकर शराब नहीं पीने की सलाह दी। उन्हें शराब के अवगुणों के बारे में बताया गया। साथ ही उन्हें यह भी धमकाया गया कि अगर उन्होंने शराब पीना नहीं छोड़ा तो उन्हें पुलिस के हवाले भी किया जा सकता है। समूह की इस पहल से कुछ शराबियों ने शराब पीना बंद कर दिया लेकिन कुछ शराबियों ने इन बातों को मानने से इंकार कर दिया।

समूह सदस्यों द्वारा गांव में प्रभातफेरी और जागरूकता रैली का भी आयोजन शराबबंदी के लिए किया गया। जिससे गांव में शराब के खिलाफ एक माहौल बना। इसी बीच 01 अप्रैल से सरकार द्वारा शराबबंदी की घोषणा से शराबियों के हौसले जहां पस्त हो गये, वहीं दीदियों के हौसलों ने उड़ान भरी। अब गांव का माहौल काफी बदल गया है। महिलाएं एवं बच्चों के जीवन में एक बार फिर से खुशियां शामिल हो गयी हैं।

नाम : पूनम देवी,
समूह : बजरंगी स्वयं सहायता समूह,
पता : सिमराहा, भेलवा, मधेपुरा

- सिमराहा गांव शराबियों के आतंक से परेशान था।
- महिलाओं एवं बच्चों के बीच शराबियों का खौफ फैला हुआ था।
- समूह की बैठक में शराबियों के खिलाफ अभियान का निर्णय लिया गया।
- समूह द्वारा शराबियों की पहचान कर, उनकी काउंसलिंग की गयी।
- समूह के अभियान का काफी व्यापक असर हुआ और गांव में शराब एवं शराबियों के खिलाफ माहौल बना।

71. शराब ने बिगाड़ा, जीविका ने संवारा

बबिता देवी को शराब ने कई गम दिए। शराब के कारण उन्हें मानसिक, आर्थिक एवं शारीरिक परेशानियां झेलनी पड़ी। उनके पति को शराब ने पूरी तरह अपने जद में ले लिया था। पति कमलेश्वरी सदा भाड़े का ट्रेक्टर चलाते थे। लेकिन शराब पीने के कारण घर चलाने के लिए पैसा नहीं देते थे। सारा पैसा शराब पीने में खर्च कर देते थे। बबिता के समक्ष घर चलाने की समस्या भी मुंह बाये खड़ी रहती थी। बबिता देवी ने कई बार अपने पति को शराब नहीं पीने का अनुरोध किया, लेकिन पति नहीं मानते थे। बबिता बताती हैं कि–एक बार उनके पति शराब पीकर घर आ रहे थे कि रास्ते में एक तालाब में गिर पड़े। आस–पास के लोगों ने बड़ी मुश्किल से उन्हें तलाब से निकाला। ईलाज के बाद बड़ी मुश्किल से इनकी जान बची। इस घटना से भी उन्होंने कोई सबक नहीं लिया और वे शराब पीते रहे। बबिता देवी आगे कहती हैं कि–मैंने इस समस्या को ग्राम संगठन की बैठक में रखा। समूह की दीदियों ने मेरी समस्या से अपनी सहमति जताते हुए कहा कि दीदी यह सिर्फ आपकी समस्या नहीं है, हमसबों की समस्या है। आखिरकार ग्राम संगठन ने शराबबंदी के खिलाफ अभियान चलाया। इस अभियान में बबीता देवी ने भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया। आखिरकार 01 अप्रैल को सरकार द्वारा बिहार में शराबबंदी की घोषणा की गयी। इस घोषणा से हमसब दीदियों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। अब मेरे पति शराब नहीं पीते हैं। घर चलाने के लिए समय से पैसा भी देते हैं और परिवार पर ध्यान देते हैं।

नाम : बबिता देवी,
समूह : खुशी स्वयं सहायता समूह,
पता : सिमराहा टोला, भेलवा, मधेपुरा सदर, मधेपुरा

- ✦ शराबी पति से बबिता देवी काफी परेशान थी।
- ✦ एक बार शराब पीकर उनके पति दुर्घटनाग्रस्त भी हो गये। बड़ी मुश्किल से जान बची।
- ✦ ग्राम संगठन द्वारा चलाये गये अभियान में बबिता देवी ने भी सक्रियता पूर्वक भाग लिया।
- ✦ ग्राम संगठन के शराबबंदी अभियान का व्यापक असर हुआ। गांव अब पूरी तरह शराबमुक्त है।

72. महिलाओं के हौसलों को सलाम

नाम : मेहनत संकुल स्तरीय संघ,
पता : रामपुर, मीरगंज, मुरलीगंज, मधेपुरा

- मुरलीगंज प्रखंड के कई क्षेत्रों में शराब की दुकानें तेजी से खुलने के कारण शराबियों की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी हुई।
- शराबियों का आतंक गांवों में फैला हुआ था। गाली–गलौज, मारपीट करना शराबियों के लिए आम बात थी।
- संकुलस्तरीय संघ द्वारा शराब की दुकानों एवं शराबियों के खिलाफ आंदोलन का शंखनाद किया गया।

मुरलीगंज प्रखंड के मीरगंज, रहटा, रामपुर आदि गांवों में शराब की दुकानें तेजी से खुल रही थी। शराब की उपलब्धता आसान होने के कारण शराब पीने वालों की तादाद में नित्य बढ़ोत्तरी हो रही थी। जिसके कारण गांव के आस–पास का माहौल खराब होता जा रहा था। मारपीट, गाली–गलौज के साथ केस मुकदमों में भी तेजी आ रही थी। शराब के कारण स्थिति बद से बदत्तर होती जा रही थी। शराब के कारण जीविका दीदियों को भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। आखिरकार एक दिन मेहनत संकुलस्तरीय संघ में इस बात पर काफी गहन चिंतन–मनन किया गया कि आखिर शराबबंदी के लिए क्या किया जाए? आखिर में जीविका दीदियां इस बात पर सहमत हुईं कि शराबबंदी के लिए चरणबद्ध तरीके से जागरूकता अभियान चलाया जाए। जिस पर सभी दीदियों ने अपनी सहमति दी। मेहनत संकुल स्तरीय संघ द्वारा गांव स्तर पर प्रभात फेरी, जागरूकता रैली, संकल्प सभा आदि का आयोजन किया गया। इन अभियानों में कई बार थोड़ी–बहुत दिक्कत आई लेकिन धीरे–धीरे गांवों में शराबबंदी के लिए माहौल बनना शुरू हुआ। शराबियों ने महिलाओं के डर से शराब पीना बंद कर दिया। कई लोग अब चोरी–छिपे शराब पीते थे। आखिरकार सरकार द्वारा जीविका दीदियों के मांग पर शराबबंदी का निर्णय लिया गया। जिसका काफी व्यापक असर देखा गया। अब ना तो कहीं शराब की दुकानें दिखती है और ना ही कहीं अब शराबी ही दिखते हैं। गांव का माहौल बदलने लगा है। कलतक एक दूसरे के जान के दुश्मन ग्रामीण अब मिलजुल कर रहते हैं।

73. जीविका दीदियों की पहल लाई रंगत

समुह	:	श्रीकृष्णा ग्राम संगठन,
पता	:	संथाली टोला, जोरगामा, मुरलीगंज, मधेपुरा

- ✦ अवैध शराब व्यवसाय से संथाली टोला के दर्जनों परिवार जुड़े हुए थे।
- ✦ शराब बेचना एवं पीना इनके जीवनशैली में शामिल था।
- ✦ जीविका द्वारा शराबबंदी अभियान के तहत यहां लोगों के बीच शराब के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाया गया।
- ✦ संथाली टोला की महिलाओं को जीविका समूह से जोड़ा गया। अब वहां खुशहाली है।

कहते हैं—जहां चाह, वहां राह। इस कहावत को सही साबित किया मुरलीगंज प्रखंड के संथाली टोला, जोरगामा की सैकड़ों संथाली महिलाओं ने। इस संथाली टोला में लोगों का मुख्य व्यवसाय अवैध देसी शराब एवं ताड़ी का निर्माण एवं उसकी बिक्री थी। दर्जनों परिवारों की रोजी—रोटी इस कारोबार से होती थी। यही नहीं ये लोग भी चाहे महिला हो या पुरूष सभी शाम होते ही शराब के नशे में डूब जाते थे। जीविका द्वारा शराबबंदी के लिए चलाए जा रहे अभियान की धमक इन गांवों तक पहुंची तो लोगों ने पहले इसका काफी विरोध किया। सरकार द्वारा शराबबंदी की घोषणा के बाद कई बार जिला प्रशासन द्वारा इन क्षेत्रों में बैठक कर इन संथाली समुदायों को समझाया गया कि वे शराब बनाने एवं बेचने के इस अवैध कारोबारों को छोड़ दें। जिला प्रशासन की सलाह पर संथाली लोगों ने मांग की कि अगर हम अपने पुश्तैनी धंधा को छोड़ेंगे तो क्या काम करेंगे। हमारे परिवार का भरण—पोषण कैसे होगा ? काफी मान मनौव्वल के बाद दर्जनों संथाली परिवार अपने पुश्तैनी धंघा को छोड़ने तैयार हो गये। इधर, जीविका द्वारा संथाली टोला में अपनी गतिविधि आरंभ की गयी । शराब के कारोबर से जुड़ी

महिलाओं को जहां समूह के साथ जोड़ा गया, वहीं उनके पतियों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण एवं रोजगार की संभावनाओं पर कार्य किया जा रहा है। कल तक अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री के लिए बदनाम संथाली टोला, जोरगामा की आबो हवा बदल रही है। यहां के माहौल में परिवर्तन आ रहा है। अब यहां कि महिलाएं समूह से जुड़ गयी हैं और अपने परिवार के बेहतरी के लिए विचार करना शुरू कर दिया है। गीता कुस्कु कहती हैं कि—शराब का कारोबार हमलोग मजबूरी में करते थे। अब उस कारोबार से मुक्ति मिली तो अच्छा लगता है। अब मैं अपने बच्चों को पढ़ा पाउंगी और बड़ा आदमी बना पाउंगी। शराबबंदी के कारण गीता जैसी सैकड़ों महिलाओं की आंखों में कई नये सपनों ने जगह ले ली है।

74. शराब के खिलाफ जंग

गांव राहुल नगर के चांदनी जीविका महिला ग्राम संगठन से जुड़े लक्ष्मी जीविका के एक सदस्य सोनमंती देवी पति कैलाश मांझी शराब बहुत पीते थे। शराब पीकर पत्नी तथा बच्चे को मारना और गांव में लड़ाई तथा गाली देना घर आते ही खाना की जगह पहले शराब पीता था। घर उसकी मजदूरी पर चलता था, जो भी मजदूरी मिलती वह शाम में शराब में खत्म हो जाती थी। जिससे परिवार का गुजर बसर ठीक से नहीं हो पा रहा था। बच्चे भरपेट भोजन भी नहीं खाते थे। सोनमानती देवी समय पर अपना बचत समूह में जमा नहीं कर पाती थी।स्थिति काफी विकट थी। हाल यह था कि हर स्तर पर सोनमंती देवी को संघर्ष करना पड़ता था। लेकिन शराबबंदी के बाद स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। सोनमनती बताती हैं कि– शराबबंदी ने हमारे जीवन में काफी बदलाव लाया है। अब वे अपनी कमाई का सारा पैसा घर के खर्चों में देते हैं।

नाम : सोनमंती देवी
ग्राम संगठन : चांदनी जीविका महिला ग्राम संगठन
पता : भलूआ डोभी , गया

- सोनमनती के पति काफी शराब पीते थे।
- शराब के कारण उनकी आर्थिक स्थिति चरमरा गयी थी।
- शराबबंदी के बाद स्थिति में परिवर्तन आया है। अब गांव में कोई भी शराब नहीं पीता है।

सोनमंती देवी बताती हैं कि अब हमें अपने बच्चों का भविष्य उज्जवल दिख रहा है। शराब बंद होने से, गरीब या अमीर परिवार में जो महिला पीड़ित थीं, वे आज काफी खुश हैं।

75. शराब मुक्त हुआ गांव

कविता देवी चंचल स्वंय सहायता समूह ,कमला ग्राम संगठन से जुड़ी हुई हैं। कविता देवी बताती है कि मेरे पति दारू पीते थे। कमाई का सारा पैसा दारू में खर्च कर देते थे । घर चलाने में भी हमें काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। अंत में मैं जीविका से जुड़ी और जीविका सहेली के रूप में काम करने लगी। उसी से घर का खर्च चलाने लगी। शराब के कारण घर में कलह होना आम बात थी। घर में कलह होने का असर बच्चों पर भी हो रहा था। शराब पीने का विरोध करने पर मार पीट की नौबत आ जाती थी। मेरे जैसी दर्जनों महिलाएं इस गांव में अपने–अपने शराबी पति से परेशान थीं। मेरे पति को डाक्टर ने शराब पीने से मना किया लेकिन वे तब भी नहीं मानते थे और शराब पीते थे। इसी बीच जीविका ग्राम संगठन के माध्यम से शराबबंदी अभियान आरंभ किया गया। अभियान के क्रम में महिलाओं को जागरूक किया गया।

कविता देवी
ग्राम संगठन–कमला जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम–शेरपुर प्रखंड–गुरूआ, जिला–गया

- कविता देवी के पति शराबी थे। अपने कमाई का सारा पैसा शराब पर खर्च कर देते थे।
- जीविका सहेली के रूप में काम करके उन्होंने अपने परिवार का संचालन किया।
- जीविका ग्राम संगठन के शराबबंदी अभियान का व्यापक असर हुआ। अब गांव में शांति और खुशहाली है।

जिसका असर यह हुआ कि गाँव में दारू बन्द हो गया अब हमारे पति दारू नहीं पीते हैं। इससे हम और हमारे बच्चें बहुत खुश हैं। अब न वो दारू पीते हैं न घर में हो हंगामा करते हैं। अब सब अच्छा हो रहा है।

76. शराब मुक्ति से परिवार हुआ खुशहाल

मीना देवी
ग्राम संगठन   कृष्णा जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम खुटहा   प्रखंड –गुरूआ , जिला – गया

ग्राम खुटहा, पंचायत बेलौटी, प्रखण्ड गुरूआ में लक्ष्मी जीविका स्वयं सहायता समुह की सदस्य मीना देवी के ससुर रामस्वरूप चौहान बहुत ज्यादा शराब पीते थे। घर में राशन लाने हेतु पैसा भी नहीं देते थे। घर की जिम्मेदारियों से वे पूरी तरह विमुख हो गये थे। शराब पीने के बाद इन्हें किसी भी चीज की परवाह नहीं रहती थी। गाली गलौज एंव लड़ाई झगड़ा करना इनकी आदत में शामिल हो गया था। अत्यधिक शराब पीने से इनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकुल प्रभाव पड़ रहा था। पर तमाम कोशिशों के बाद भी ये नहीं माने। सरकार द्वारा शराबबंदी के बाद अब रामस्वरूप चौहान ने शराब पीना बंद कर दिया है। अब इनमें काफी परिवर्तन आ गया है। अब ये घर के कामों में हाथ बंटाते हैं। घर में पूरा समय देते हैं। अब ये गाली–गलौज, लड़ाई–झगड़ा भी नहीं करते हैं। अब ये बच्चों की शिक्षा पर भी ध्यान देते हैं। अब इनका स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। घर के लोग अब काफी खुश हैं।

- ✦ रामस्वरूप के शराब पीने की आदत से उसके परिवार के लोग काफी परेशान थे।
- ✦ वे ना तो घर के किसी काम में हाथ लगाते थे और ना ही घर में कोई आर्थिक मदद ही करते थे।
- ✦ सरकार द्वारा की गयी शराबबंदी के बाद अब गांव के हालत बदल गये हैं। अब गांव का कोई भी व्यक्तित शराब नहीं पीता है।

77. एकता में बल

रेखा देवी
ग्राम संगठन   एकता जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम नौरंगा प्रखंड –मानपुर, जिला – गया

गया के नौरंगा की पहचान अवैध शराब बेचने एवं पीने–पिलाने में थी। इस गॉव में जगह जगह शराब बनाने का कारोवार होता था। गॉव के अधिकतर पुरूष एवं कुछेक महिलायें शराब की लत के शिकार थे। जिसके कारण गांव का वातावरण काफी खराब हो गया था। इसी गांव में दीप जीविका स्वयं सहायता समूह कि सदस्य रेखा देवी अपने परिवार के साथ बड़ी मुश्किलों से जीवन यापन कर रही थीं। उनकी सबसे बड़ी समस्या पति अमरूत पासवान दिन रात शराब के नशे में डूबे रहते थे। घर को चलाने के लिए रेखा देवी दूसरे के खेतों में मजदूरी करती थी। पैसे के अभाव के कारण उनके बच्चों की ना तो सही तरीके से पढ़ाई हो पाती थी और ना ही उन्हें पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो पाता था। शराब का विरोध करने पर रेखा देवी की पिटाई करते थे। शराबबंदी के उपरांत अमरूत पासवान ने शराब पिना छोड़ दिया। अब वह नियमित रूप से सब्जी बेचने जाया करते हैं तथा घर को चलाने के लिए घर में आर्थिक मदद भी करते हैं। अब इनके परिवार में काफी खुशहाली आई है तथा इनके आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है।

- ✦ नौरंगा गांव में अवैध शराब का धंधा फल–फुल रहा था।
- ✦ शराब के कारण गांव का वातावरण काफी गंदा हो गया था।
- ✦ शराब के कारण रेखा देवी को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था।
- ✦ शराबबंदी के बाद गांव का माहौल काफी बदल गया है।

78. बदली गांव की पहचान

मानो देवी,
स्मूह–लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह,
शादीपुर गांव, पंचायत–शादीपुर,गया।

- ✦ शादीपुर गांव के अधिकांश लोग शराब के शिकार थे।
- ✦ शराब पीने के बाद गाली–गलौज, मारपीट आम बात थी।
- ✦ ग्राम संगठन द्वारा शराबबंदी के लिए सख्त नियम कानून बनाने के बाद गांव का माहौल बदला।

शादीपुर पंचायत के शादीपुर गॉव के लगभग सभी लोग शराब के लत के शिकार थे। यहाँ लक्ष्मी समुह की सदस्य मानो देवी के पति भी शराब के लत के शिकार थे। शराब के कारण इनकी आर्थिक स्थिति काफी जर्जर हो गयी थी। पति हमेशा शराब पीकर घर आते थे। बच्चे पर ध्यान नहीं देते थे। घर में गाली–गलौज करना, मार पीट करना आम बात थी। इस तरह की स्थिति गांव के अन्य परिवार की भी थी। सारे पुरूष महीने में 10 दिन भी काम नहीं करते थे। बांकी दिन शराब पीकर पड़े रहते थे। शराब के कारण होने वाली परेशानियों के बाद महिलाओं ने इसके विरोध का मन बनाया। शराब बंद करवाने के लिए महिला आगे आयी, लेकिन इसका कोई प्रभाव नही पड़ा। इसके बाद शराब बंदी के द्वारा महिला को जागरूक किया गया। फिर समुह में इस मुद्दे पर चर्चा की गयी। फिर ग्राम संगठन में यह जानकारी दी गयी कि अगर शराब पीने या बेचने की सूचना मिलती है तो पकड़े जाने वालों पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस जानकारी के फैलते ही गांव में शराब की बिक्री बंद हो गयी। मानो देवी के पति सुरेश मांझी भी काम करने लगे हैं। मानो देवी भी काफी खुश हैं। मानो देवी कहती हैं कि–मेरे पति शराब छोड़ दिये हैं और बच्चों का भी ध्यान रखते हैं। पत्नी और पति दोनो काम कर रहे हैं।

79. महिलाओं के हौसले से बंद हुई शराब

नाम	:	गुडिया देवी
समूह	:	चमेली जीविका स्वयं सहायता समूह
पता	:	भलुआ, गया

- ✦ गुड़िया देवी के पति शराब के कारण अपने व्यवसाय को चौपट कर लिया।
- ✦ हालत यह हो गयी कि घर में खाने के लाले पड़ गये।
- ✦ ग्राम संगठन की पहल के बाद गांव में शराबबंदी लागू हुई।
- ✦ अब गांव का माहौल बदल गया है।

यह कहानी डोभी प्रखंड के भलुआ ग्राम के चमेली स्वयं सहायता समूह के गुडिया दीदी की है। इस गाँव में शराब धड़ल्ले से बेची और पी जाती थी, लोग भयमुक्त होकर दिन हो या रात शराब पीते थे। जिसका दुष्प्रभाव इनके परिवार पर पड़ता था। इसी गांव की गुडिया देवी के पति भी शराबी थे। सुबह से ही शराब पीना शुरू कर देते थे। ये मिठाई की दुकान चलाते थे लेकिन शराब के कारण इनके व्यवसाय को भी काफी नुकसान होता था। इनकी आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन बदत्तर होती जा रही थी। शराब पीकर घर में हो हंगामा करना, मारना पीटना आम बात थी। एक बार तो हद हो गई जब इनके पति ने इन्हें इतनी बुरी तरह से पीटा कि ये 12 घंटे से भी ज्यादा समय तक बेहोश पड़ी रही। इस घटना के बाद इसकी चर्चा ग्राम–संगठन में की गई तथा यह निर्णय हुआ कि किसी भी हालात में शराब बंद करना है। सभी ग्राम संगठन की दीदियों ने जागरूकता रैली निकाली, नारे लगाये, थाने में शिकायत दर्ज की। इसी बीच सरकार द्वारा पूर्ण शराब बंदी की घोषणा हुई, जिससे सारी दीदीयों का हौसला बढ़ गया। आज गुड़िया देवी खुशी पूर्वक जीवन जी रही है।

८०. न कभी डरीं, न हारीं

शराब की लत से हो रहे परेशानियों के खिलाफ जीविका के सामुदायिक संगठनों ने अपनी लड़ाई हर स्तर पर लड़ी। इसी तरह की लड़ाई को हिन्दुस्तान जीविका संकुलस्तरीय संघ ने भी लड़ी। सामुदायिक संगठनों ने पूर्ण शराब बंदी हेतु कई जागरूकता रैली तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस तरह के कार्यक्रम को स्थानीय जिला प्रशासन का भी निरंतर सहयोग मिला। कई कार्यक्रमों में जिलाधिकारी ने भी भाग लेकर जीविका दीदियों के हौसलों को बुलंद किया। साथ ही प्रशासन की तरफ से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। दीदियाँ अब निर्भय होकर शराबबंदी पर काम कर रही हैं। इधर, हाल के दिनों में जब जीविका समूह की दीदियों को यह भनक् लगी कि कुछ लोग झारखण्ड से आनेवाली ट्रेनों से चोरी से शराब का कारोबार कर रहें हैं तो दीदियों ने निर्णय लिया कि इसे भी रोका जाए।

दिनांक १३ मई २०१६ को संकुल स्तरीय संघ की दीदियों को यह पता चला कि कुछ लोग झारखण्ड से ट्रेन के द्वारा लकड़ियों के गट्ठर के बीच शीतल पेय तथा पानी की बोतलों में शराब भरकर उनके गाँव में चोरी छुपे ला रहें है। टन्कुप्पा गाँव की तथा हिन्दुस्तान जीविका संकुल स्तरीय संघ के तीन ग्राम संगठन (रौशनी जीविका महिला ग्राम संगठन, गंगा जीविका महिला ग्राम संगठन तथा सूरज जीविका महिला ग्राम–संगठन) की दर्जनों दीदियां टन्कुप्पा रेलवे स्टेशन पर पहुँच गयी। फिर उन्होंने शराब के अवैध कारोबारियों को घेर लिया तथा थाना को सूचित किया। पुलिस द्वारा उक्त अवैध शराब के कारोबारियों को पकड़ लिया। अब इस गांव की सिथिति यह है कि जीविका ग्राम संगठनों की दीदियों के इस साहसपूर्ण कार्यों को देखकर पुरे टनकुप्पा में कोंई भी व्यक्ति शराबखोरी से परहेज करता है। अब किसी भी दीदी को कोई डर नही है। सभी दीदी ने यह ठान लिया है कि किसी भी हालत में शराब बेचने तथा पीने नहीं देगें।

हिन्दुस्तान जीविका संकुल स्तरीय संघ
ग्राम टन्कुप्पा प्रखंड –टनकुप्पा, जिला – गया

- शराबबंदी के बाद जागरूकता के लिए जीविका के सामुदायिक संगठनों द्वारा जागरूकता कार्यक्रम।
- जीविका दीदियों को जानकारी मिली कि अवैध शराब की खेप ट्रेन के रास्ते झारखंड से आता है तो इसके खिलाफ मुहिम चलाया।
- कई शराब माफियाओं को पुलिस द्वारा पकड़वाया।

81. महिलाओं ने बदली गांव की पहचान

नाम :
ग्राम संगठन चांदनी जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम नक्नुप्पा,बार प्रखंड –, जिला – गया

- ✦ नक्नुप्पा की पहचान अवैध शराब निर्माण को लेकर था।
- ✦ जीविका दीदियों ने इस गांव को एक नई पहचान देने की कोशिश की।
- ✦ गांव में अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री पर प्रतिबंध

नक्नुप्पा गाँव अवैध शराब निर्माण का केन्द्र था। गाँव में हमेशा मारपीट, गाली–गलौज आम बात थी। शराब के दुष्परिणाम से सभी जीविका दीदियां अवगत थीं। दीदियों ने बैठकों में शराब से होने वाले नुकसान को लेकर चर्चा करनी शुरू कर दी। शराब से होने वाले नुकसान पर ये एक दूसरे को जागरूक भी करना शुरू कर दिया। धीरे–धीरे इनके प्रयास ने रंग लाना शुरू कर दिया और इन्होंने शराब का विरोध भी करना शुरू कर दिया। कुछ दीदी ऐसी भी थीं, जिनके पति शराब पीते थे। नारी शक्ति संकुल स्तरीय संघ की मदद से शराबबंदी पर रैली निकाली गई तब इसका प्रभाव इस गाँव पर बहुत ज्यादा पड़ा। रैली में महिलाओं का आक्रमक रूप देखकर अवैध शराब बनानेवाले तथा अवैध रूप से पीने वाले सहम गए। रैली से फैले जागरूकता से शराब की बिक्री पर गहरा असर पड़ा। अब जब पूर्ण शराबबंदी हो गई है, तो सभी दीदी गाँव में सर उठाकर चल रही हैं। समूह एवं ग्राम संगठन अपने प्रभाव को समझ चुकी हैं। अब इस गाँव में लड़ाईयां नहीं होती है। जो दीदी इससे सबसे ज्यादा प्रभावित थी, वह अपने घर को अच्छी तरह से चला रही हैं। संकुल स्तरीय संघ की सचिव अनिता देवी बताती हैं कि–कैसे शराबबंदी के बाद दीदियों के समाजिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आया है। ग्राम की स्थिति अब बेहतर है। पहले शाम के 6 बजे के बाद भय का महौल रहता था। हमलोगों का कहीं निकलना मुश्किल था, परंतु शराबबंदी के बाद महौल भयमुक्त हो गया है।

82. शराबबंदी ने बदला समाज

नाम : कुन्ती देवी
समूह : शक्ति जीविका महिला ग्राम संगठन
पता : चिरैली, नीमचक बथानी, गया

- ✦ शराबी पति की प्रताड़ना से त्रस्त थी कुन्ती देवी।
- ✦ शराबबंदी के बाद हालात बदले।
- ✦ अब गांव में कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पीता है।

कुन्ती देवी, ज्योति जीविका स्वयं सहायत समूह की सदस्य तथा प्रगति जीविका महिला ग्राम संगठन से जुड़ी हुई हैं। कुन्ती देवी के पति गरीब किसान है। घर आर्थिक तंगी के कारण वे दिनों–दिन गरीबी के दुष्चक्र में धंसते जा रही थी। पति देवेन्द्र यादव मजदूरी तथा किसानी करते थे, लेकिन शराब की लत ऐसी लगी कि घर परिवार तथा समाज से कोई नाता नहीं रह गया। वे हमेशा अपनी दुनिया में मस्त रहते थे। घर के उतरदायित्व का उन्हें कोई बोध नहीं था। देवेन्द्र यादव हमेशा कुन्ती देवी के साथ मारपीट करते थे। देवेन्द्र यादव जो भी कमाते उसे नशे में खर्च कर देते थे। कुन्ती देवी को दो लड़का तथा दो लड़की है। लड़की बड़ी होने कारण उसका शादी ब्याह की चिन्ता कुन्ती देवी को सताती रहती थी। बच्चो की पढाई–लिखाई तथा उनका परवरिश अंधकार में दिख रहा था। कुन्ती देवी बच्चो की आवश्यकता पूरी करने के लिए मजदूरी भी करती थी। आशा की किरण धुंधली होती जा रही थी। कुंती देवी बताती हैं कि–सरकार द्वारा 01 अप्रैल 2016 को पूर्ण शराबबंदी लागू करने से गाँव एवं समाज में व्यापक परिवर्तन देखा जा सकता है। इसी परिवर्तन में हमारा घर भी काफी बदल गया। मेरे पति जो हमेशा नशे में मारपीट करते रहते थे, आज वह नश्मुक्त होकर सामाजिक तथा पारिवारिक दायित्वों को बखूबी निभा रहे हैं।

83. संघर्ष का दूसरा नाम सुमनी

गया जिले के खिजरसराय प्रखंड के चिरैली गाँव में सीता जीविका स्वंय सहायता समूह एवं शक्ति जीविका ग्राम संगठन की अध्यक्ष सुमनी देवी का जीवन भी शराब के कारण संकट में था। सुमनी देवी बताती हैं कि उनके पति का नाम उमेश सिंह है और उनके चार बच्चे हैं। है। जब वो समूह में नहीं जुडी थी, तब उनकी सिथिति काफी दयनीय थी। सुमनी देवी बताती हैं कि समूह में जुडकर, बचत करने तथा समूह से लेनदेन करने लगी। इसी बीच मैंने सीआरपी के रूप में काम करना भी आरंभ कर दिया। जिससे मुझे अच्छी आमदनी होने लगी।

सुमनी देवी बताती हैं कि उन्हें जो भी आमदनी होती थी, उसे उनके पति छिन लेते थे। इन पैसों को वे शराब पीने एवं जुआ खेलने में खर्च कर देते थे। सुमनी देवी आगे कहती हैं कि विरोध करने पर मारपीट तक की नौबत आ जाती थी। अंत में मैंने अपने दुःख को समूह की दीदीयों के बीच रखने का फैसला लिया। मेरी समस्या सुनकर समूह की बैठक बुलाई गयी। बैठक के बाद सभी दीदी ने मेरे घर आकर मेरे पति को समझाया। साथ ही डराया ,धमकाया और कहा कि अगर तुमने अपनी आदत नहीं बदली तो तुम्हे जेल भेजवा देंगे। इसके बाद मेरे पति ने उस रात मुझे जमकर पीटा और बोला ऐसा करने से हम डरेंगें नही।

सुमनी आगे कहती हैं कि मैं अगले दिन फिर समूह की दीदियों के पास गयी। दीदियों ने इस मामले की सूचना ग्राम संगठन एवं सीएलएफ को दी। इसके बाद सभी ने मिलकर मेरे पति को समझाया। साथ ही कहा कि यह अंतिम बार है अगर आगे से तुमने ऐसा किया तो थाने में एफआईआर होगा और तुम जेल में होगे। महिलाओं के रौद्र रूप को देखकर मेरे पति ने फिर से दारू नहीं पीने की बात कही।सुमनी देवी कहती हैं कि अब मेरे पति दारू नहीं पीते हैं और ना ही मारपीट ही करते हैं।

नाम : शबनम बानो
समूह : रहमान जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : लक्ष्छी गांव, भोरे, गोपालगंज

- शराबी पति के कारण सुमनी देवी को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था।
- घर गृहस्थी चलाने के लिए उसने जीविका में सीआपी के रूप में काम शुरू किया।
- पति की प्रताड़ना के बाद उसने विरोध शुरू किया। जीविका दीदियों ने भी साथ दिया। पति को धमकाया।
- अब पति शराब नहीं पीते हैं।

84. शराब के दंश से मुक्ति

बिहार के अन्य गांवों की तरह ही सारण जिले में सोनपुर प्रखंड स्थित सोभेपुर गाँव भी शराब से त्रस्त था। यहाँ के युवा और कामगार पूरी तरह से शराब के गिरफ्त में थे। थोड़ी बहुत जो भी कमाई होती थी उसे वो शराब पर उड़ा देते थे। घर में पत्नी या माँ अगर मना करे तो उन्हें यातना झेलनी पड़ती थी। गाँव में कई शराब की दुकाने खुल गयी थीं और सड़क पर निकलना मुश्किल था। इस भयावह माहौल से सबसे ज्यादा प्रभावित गाँव की महिलाएं थीं। दो वक्त की रोटी जुटाना मुश्किल हो रहा था। घर चलाने के लिए पैसे मांगने पर उन्हें बुरी तरह से मारा पीटा जाता था। रात को घरों से महिलाओं की चीखे सुनने को मिलती थी। बच्चे सहमी सी जिंदगी जी रहे थे। लड़कियां घर की चौखट के बाहर कदम रखने से डरती थीं।

जीविका स्वयं सहायता समूह की बैठकों में सदस्य अक्सर शराब की वजह से अपनी प्रताड़ना और दुःख बताती थी। सभी एक दुसरे के दुःख से वाकिफ थे। पर अभी भी वो घर के मर्दों के खिलाफ किसी तरह का विरोध करने से डरती थीं। लेकिन जिस दिन सुनीता दीदी के पति ने शराब के नशे में उसे मारकर बुरी तरह से घायल कर दिया, स्वयं सहायता समूह की महलाओं के सब्र का बांध टूट गया। महिलाओं ने सबसे पहले सुनीता देवी के पति की खूब पिटाई की और थाना को फोन किया । फिर गाँव के सभी जीविका स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने एकजुट होकर झाड़ू और लबदा के साथ गाँव के शराब दुकानों पर धावा बोल दिया। दुकानदार भाग खड़े हुए।

महिलाओं ने सारा शराब सीज कर लिया। गाँव के बांध के पास शराब की बोतलों को नष्ट कर दिया गया। महिलाओं के साथ पुलिस और प्रशासन का भी सहयोग रहा। महिलाओं के अथक प्रयास से गाँव में शराब का सेवन और बिक्री बंद हो गया । माननीय मुख्य मंत्री के आह्वान से अब बिहार में पूर्ण शराब बंदी लागू हो चुका है। आज सोभेपुर गाँव की सूरत बदल रही है। पूरी कमाई घर की उन्नति पर खर्च हो रहा है। परिवार खुशहाल है और महिलाएं निडर। अब गाँव के बच्चे सुनहरे भविष्य का सपना देखने लगे हैं।

नाम : सुनीता देवी
समूह : चमेली जीविका स्वयं सहायत समूह
पता : सोभेपुर, डुमरी बुजुर्ग, सोनपुर, सारण

- सारण जिले में सोनपुर प्रखंड स्थित सोभेपुर गाँव भी शराब से त्रस्त था।
- इस भयावह माहौल से सबसे ज्यादा प्रभावित गाँव की महिलाएं थीं।
- पर वो घर के मर्दों के खिलाफ किसी तरह का विरोध करने से डरती थीं।
- लेकिन जब सुनीता दीदी के पति ने नशे में उसे बुरी तरह पीटा तो गाँव की महिलाओं के सब्र का बांध टूट गया।
- सबसे पहले महिलाओं ने सुनीता देवी के पति को पुलिस के हवाले किया।
- फिर गाँव के शराब दुकानों पर धावा बोल दिया।

85. जीने की आजादी

माँ की असमय मृत्यु के बाद पिता ने एक शराबी से उसकी शादी कर दी। चिंता देवी विदा हो अपने ससुराल, सारण जिले के मकेर प्रखंड स्थित फुलवरिया गाँव आ गयीं । मजदूर पति जो भी पैसा कमाता था शराब में उड़ा देता था। कई बार शराब के नशे में धुत्त मिट्टी में सने अपने पति को उठाकर वो घर लाती थी। उसका मन घ्रीणा और आक्रोश से भर उठता था। उसके बच्चों का भविष्य बर्बाद हो रहा था ठीक उसी तरह जैसे उसका और उसके भाई – बहनों का बचपन बर्बाद हुआ था कभी।

ऐसे में एक आशा की किरण दिखी। साल 2015 में जीविका ने फुलवरिया में स्वयं सहायता समूहों का गठन शुरू किया। चिंता देवी ने सोच लिया कि अब वो चुपचाप गाँव की बदहाली का मंजर नहीं देखेगी। महिलाएं जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने लगी। साप्ताहिक बैठक और बचत होने लगा। गाँव में उड़ती उड़ती खबर आई की जीविका स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के आग्रह पर मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने 1 अप्रैल 2016 से बिहार में पूर्ण शराब बंदी का निर्णय लिया है। गाँव की महिलाओं के बीच खुशी की लहर दौड़ गयी।

समूह की महिलाओं ने गाँव में शराब के खिलाफ अभियान छेड़ दिया। सबने एकजुट होकर गाँव में शराब की दुकानों और भट्ठियों पर धावा बोल दिया। महिलाओं ने गाँव में रैली निकाली और शराब बंदी के लिए शपथ लिया। प्रशासन की मदद ने गाँव में शराब बंदी की राह और आसान कर दी थी। आज गाँव का माहौल एकदम बदल चूका है। अब मेहनत की कमाई से परिवार की खुशियाँ बटोरी जा रही है।

नामः चिंता देवी
समूह का नामः सीतला जीविका स्वयं सहायत समूह
पता :– भाता फुलवरिया, फुलवरिया, मकेर, सारण

- ✦ माँ की असमय मृत्यु के बाद पिता ने एक शराबी से चिंता देवी की शादी कर दी।
- ✦ पति कमल महतो मजदूरी से जो भी पैसा कमाता था शराब में उड़ा देता था।
- ✦ कई बार शराब के नशे में धुत्त मिट्टी में सने अपने पति को चिंता देवी उठाकर घर लाती थी।
- ✦ साल 2015 में जीविका ने फुलवरिया में स्वयं सहायता समूहों का गठन शुरू किया, जिससे चिंता देवी भी जुड़ीं।
- ✦ समूह की महिलाओं ने गाँव में शराब के खिलाफ अभियान छेड़ा।
- ✦ प्रशासन की मदद से गाँव में शराब बंदी की राह आसान हुई।

86. शराब के खिलाफ आक्रोश

नाम	:	रीता देवी, ज्ञानती देवी
समुह	:	एकता जीविका महिला ग्राम संगठन
पता	:	अमनौर हाता, धरमपुर जाफर, अमनौर, सारण

- ✦ सारण जिला स्थित अमनौर प्रखंड के अमनौर हाता गाँव की महिलाएँ शराब के कहर से बहुत परेशान थी।
- ✦ पति जो भी थोड़ी बहुत कमाई करते थे वो शराब पर उड़ा देते थे।
- ✦ ज्यादा शराब पीने की वजह से लोग बीमार भी पड़ जाते थे।
- ✦ शराब बंदी पर जीविका द्वारा बनाई गयी फिल्म देखकर महिलाओं के अन्दर जैसे क्रांति उबल गया।
- ✦ महिलाएं इक्कठा होकर उस जगह पर पहुची जहाँ चोरी छुपे शराब की बिक्री हो रही थी।
- ✦ महिलाओं ने पुलिस के साथ उन जगहों की निशानदेही की जहाँ शराब दबे होने की आशंका थी।

सारण जिला स्थित अमनौर प्रखंड के अमनौर हाता गाँव की महिलाएँ शराब के कहर से बहुत परेशान थी। पति जो भी थोड़ी बहुत कमाई करते थे वो शराब पर उड़ा देते थे। शराब पी लेने के बाद उनके साथ जानवरों की तरह सुलूक करते थे। घर में गाली – गलौज, मार पीट और अशांति का माहौल बना रहता था। ज्यादा शराब पीने की वजह से लोग बीमार भी पड़ जाते थे। किसी तरह से कर्ज लेकर उनका इलाज होता था। गाँव में शराब की वजह से कई लोगों की मौत गयी थी। ऐसे में गाँव की महिलाएं बेबस और लाचार जिंदगी जीने को विवश थी। साल 2014 में जीविका ने जब गाँव में महिलाओं का स्वयं सहायता समूह बनाना शुरू किया तो महिलाओं के अन्दर अपने बेहतरी की आस जगी। गाँव की महिलाएं संगठित होने लगी। समूह की साप्ताहिक बैठकों में शराब पर चर्चा होने लगी।

खबर आई कि माननीय मुख्यमंत्री ने जीविका दीदियों के आग्रह पर 1 अप्रैल 2016 से बिहार में पूर्ण मद्द निषेध लागू कर दिया है। गाँव की महिलाओं में खुशी की लहर दौड़ गयी। पता चला कि पूर्ण शराबबंदी के बाद भी गाँव में धडले से चोरी छुपे शराब की बिक्री की जा रही है। दिनांक 30 अप्रैल 2016 को ग्राम संगठन की बैठक में शराब बंदी पर जीविका द्वारा बनाई गयी फिल्म को दिखाया गया। फिल्म देखकर महिलाओं के अन्दर जैसे क्रांति उबल गया। सबने कहा जब गया की दीदियों ने शराब दूकान बंद करा दिया तो हम क्यों नहीं कर सकते। गाँव में सभी जीविका समूहों की महिलाएं एकत्रित होकर निकल पड़ी। पास के थाना को सुचना दे दी गयी। महिलाएं उस जगह पर पहुची जहाँ चोरी छुपे शराब की बिक्री हो रही थी। तब तक पुलिस भी वहां पहुच गयी थी। दूकानदार भाग खड़े हुए। महिलाओं ने पुलिस के साथ उन जगहों की निशानदेही की जहाँ शराब दबे होने की आशंका थी। पुलिस ने मिट्टी में गाड़ कर रखा गया करीब 1000 लीटर शराब बरामद किया।

महिलाओं को एकता की शक्ति का आभास हो गया था। गाँव में अब शराब की बिक्री पूर्ण रुप से बंद हो गया है। महिलाओं के जीवन में सुकून और खुशी लौट आई है।

87. नया सबेरा

सोना देवी सारण जिला स्थित इसुआपुर प्रखंड के मोड़वा खास गाँव की रहने वाली है। पति के शराब पीने की आदत ने उसके परिवार की सारी खुशियाँ छीन ली थी। रोज रोज की मारपीट और गाली गलौज ने उसके जीवन को नरक बना दिया था। पिछली बार जब पति बीमार पड़ा था तो 35000 रूपये कर्ज लेकर किसी तरह से उसकी जान बचाई थी। पर अब वो बिलकुल टूट चुकी थी।

साल 2015 में जब गाँव में जीविका ने अपना कदम रखा तो सोना देवी के मन में एक आस जगी। वो तारा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गईं। समूह की बैठकों में शराब की बुराइयों पर चर्चा होने लगी। जनवरी 2016 में शराबबंदी के लिए माननीय मुख्यमंत्री के आह्वान ने सोना देवी और अन्य महिलाओं के अन्दर एक नया जोश भर दिया। तारा समूह की महिलाएं एकत्रित होकर गाँव में शराब बिक्री बंद कराने के लिए निकल पड़ीं। सभी शराब दुकानदारों से दुकान बंद करने का आग्रह किया। दुकानदार उनकी बात सुनने तक को तैयार नहीं थे। एक दुकान पर महिलाओं ने कच्चे शराब के गैलन पलट दिए।

अगले दिन सोना देवी उसी रास्ते से होकर कहीं जा रहीं थीं। दुकानदार ने उनका रास्ता रोक उनके साथ गाली गलौज शुरू कर दिया। बातों बातों में ही वो सोना देवी को मारने के लिए एक धारदार हथियार निकाल लिया। सोना देवी किसी तरह से जान बचाकर वहां से भागी और पास के घर में छुप गयी। सोना देवी ने जल्दी से अपने मोबाइल पर एक नंबर डायल किया। दबे आवाज में बेटी को पूरी बात बतायी।

सोना देवी के फोन करते ही समूह और ग्राम संगठन की महिलाएं आक्रोशित हो गयी। पास के थाना को घटना के बारे में सूचित कर दिया गया। सभी महिलाये एकत्रित हो दूकान दार को सबक सिखाने निकल पड़ी। महिलाओं की भीड़ देख दूकानदार भाग खड़ा हुआ। मौके पर पुलिस भी पहुच चुकी थी। अपने साथ इतनी महिलाओं का हुजूम देखकर सोना देवी को एहसास हुआ की इस लड़ाई में वो अकेली नहीं है। दुकानदार ने पुलिस के सामने सोना देवी से गिडगिडा कर माफी मांगी और शराब दूकान बंद कर दिया। महिलाओं और पुलिस के डर से गाँव में शराब की बिक्री पूरी तरह से बंद हो गयी।

नामः सोना देवी
ग्राम संगठन : स्मृति जीविका महिला ग्राम संगठन
पता :– मोडवा खास, लौवा, इशुआपुर, सारण

- पति के शराब पीने की आदत ने सोना देवी के परिवार की सारी खुशियाँ छीन ली थी।
- शराब पीकर पति बीमार पड़ गया था।
- मुख्यमंत्री का आह्वान सुन तारा जीविका समूह की महिलाएं गाँव में शराब बिक्री बंद कराने के लिए निकल पड़ीं।
- एक दूकान पर महिलाओं ने कच्चे शराब के गैलन पलट दिए।
- दुकानदार ने सोना देवी पर जानलेवा हमले की कोशिश की।
- मौके पर महिलाओं की भीड़ और पुलिस को देखकर दूकानदार के होश उड़ गए।
- दुकानदार ने पुलिस के सामने सोना देवी से गिडगिडा कर माफी मांगी और शराब दूकान बंद कर दिया।

88. शराब के खिलाफ बढाया कदम और छू लिया आकाश

नाम : सुखिया और तलिया
पता : मईरी मईरा पंचायत
प्रखंड : गढहनी, भोजपुर

यह घटना भोजपुर जिले के गढ़हनी प्रखंड के गराप पंचायत के मईरी– मईरा गाँव की है। दोनों गाँव में अवैध शराब माफियाओं का दबदबा था। इस धंधे में गाँव की कुछ महिलायें भी शामिल थी। कृषि और मजदुरी ही गाँव के लोगों के जीवनयापन का एक साधन रहा है। लेकिन दिन भर की आमदनी शाम होते ही शराब के सेवन में निकल जाता था। घर की महिलाओं के द्वारा विरोध करने पर मार–पीट और गाली–गलौज आम बात हो गई थी। यहाँ तक की अभद्र व्यवहार भी महिलाओं के साथ किया जाने लगा था। जीविका समूह की महिलाओं ने शराब बंदी को लेकर समूह में चर्चा की और अवैध शराब निर्माण के बंदी को लेकर रणनीति बनाई।

अदम्य साहस का परिचय देते हुए जीविका समूह की महिलाएं गाँव की अन्य महिलाओं के साथ सबसे पहले शराब बेच रही सुखिया और तालिया देवी को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। साथ ही शराब बनाने में प्रयुक्त सामान एवं बर्तनों को झाड़ू एवं डंडे से तोड़ दिया। सुखिया और तालिया समेत कई लोगों के सलाखों के पीछे जाने के बाद गाँव में शराब की बिक्री बिल्कुल बंद हो गई। लेकिन अब लोग मईरा में अवैध शराब के धंधे में लगगए। शराब बिक्री और पीने वालों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी होने लगी। जो कहानी मईरी गाँव में समाप्त हुईए वो मईरा में शुरू हो गई। ऐसे में एक बार फिर बात गाँव की जीविका स्वयं सहायता समूहों के पास पहुंची। समूह की महिलाओं ने एकजुट होकर अवैध शराब विक्रेताओं को समझाया और भविष्य में कभी भी शराब नहीं बेचने का उनसे वायदा लिया। इसके साथ ही मईरा में भी पूरी तरह से शराब बंदी हो गई।

- ✦ मईरी– मईरा गाँव में अवैध शराब माफियाओं का दबदबा था।
- ✦ इस धंधे में गाँव की कुछ महिलायें भी शामिल थी।
- ✦ जीविका समूह की महिलाओं ने शराब बेच रही सुखिया और तालिया देवी को पुलिस के हवाले कर दिया।
- ✦ शराब बनाने में प्रयुक्त सामान एवं बर्तनों को झाड़ू एवं डंडे से तोड़ दिया।
- ✦ महिलाओं ने एकजुट होकर अवैध शराब विक्रेताओं को समझाया और भविष्य में कभी भी शराब नहीं बेचने का उनसे वायदा लिया।

89. हौसले की जीत

नाम	:	गंगाजली देवी
समूह	:	दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह
पता	:	बारुपुर, पंचायतः बारुपुर, राजपुर, बक्सर

- ✦ बारुपुर की गंगाजली और उसके जैसी कई महिलाएं गाँव में शराबियों के आतंक से परेशान थीं।
- ✦ जीविका समूह की बैठक में गाँव में शराबियों के आतंक की बात उठी।
- ✦ गंगाजली देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने शराब बेचने वाले और पीने वालों को हाथ जोड़कर समझाना शुरू किया।
- ✦ इसी दौरान एक अवैध शराब दूकानदार से मारपीट हो गई।
- ✦ अगले दिन उस दूकानदार को महिलाओं ने पुलिस के हवाले कर दिया।

बिहार में भले ही एक अप्रैल 2016 से पूर्ण शराबबंदी लागू हुआ हो, लेकिन बक्सर जिले के राजपुर प्रखंड के बारुपुर पंचायत में जीविका समूह की महिलाओं ने सितंबर 2014 से ही शराब बेचने और पीने पर पाबंदी लगा रखी है। इसका श्रेय गाँव की महिलाएं 60 वर्षीय गंगाजली देवी को देती हैं। गंगाजली देवी के पति मजदूरी करते थे। पति की मौत पांच साल पहले एक बीमारी से हो गई। गंगाजली और उसके जैसी कई महिलाएं गाँव में शराबियों के आतंक से परेशान थीं। शाम क्या सुबह में भी गाँव की महिलाओं का घर से निकलना मुश्किल था। गाँव में चाय की दुकान की तरह अवैध शराब की दुकान चल रही थी। इसी बीच गंगाजली 23 मार्च 2014 को दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। खेत में मजदूरी कर जो थोड़े रूपये मिलते थे उसी में से समूह में बचत करना शुरू किया। बैठकों में भाग लेना शुरू किया।

समूह की ही बैठक में गाँव में शराबियों के आतंक की बात उठी। तय हुआ कि शराबियों के आतंक से पंचायत को मुक्ति दिलाई जाएगी। गंगाजली देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने शराब बेचने वाले और पीने वालों को हाथ जोड़कर समझाना शुरू किया। तीन माह लग गए लोगों को समझाने में। काफी संघर्ष करना पड़ा। चार शराब दूकानदार तो शराब नहीं बेचने पर राजी हो गए, लेकिन एक अवैध शराब दूकानदार से मारपीट हो गई। पहले दिन तो दूकानदार भाग गया, लेकिन अगले दिन उस दुकानदार को पकड़ कर महिलाओं ने पुलिस के हवाले कर दिया। इस तरह गाँव में सितम्बर 2014 को शराब बिकना पूरी तरह बंद हो गया और जब शराब की बिक्री बंद हो गई तो पीने वालों ने भी पीना छोड़ दिया।

90. जीविका दीदियों की पहल– शराब मुक्त हुआ गाँव

नाम	:	प्रभा देवी
समूह	:	कमल जीविका स्वयं सहायता समूह
पताः	:	नदाँव, सदर, बक्सर

बक्सर जिले के सदर प्रखण्ड के नदॉव गॉव की 50 वर्षीय और एक पैर से विकलांग प्रभादेवी ने समुह की महिलाओं के सहयोग से अपनी बस्ती को शराब मुक्त कर दिया है।

बक्सर से 18 किलोमीटर दुर स्थित नदॉव के पोखरा पर लगभग 30 घरों की बस्ती है । बस्ती में डेढ साल पहले लगभग हर घर में अवैध ढंग से महुआ से शराब बनाई और बेची जाती थी।

बनाने वाले महिला और पुरुष शराब पीते भी थे। नतीजतन हर रोज लडाई झगडा आम बात थी । अवैध शराब को लेकर पुलिस का प्रकोप भी था । जिसके कारण कभी कभी शराब नही बनने और बिकने के कारण भूखे भी रहना पडता था। अवैध शराब घर चलाने का एक मात्र जरिया था । परेशानी सभी के साथ थी, लेकिन समाधान किसी के पास नही था । ऐसे में जीविका का साथ मिला । 19 फरवरी 2014 को बस्ती की महिलाओं को प्रभादेवी ने एकत्रित किया। विरोध के बावजूद कमल जीविका स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ। बैठक के माध्यम से सभी एक दूसरे के सुख–दुख के भागी बनने लगे और तय हुआ कि सबसे पहले रोजगार के नये साधन ढूढ़ें जाये ताकि शराब बंदी हो। संघर्ष घर के पुरुष से ही शुरु हुआ।

सबसे पहले पुरुषों पर दबाव बनाया गया कि वो शराब बनाना छोड़कर कोई और पेशा चुने। कुछ ने दुकान कर लिया और कुछ फेरी के माध्यम से समान बेच कर दो पैसे कमाने लगे। बस्ती में शराब का बनना और बिकना बंद होने लगा । फिर जब शराब बस्ती में उपलब्ध ही नही रहा तब पीना भी कम हुआ। अब जाकर बस्ती में पूर्णतः शराब बंदी है। प्रभा की मेहनत रंग लाई और लोग प्रभा की इज्जत करने लगे।

- ✦ नदॉव गॉव की एक बस्ती में डेढ साल पहले लगभग हर घर में अवैध ढंग से महुआ से शराब बनाई और बेची जाती थी।
- ✦ बस्ती में विरोध के बावजूद कमल जीविका स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ।
- ✦ समूह के बैठक में तय हुआ कि सबसे पहले रोजगर के नये साधन ढूंढें जाये ताकि शराब बंदी हो।
- ✦ पुरुषों पर दबाव बनाया गया कि वो शराब बनाना छोड़कर कोई और पेशा चुने।
- ✦ कुछ ने दुकान कर लिया और कुछ फेरी के माध्यम से समान बेच कर दो पैसे कमाने लगे ।
- ✦ बस्ती में शराब का बनना और बिकना बंद होने लगा।
- ✦ फिर जब शराब बस्ती में उपलब्ध ही नही रहा तब पीना भी कम हुआ।

91. जीत इरादों की

बक्सर जिले के अंबेडकर पट्टी गाँव की मुस्कान जीविका स्वयं सहायता समूह की कोषाध्यक्ष हैं प्रमिला देवी।

प्रमिला पति के निक्कमेपन और शराब पीने की आदत से परेशान थीं। महाजन से कर्ज लेकर मुश्किल से दो वक्त का खाना हो पाता था। उसने अपने पति के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत दिखाई। पति और देवर के खिलाफ बी॰डी॰ओ॰ के पास शिकायत दर्ज कराई। इसके लिए प्रमिला के पति ने उसकी पिटाई भी की। घर में लड़ाई–झगड़े आम बात हो गई थी। जुलाई 2014 में प्रमिला देवी मुस्कान जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनी और कोषाध्यक्ष चुनी गई। पति और परिवार के लोगों ने यहाँ भी विरोध किया। यहीं से शुरू हुआ गाँव में जीविका समूह की महिलाओं के द्वारा शराब के खिलाफ जन–आन्दोलन।

प्रमिला ने अपने पति के खिलाफ आवाज उठाई। मेहनत रंग लाने लगी। पति ने शराब पीना छोड़ दिया। रोजगार के लिए चेन्नई चला गया। गाँव में शराबबंदी को लेकर चलाया जा रहा अभियान रंग ला रहा था। बाद में सरकार के द्वारा 1 अप्रैल 2016 से पूर्ण शराबबंदी के आदेश ने प्रमिला और उसकी जैसी अन्य महिलाओं के शराबबंदी अभियान पर भी मुहर लगा दी। अब प्रमिला के गाँव आंबेडकर पट्टी में कोई शराब नहीं पीता। शराबबंदी को लेकर कल तक जो लोग ताने देते थे अब वो इज्जत देते हैं।

नाम : प्रमिला देवी

पता : गाँव– आंबेडकर पट्टी

प्रखंड–चौग ाई

जिला– बक्सर

- बक्सर जिले के चौगाई प्रखंड के अंबेडकर पट्टी गाँव की प्रमिला देवी पति के निक्कमेपन और शराब पीने की आदत से परेशान थीं।
- जुलाई 2014 में प्रमिला देवी मुस्कान जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनी और कोषाध्यक्ष चुनी गई।
- प्रमिला ने अपने पति के खिलाफ आवाज उठाई।
- पति और देवर के खिलाफ बीडीओ के पास शिकायत दर्ज कराई।
- पति ने शराब पीना छोड़ दिया और रोजगार के लिए चेन्नई चला गया।
- अब प्रमिला के गाँव आंबेडकर पट्टी में कोई शराब नहीं पीता।

92. शराब छुटा, सम्मान मिला

सरकार एवं जीविका के अथक प्रयास "शराब मुक्त बिहार" से लाखों लोगों की जिन्दगी सार्थक हो रही है। उनमें से एक पूर्णियाँ जिले के बनमनखी प्रखंड के काझी ह्रदयनगर पंचायत स्थित नगराही टोला के निवासी बैजनाथ ऋषि भी है। बैजनाथ पेशे से एक रिक्शा चालक है। वो करीब 20 वर्षों से शराब पीने का आदि था। वह रिक्शा चलाकर जो भी रुपये कमाता था, उसका अधिकांश भाग शराब पीने में खर्च कर देता था। इस कारण पत्नी हबिया देवी बहुत दुखी रहती थी। जीवन कलह से भरा एवं अशांत था।

गाँव में जब जीविका ने अपना काम शुरु किया तो हबिया देवी सबरी माता जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनी। स्वयं सहायता समूह तथा ग्राम संगठन की दीदीयों के सहयोग से हबिया देवी अपने पति पर शराब छोडेने के लिए दबाव बनाने लगी। जिसके परिणाम स्वरुप उसके पति ने 6 माह पूर्व दीदियों के सामने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा ली और शराब पीना छोड दिया। शराब छोडने से उनकी जिन्दगी में ऐसा परिवर्तन हुआ जैसे केई चमत्कार हो गया। अब परिवार से कलह खत्म हो गया है। शराब छोडेने के बाद उसने खेती के लिए जमीन खरीदा तथा बेटी की शादी भी की। अब उनके बच्चें पढ़ने के लिये स्कूल जाते हैं।समाज में सम्मान मिलता है।

समूह का नामः सबरी माता जीविका स्वयं सहायता समूह

पता :–

ग्रामः नग।राही टोला

- बैजनाथ करीब 20 वर्षों से शराब पीने का आदि था।
- वह रिक्शा चलाकर जो भी रुपये कमाता था, उसका अधिकांश भाग शराब पीने में खर्च कर देता था।
- इस कारण पत्नी हबिया देवी बहुत दुखी रहती थी।
- जीविका स्वयं सहायता समूह की दीदीयों के सहयोग से हबिया देवी ने अपने पति पर शराब छोडेने के लिए दबाव बनाया।
- उसके पति ने दीदियों के सामने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा ली और शराब पीना छोड दिया।

93. समूह की दीदीयों के लिए प्रेरणास्रोत बनी तारा

पूर्णियाँ जिले के रुपौली प्रखंड मुख्यालय से लगभग पांच किलोमीटर दूर बसा है तेलडीहा गाँव। यहाँ 50 वर्षीय तारा देवी पति और दो बेटा एवं एक बेटी के साथ किसी तरह गुजर बसर कर रही थीं। 31 जुलाई 2010 को रात के 8 बजे उसका पति बैजनाथ सिंह खाना खाकर टहलने निकला था।

नशे में धुत दो शराबियों ने उसके पति को धक्का मार दिया। उसके पति को गहरी चोट लगीए जिससे वह कोमा में चला गया। पति के इलाज के लिए तारा देवी को जमीन गिरवी रखनी पड़ी। इलाज के लिए कई रिश्तेदारों से भी पैसे लेने पड़े। भर्ती होने के 25 दिन बाद पति कोमा से बाहर निकला। उसका पति खुद शराब नहीं पीता था लेकिन दूसरे शराबियों के कारण उसे तथा उसके परिवार को बहुत कष्ट झेलना पड़ा । तारा देवी ने प्रण लिया कि वो शराब की बुराई के खिलाफ आवाज उठाएंगी।

गाँव में जीविका परियोजना द्वारा वर्ष 2012 में स्वयं सहायता समूह का गठन किया जा रहा था। तारा देवी जय गुरु जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयी। समूह के सदस्यों ने मिलकर सर्वसम्मति से तारा देवी को अध्यक्ष चुन लिया। समूह में मिले प्रशिक्षण तथा जीविका कर्मियों के मार्ग दर्शन से वह समूह के अन्य दीदीयों को घर – घर जाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करने लगी। तारा देवी ने महिलाओं पर शराब पीकर पतियों द्वारा पत्नियों व बच्चों पर किए जा रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई और व्यक्तिगत रुप से लोगों को शराब छोड़ने के लिए प्रेरित करने लगी । तारा देवी के अपील का ऐसा असर हुआ कि गाँव के आदिवासी समाज ने शराब को हाथ नहीं लगाने का संकल्प ले लिया । धीरे धीरे गाँव में शराब के खिलाफ माहौल बन गया। जीविका महिलाओं के सतत विरोध के बाद गाँव में शराब की बिक्री और सेवन बंद हो गया है।

नाम : तारा देवी

समूह : जय गुरु जीविका स्वयं सहायता समूह

पता : तेलडीहा, रुपौली, पूर्णिया

- नशे में धुत दो शराबियों ने तारा देवी के पति को धक्का मार दिया।
- गंभीर रूप से घायल पति के इलाज के लिए तारा देवी को कर्ज लेना पड़ा।
- तारा देवी ने प्रण लिया कि वो शराब की बुराई के खिलाफ आवाज उठाएंगी।
- तारा देवी जय गुरु जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयी।
- तारा देवी के अपील का ऐसा असर हुआ कि गाँव के आदिवासी समाज ने शराब को हाथ नहीं लगाने का संकल्प ले लिया ।

94. सालों बाद लौटी मविना के जीवन में खुशहाली

पूर्णियाँ जिले के रुपौली प्रखंड के आझोकोपा गाँव की रहने वाली रहमत जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य मविना खातुन के जीवन को शराब ने तबाह कर रखा था। दरअसल उसका शौहर मोहम्मद हैदर निकाह के पहले से हीं शराब पीता था। निकाह के बाद वह पहले से भी अधिक शराब पीने लगा।

उसका शौहर प्रतिदिन बिरौली बाजार में सडक किनारे दूकान लगाकर अंडे बेचता था । बिरौली बाजार के पास धंगरसी टोला बस्ती में धांगर समुदाय की महिलायें महुआ से शराब बनाकर बेचतीं थीं। इस टोला में शराब की कई दुकानें चलती थी।

उसका शौहर रोजाना अंडे के दुकान की कमाईए शराब में उड़ा देता। जिससे उसके आमदनी में गिरावट आने लगी। मविना के कुछ कहने पर वह उससे गाली–गलौच और मारपीट करता।

मविना खातुन के इस परेशानी पर रहमत जीविका स्वयं सहायता समूह की बैठक में कई बार चर्चा की गयी तथा समूह की दीदीयों ने उसे दूर करने के लिए प्रयास भी किया। इस बीच मुख्यमंत्री द्वारा 1 अप्रैल 2016 से राज्य में शराब बंदी की घोषणा से उनके मुहिम को बल मिला। कस्तुरबा जीविका महिला ग्राम संगठन के दीदीयों ने शराब बंदी के लिए रैली निकाली तथा दुकानदारों से शराब बिक्री बंद करने की अपील की। बातचीत के दौरान सभी दुकानदार शराब बेचना छोड़ देने की बात करते, पर चोरी–छिपे बेचते रहे। मविना के शौहर को कई लोंगो ने शराब छुडाने के लिए ईलाज हेतु पूर्णियाँ सदर अस्पताल में नशा विमुक्ति केन्द्र जाने की सलाह दी । पहले उसने इनकार कर दिया। फिर बाद में वो जाने को तैयार हुआ। नशा विमुक्ति केन्द्र में दिए गए दवाइयों के सेवन से अब उसे शराब पीने की इच्छा नहीं होती है।

1 अप्रैल 2016 से मध निषेध कानून के प्रभावी होने के बाद गाँव में शराब की दुकानें बंद हो गई। शराब की दुकानें बंद होने से मविना खातुन के जीवन में 18 साल से चली आ रही तबाही का अंत हो गया। उसके शौहर को शराब पीने की लत से छुटकारा मिल गया और अब वो एक बेहतर जिन्दगी जी रहे हैं।

नाम : मविना खातुन
रहमत जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : आझोकोपा, रुपौली, पूर्णिया

- मविना खातुन के जीवन को शराब ने तबाह कर रखा था।
- उसका शौहर रोजाना अंडे के दुकान की कमाई शराब में उड़ा देता।
- मविना के कुछ कहने पर वह उससे गाली–गलौच और मारपीट करता।
- उसे शराब की लत लग गयी थी।
- मविना और गाँव के अन्य लोंगे के दबाव में उसका पति सदर अस्पताल में नशा विमुक्ति केन्द्र जाने को तैयार हुआ।
- अब उसे शराब पीने की इच्छा नहीं होती है।

95. शराब का अंत, सुख व शांति का प्रारंभ

नाम : हप्पनमय देवी
समूह : रूपा जीविका स्वयं सहायता समूह
पता : भेलवा, सोनदीप, भवानीपुर, पूर्णिया

- हप्पनमय देवी का पति शुभलाल सोरेन दिन–रात शराब के नशे में धुत रहता था।
- पत्नी द्वारा शराब पीने के लिये मना करने पर झगड़ा व मारपीट पर उतारू जो जाता था।
- हप्पनमय देवी की आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गई।
- समूह से जो वो कर्ज लेती थी उस पैसे को भी उसका पति शराब में खर्च कर देता था।
- 1 अप्रैल 2016 से पूर्ण शराब बंदी लागू होने के कारण उसके पति ने शराब पीना छोड़ दिया।
- अब घर में सुख और शांति का माहौल है।

पूर्णियाँ जिला स्थित भवानीपुर प्रखंड के भेलवा ग्राम निवासी शुभलाल सोरेन तथा उनकी पत्नी हप्पनमय देवी के जीवन में मानों अंधेरा छाया हुआ था। पति के शराबी होने के कारण समस्याएं दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थीं। हप्पनमय का पति शुभलाल सोरेन दिन–रात शराब के नशे में धुत रहता था। घर में अशांति का वातावरण था। बच्चे शिक्षा के अभाव में इधर–उधर भटक रहे थे। शुभलाल सोरेन दैनिक मजदूरी करता था। प्रतिदिन 8 घंटे काम करने पर 200 रूपये की मजदूरी मिलती थी। इस पैसे में से वह एक भी पैसा न तो घर चलाने के लिए देता और न ही बच्चों की शिक्षा पर खर्च करता था। पत्नी द्वारा शराब पीने के लिये मना करने पर झगड़ा व मारपीट पर उतारू जो जाता था। हप्पनमय देवी की आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गई।

इसी दौरान गॉव में जीविका परियोजना द्वारा स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा रहा था । हप्पनमय देवी 15 दिसंबर 2009 को रूपा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बन गई। समूह से जो वो कर्ज लेती थी उस पैसे को भी उसका पति शराब में खर्च कर देता था। दिसंबर 2015 में पटना में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री द्वारा 1 अप्रैल 2016 से बिहार में पूर्ण शराब बंदी लागू किये जाने की घोषणा हुई। हप्पनमय देवी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे ऐसा लगने लगा कि उसके जीवन में एक नया सवेरा होने वाला है। 1 अप्रैल 2016 से पूर्ण शराब बंदी लागू होने के कारण उसके पति ने शराब पीना छोड़ दिया। घर में सुख और शांति का माहौल है। अब उसके पति जो पैसा दैनिक मजदूरी से कमाते है, वो पैसे घर चलाने, बच्चों की पढाई एवं अन्य आवश्यक कार्यों पर खर्च होता है।

96. शराबबंदी के लिए मीना की मुहिम

नाम : मीना देवी

पता : सुग्गी, करमडीह, आमस, गया

मीना देवी गया जिले के सुग्गी गावं में खुशियाली ग्राम संगठन की सदस्य है। मीना देवी के घर में उनके पति और तीन बच्चे हैं। घर में शराब अपनी जड़ जमा चुकी थी। उनके पति पवन यादव खेत में काम करके रोजी रोटी कमाते थे। उनके रोज रोज पीने की आदत की वजह से मीना देवी के घर की आर्थिक स्थिति पूरी तरह चरमरा गई थी। पति की पूरी की पूरी कमाई शराब में जा रही थी। बच्चो का स्कूल जाना भी बंद हो गया था। मीना देवी ने अपनी परेशानी अपने ग्राम संगठन के सदस्यों के साथ साँझा किया। खुशियाली ग्राम संगठन की सदस्यों ने इस मुसीबत को जड़ से समाप्त करने का निर्णय लिया। सदस्यों ने पता लगाया की गाँव के कुछ लोग महुआ शराब के व्यापार में लिप्त हैं। ग्राम संगठन की सभी 112 दीदियों से इस विषय पर चर्चा की गई ।ग्राम संगठन की दीदीयों ने गाँव के शराब दुकानदारों को शराब की बिक्री बंद करने को कहा। लेकिन समझाने के बावजूद शराब दुकानदार नहीं माने। खुशियाली ग्राम संगठन के दीदियो ने एक शराबबंदी कमिटी का गठन किया। इस कमिटी की दीदियो ने गाँव में जगह – जगह नाटक के माध्यम से शराब के के बारे में बताना शुरू किया। दीदियों की एकजुटता को देखकर शराब कारोबारी और गाँव के पुरुषों ने धीरे – धीरे शराब बेचना और पीना छोड़ दिया।

- ✦ मीना देवी के पति की पूरी कमाई शराब में जा रही थी।
- ✦ पति के रोज रोज पीने की आदत की वजह से घर की आर्थिक स्थिति पूरी तरह चरमरा गई थी।
- ✦ मीना देवी ने अपनी परेशानी अपने ग्राम संगठन के सदस्यों के साथ साँझा किया।
- ✦ खुशयाली ग्राम संगठन के दीदियो ने एक शराबबंदी कमिटी का गठन किया।
- ✦ कमिटी ने नाटक के माध्यम से शराब के दुस्प्रभाव के बारे में बताना शुरू किया।
- ✦ दीदियों की एकजुटता देख शराब कारोबारी और लोगों ने शराब बेचना और पीना छोड़ दिया।

97. नई राह

मुन्नी देवी गया जिले के पहाड़पुर गावं में चंदा ग्राम संगठन की सदस्य है। मुन्नी देवी के घर में उनके पति बच्चे और सास – ससुर है। पति अशोक साव राज मिस्त्री का काम करके रोजी रोटी कमाते थे। प्रति दिन के हिसाब से 350 रु– की कमाई थी। परंतु रोज रोज के पीने की आदत की वजह से घर में खाने के लाले पड़ने लगे। बच्चों की पढाई भी बंद हो गयी। एक दिन नशे में धुत अशोक साव घर आने के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गए, जिसमें उनके पैर की हड्डी टूट गयी। अब उनके पास न इलाज के लिए पैसे थे और न हीं खाने के लिए अनाज। मुन्नी देवी ने चंदा ग्राम संगठन से १०००० रूपये स्वास्थ्य सुरक्षा निधि ऋण लेकर पति अशोक साव का इलाज करवाया। खाने के लिया खाद्य सुरक्षा निधि ऋण से ५० किलो ग्राम चावल व 5 किलो दाल लिया। इसी बीच बिहार में शराब बंदी कानून लागू हुआ। तब से गावं में न शराब बनती है और न हीं लोग पीते है। अब मुन्नी देवी के पति ने शराब पीना बंद कर दिया है। अब घर में खुशी का माहौल है और पैसे की बचत हो रही है।

नाम	:	मीना देवी
पता	:	पहाड़पुर, रामपुर, आमस, गया

- ✦ मुन्नी देवी के पति शराब के आदि थे।
- ✦ पति के रोज रोज के पीने की आदत की वजह से घर में खाने के लाले पड़ने लगे।
- ✦ एक दिन नशे में धुत अशोक साव दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गए ।
- ✦ मुन्नी देवी ने ग्राम संगठन से ऋण लेकर पति अशोक साव का इलाज करवाया।
- ✦ इसी बीच बिहार में शराब बंदी कानून लागू हुआ।
- ✦ अब मुन्नी देवी के पति ने शराब पीना बंद कर दिया है।

98. खुशहाल हुआ गांव

झकसी देवी गया जिले के रमुआचक गावं के पवित्रग्राम संगठन की सदस्य हैं। झकसी देवी के घर में उनके पतिए चार बच्चे व सास – ससुर हैं। पति के शराब पीने की वजह से बच्चों और परिवार का भविष्य खराब हो रहा था। पति बुटा भुइंया मजदूरी कर परिवार का भरण – पोषण करते थे। रोज – रोज पीने की आदत से घर में लड़ाई होते रहती थी। गाँव में जहरीली शराब से लोग बीमार पड़ रहे थे। लोगों की कमाई शराब व बीमारी में जा रही थी। गाँव के लोग व ग्राम संगठन के दीदियो ने शराब बेचने व पीने पर पाबंदी लगाने के लिए एक योजना बनाई । गाँव में शराब पीने वाले पर 500रु– का जुर्माना लगाया गया।ग्राम संगठन के दीदियो ने शाम में शराब बिकने वाले अड्डे पर जाकर शराब माफियाओं को चेतावनी दी। पीने वालों का नाम फोटो के साथ सार्वजनिक स्थान पर चिपकाया गया और जुर्माना भी वसूला गया । डर से लोगों ने धीरे धीरे शराब पीना छोड़ दिया। आज रमुआचक गाँव शराब मुक्त और रोग मुक्त है । पहले जो पैसा शराब में खर्च होता था वो पैसा लोग अपने बच्चों के पढाई और घर के विकास में लगा रहे हैं।

नाम	:	झकसी देवी
पता	:	रमुआचक, अकौना, आमस, गया

- ✦ झकसी देवी के पति के शराब पीने की वजह से बच्चों और परिवार का भविष्य खराब हो रहा था।
- ✦ गाँव में जहरीली शराब से लोग बीमार पड़ रहे थे।
- ✦ झकसी देवी ने ग्राम संगठन के दीदियो के साथ शराब पर पाबंदी लगाने के लिए एक योजना बनाई।
- ✦ गाँव में शराब पीने वालों पर जुर्माना लगाया गया।
- ✦ डर से लोगों ने धीरे धीरे शराब पीना छोड़ दिया।

99. उन्नति की राह

नामः रूखमीनी देवी
ग्रामसंगठन अमर महिला ग्रामसंगठन
पताःग्राम झिकटिया, प्रखंड –बोधगया, जिला –गया

मैं रूखमीनी देवी गया के झिकटिया गाँवकी निवासी हूँ। मेरे पति श्री दुलारचंन्द मिस्त्री लकड़ी के कारीगर है। मेरा परिवार भूमिहीन है। मैं मुस्कान जीविका स्वंय सहायता समूह से दिनांक 6–7–2011 से जुड़ी हूँ। समूह में जुड़ने के बाद प्रति सप्ताह समूह की बैठक में जाकर 10 रू0 जमा करना होता है। इसे जमा करने में मैं अपने आप को असमर्थ पा रही थी। जबकी मेरे पति प्रतिदिन 300 रू0 कमाते थे। इसका कारण यह था कि मेरे पति श्री दुलारचंद मिस्त्री को शराब पीने की आदत थी। स्वंय तो पीते ही थे, साथीयों को भी पिलाया करते थे। प्रतिदिन शराब के नशे में धुत होकर रात को घर आते थे। समझाने बुझाने पर लड़ाई झगड़ा करते थें। पड़ोसियों तथा गॉव वालो ने भी बहुत समझाया लेकिन कोई प्रभाव नही पड़ा। मैं बहुत दुखी रहती थी। अपने घर कि स्थिती को देखकर मैंने अपने समूह की सभी दीदियों से इस बात पर चर्चा किया। इसके बाद समूह की दीदियों ने ग्राम संगठन के बैठक में इस ऐजेंडा को उठाया। कुछ दीदियों ने हमारे घर पर आकर मेरे पति को बहुत समझाया। पति ने उनके सामने वादा किया कि अब शराब नही पियेंगे। लेकिन फिर भी पीना जारी रखा। पति की आदत से तंग आकर यहा तक कि खुदकुशी करने की बात दिल में उत्पन होने लगी। लेकिन अपने छोटे–छोटे बच्चों के भविष्य के बारे में सोंच कर अपने आप को रोक लिया।

- ✦ रूखमीनी देवी के पति श्री दुलारचंद मिस्त्री को शराब पीने की आदत थी।
- ✦ प्रतिदिन शराब के नशे में धुत होकर रात को घर आते थे।
- ✦ रूखमीनी देवी ने समूह की दीदियों से इस बात पर चर्चा किया।
- ✦ दीदियों ने घर पर आकर पति को बहुत समझाया।
- ✦ अब उनके पति पैसे घर में देने लगे हैं, जिससे मूलभूत जरूरतें पूरी होने लगी हैं।

एक दिन समूह की बैठक में पता चला कि बिहार सरकार ने 1 अप्रैल 2016 से शराब बेचने और पीने पर पाबंदी लगा दी है। शराब बेचने एवं पीने वाले दोनों को कड़ी से कड़ी सजा दी जायेगी। यह सुनकर मैं बहुत खुश हुई। मन में एक आस जगी कि अब मेरा परिवार अंधकार की ओर नही जायेगा। कुछ ही दिनों में मेरे पति पर बहुत प्रभाव पड़ा है। अब वो पैसे घर में देने लगे हैं, जिससे मेरे घर की मूलभूत जरूरतें पूरी होने लगी हैं। घर की स्थिति धीरें–धीरें सुधरने लगी है। अब मैं अपने समूह की बैठक में प्रति सप्ताह अपना बचत जमा करती हूँ।

100. बदलाव की आंधी

नाम : यसमीन खातुन
समूह : गंगा जीविका स्वंय सहायता समुह
पता : अगनी, बोधगया, गया

यसमीन खातुन अगनी गॉव की रहने वाली है और उनके पति रिक्शा चलाते हैं। उनके पति को शराब पीने की बुरी लत थी, जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति काफी खराब थी। आर्थिक विसंगतियो के कारण उनके बच्चे स्कूल नही जा पाते थे। शराब के नशे में वो अपनी पत्नी और बच्चों को बहुत मारते पीटते थे। यहाँ तक कि घर का सामान भी तोड़ फोड देते थे। यसमीन पति के शराब पीने की आदत से बहुत परेशान थी। कभी खाना खाने को मिलता तो कभी नही। उनका जीवन अत्यंत कठिनाइयों से गुजर रहा था। शराबबंदी से उनके जीवन में काफी सकारात्मक बदलाव आया है। उनके पति अब नियमित रुप से रिक्शा चलाते है, जिसके कारण परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर हुई है। परिवार में अब मार पीट और गाली गलौज बंद हो गया है।

- ✦ यसमीन के पति को शराब पीने की बुरी लत थी।
- ✦ शराब के नशे में वो अपने पत्नी और बच्चों को बहुत मारते पीटते थे।
- ✦ शराबबंदी से उनके जीवन में काफी सकारात्मक बदलाव आया है।

101. शराब का दमन

नामः रौशनी जीविका महिला ग्रामसंगठन
पताः पडरी, डोभी,गया

पडरी गाँवडोभी के वारी पंचायत मे स्थित है। यहाँ 70 घर हैं जिसमे 50 घर महादलित समुदाय के हैं। कुछ महिने पहले तक यहाँ तकरिबन 20 घरों में शराब का निर्माण किया जाता था। पुरुष तथा कुछ महिलायें भी शराब का सेवन करतीं थीं।गॉव मे जीविका द्वारा संचालित रौशनी जीविका महिला ग्रामसंगठन के बैठक में कई बार शराबबंदी पर चर्चा हुई। 8 मार्च 2016 को मगध विश्व विधालय के प्रांगण में गया के जिलाधिकारी की उपस्थिति में पडरी गाँव की महिलाओं ने गाँव में शराब का निर्माण बंद करने और शराब मुक्त बनाने का संकल्प लिया। अगले दिन ग्रामसंगठन की बैठक की गई, जिसमें निर्णय लिया गया की सभी दीदी टोला में जाकर शराब बंदी के बारे में लोगों को समझाएंगी। सभी दीदियों ने जिन घरो में शराब बनता था वहॉ की महिलाओ को समझाया कि शराब बनाना बंद कर दिजिये। उन्हें ये भी बताया गया कि धन और स्वास्थ्य पर इसका अनुचित प्रभाव पडता है।

- ✦ पडरी गाँव में कुछ महिने पहले तक तकरिबन 20 घरों में शराब का निर्माण किया जाता था।
- ✦ सभी दीदियों ने जिन घरो में शराब बनता था वहॉ की महिलाओ को समझाया कि शराब बनाना बंद कर दिजिये।
- ✦ शराब बनाने वालों पर कोई असर नही हुआ।

अगले दिन पुनः सभी दीदी इकठ्ठा हुई। चर्चा हुई कि अभी भी शराब बनाने वालों पर कोई असर नही हुआ है। करीब 60 की संख्या में समूह की महिलाएँ शराब दुकान पर पहुँची । समझाने का प्रयत्न किया। पर लोग किसी तरह से भी शराब बंद करने को राजी नहीं हुए। जिससे दोनो पक्षों के बीच तनाव हो गया।ग्रामसंगठन की दीदियों ने शराब बनाने वाले बर्तनों को तोड़ दिया। अगली सुबह शराब बनाने वालों ने ग्रामसंगठन की दीदियों के घर जाकर मारने की धमकी दी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए तुरंत स्थानिय थाना डोभी को सुचना दी गई । 15 मिनट के अन्दर मौके पर पुलिस पहुची। पुलिस के आते ही शराब बनाने वाले भाग खड़े हुए। उस दिन से गाँव में शराब की बिक्री एवं सेवन बंद हो गया।

निष्कर्ष

महिलाओं के दर्द को समझकर जब बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने राज्य में शराबबंदी की घोषणा की तो महिलाएं इससे बेहद खुश हुईं और इसे अपना पूरा समर्थन देने का वादा किया। आज बिहार में शराबबंदी को महिलाओं का पूरा समर्थन मिल रहा है। यही कारण है कि ''बिहार में पूर्ण शराबबंदी'' महज सरकार का फैसला नहीं रह गया है बल्कि यह जनआंदोलन का रुख अख्तियार कर चुका है।

जीविका दीदियाँ शराबबंदी के लिए जमीनी स्तर पर प्रहरी की भूमिका निभा रही हैं। वे गांवों या छोटे शहरों में उन ठिकानों की लगातार निगरानी कर रही हैं, जहां पूर्व में देसी शराब बनाई या बेची जाती थी। महिलाएं शराब पीने वालों पर भी कड़ी नजर रख रही हैं ताकि वे चोरी–छूपे दोबारा शराब का सेवन न कर सके। शराब से जुड़ी किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधियों की भनक लगते ही महिलाएं स्वयं आगे बढ़कर तत्काल इसकी सूचना पुलिस प्रशासन को देती हैं। इतना ही नहीं वे गांव–समाज में लगातार जागरूकता अभियान चला कर शराब पीने वालों को नशा न करने के लिए भी प्रेरित कर रही हैं। जीविका दीदियों के इस सक्रिय भागीदारी और प्रतिबद्धता की वजह से ही आज राज्य में मद्य निषेध को प्रभावी तरीके से लागू किया जाना संभव हो सका है। जीविका दीदियों ने अपने प्रयासों से यह साबित किया है कि बिहार में शराब पर पूर्णतः रोक लगाने के लिए वह एक मजबूत स्तंभ हैं। राज्य के अलग–अलग हिस्सों में जीविका की महिलाएं और सामुदायिक संगठन इसके लिए सतत प्रयास कर रही हैं।

जीविका दीदियों द्वारा मद्य निषेध अभियान में विभिन्न विभागों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। संबंधित विभागों के समन्वयन एवं जीविका दीदियों के प्रयास का नतीजा है कि बिहार के गांवों का माहौल बदल गया है।

संकलित कहानियां शराब के खिलाफ जीविका दीदियों के संघर्ष की एक झांकी मात्र है। जीविका से जुड़ी ऐसी हजारों महिलाएं शराब के खिलाफ संघर्ष में विजयी हुई हैं। प्रस्तुत कहानियां सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जंग लड़ने वाली ऐसी हजारों–लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा का काम करेंगी।